"व्यापि-वैकुंठ"-वासी अपने इष्ट के प्रेम-मय स्वरूप को उन्होंने जनता के सामने रखा और हठात लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लिया। कैसा स्वाभाविक रूप था! बालक का बाल-चापल्य, उसका हँसना, रूठना, जिद करना, मचल जाना, ठुमक ठुमक कर चलना आदि बातें किस को प्रिय नहीं होतीं ? यदि देखा जाय तो परमात्मा का विशुद्ध रूप निश्छल सरल बालक ही में पूर्ण रूप से प्रस्फुटित होकर विद्यमान रहता है। उनके शिष्यों पर भी इन सब बातों का प्रभाव पड़ा। साधारण लोग उस रूप पर लट्टू हो गए। कवि-शिष्यों को नई भावना की प्राप्ति हुई। वे आनन्द से नाच उठे और अपने प्रभु के रूप का, उनके प्रत्येक कृत्य का उन्होंने ऐसा सुन्दर और मनमोहक दृश्य उपस्थित किया कि दिल बाग़ बाग़ हो गया। उनकी आत्मा और हृदय आनन्द में डूब गए। तल्लीनता की उस अवस्था के हर्षाश्रु हमारे साहित्य की अनुपमेय सम्पत्ति हैं। बड़े मज़े की बात तो यह है कि भाव, भाषा और शैली (गीति-काव्य) बहुत कुछ एक होने पर भी उनके पढ़ने में हर बार नूतनता दिखाई देती है। ठीक महाभारत और रामायण के जैसे पढ़ने की दशा है।

प्रसिद्ध है कि आचार्य्य महाप्रभु के पुत्र गोसाईं विट्ठलनाथ जी ने अपने पिता के सर्वोत्कृष्ट चार कवि-शिष्यों को लेकर और उनमें अपने चार सर्वोत्तम कवि-शिष्यों को मिला कर एक 'अष्ट-छाप' स्थापित की। "आचार्यों की छाप लगी हुई आठ वीणायें कृष्ण का कीर्त्तन करने के लिए उठीं।" इन सब में किस की आवाज़ सबसे सुरीली है, सब से ऊँची है ?—यह बात इनके काव्य से निर्धारित की जा सकती है! परन्तु सब से, बड़ी कठिनता अष्ट-छाप के कवियों की कृतियों के उपलब्ध न होने के कारण होती

है। अभी तक तो सेहरा सूर के सर है । संभव है परमानन्द जी का काव्य-संग्रह प्राप्त हो जाने पर विद्वानों को निर्णय करने में कुछ कठिनता हो । पर एक बात तो अवश्य है—गीति-काव्य के इन आचार्यों के पदों में संगीत और माधुर्य की जो गंगा-जमुनी लहरा रही है, वह संतप्त हृदयों को चिर शान्ति प्रदान करती है। धर्म की प्रगति के साथ साथ काव्य का यह अपूर्व सम्मिलन, नीरसता और कोमलता का यह साहचर्य, सिंह और गाय के एक ही घाट पानी पीने के समान है और वैष्णव कवियों की अपूर्व प्रतिभा का द्योतक है । उनका दिव्य सन्देश प्रेम और श्रेय का भरत-मिलाप है। उसमें क्या नहीं है ? उपास्य का कीर्त्तन है, उनके चरणों की उपासना का महत्त्व है, जमुना की भक्ति है, गुरु और गोविन्द का एकत्त्व है और है काव्य की अन्तरतम आत्मा की अपूर्व व्यंजना। अनुराग, आसक्ति और व्यसन (Haunting passion) प्रेम की तीनों अवस्थायें मानों भाव और विभाव पक्षों को दास बना कर मूर्त्तिमान खड़ी हैं । "गोपाल-उपासी" के इष्ट की लीला-भूमि में ही सब की अवतारणा होती है। जिस भाषा मे उन्होंने माखन-रोटी माँगी थी, उसी में उसका गुणगान किया जाता है। कहीं कहीं तो सूर जैसे कवियों ने "अद्भुत एक अनुपम बाग" लगा कर शब्दों से खिलवाड़ भी खूब ही की है । लीला-प्रिय उपास्य के वर्णन में सूरदास की क्रीड़ा-शील प्रकृति कुछ अनुचित भी प्रतीत नहीं होती।

कृष्ण-मंदिर के इन पुजारियों के काव्य में एक बड़ी भारी विशेषता है—इनका काव्य विश्व-काव्य है । इन का प्रत्येक शब्द उठ उठकर ताल देकर कृष्ण का चारित्र गा रहा है परन्तु उस गान में एक अनोखापन है । बाल-कृष्ण के शैशव में, श्रीकृष्ण के मच-

लने में; यशोदा मैया के दुलार में हम विश्व-व्यापी माता पुत्र का प्रेम देखते हैं। राधा और कृष्ण के मिलन में, ईश्वरोन्मुख प्रेम की कल्पना है। गोपियों के विलाप और क्रन्दन में मनुष्य जाति के अन्तरस्थ करुणाभाव के रहस्य की व्यंजना है। उन्होंने बाल-कृष्ण के चरित्र में आदर्श हिन्दू गृहस्थ की भावना ही प्रकट की है। समाज से संबन्ध रखने वाली बड़ी समस्याओं—वर्ण-विभाग आदि की ओर ये नहीं जाते। जा भी नहीं सकते—'हरि को भजे सो हरि का होई—' ये सब होते हुए भी ये कवि अपने क्षेत्र के सम्राट हैं, सर्वोत्कृष्ट महारथी हैं—विश्व कवि हैं!

इस स्थान पर हम एक बात और कह देना उचित समझते हैं! अष्ट-छाप के कवि पुष्टि-मार्गीय हैं जिस में बाल-कृष्ण की उपासना ही का निर्देश है। समझ में नहीं आता फिर राधा की भावना इन कृतियों में कैसे आई? उन का स्थान इतना प्रधान कैसे बन गया? इस प्रश्न पर विद्वानों को विचार करना चाहिए। वैसे तो साधारणतया कवि-आत्मा प्रेम के रूप में अपनी अन्तरतम भावना का रूप स्थापित करती है और इस हिसाब से यदि स्त्री-जन्य कोमलता और नारी-सुलभ सौन्दर्य भी कविता में आ गया तो आश्चर्य नहीं परन्तु 'अष्ट-छाप' के कवियों को केवल धर्म की एक-मात्र विभूति मानने वालों के मन में जब यह बात खटकेगी तो उस समय उस को किस प्रकार दूर किया जा सकेगा?

अन्त में मुझे केवल इतना ही और कहना है कि प्रस्तुत संग्रह विशेष रूप से 'राग-कल्पद्रुम' नामक विस्तृत ग्रन्थ के आधार पर किया गया है। अन्य प्रकाशित पुस्तकों में अष्ट-छाप के कवियों के फुटकर पद मिलते हैं—वे गिनती में नहीं के बराबर हैं। अतएव अपनी ओर से पाठ शुद्ध करने की अनधिकार चेष्टा मैं नहीं कर सका हूँ।

मैं जानता हूँ अनेक स्थानों पर भाषा की अशुद्धियाँ एकदम पढते ही स्पष्ट हो जाती हैं परन्तु उन्हें भी दूर करने का प्रयास मैंने नहीं किया क्योंकि मेरी समझ में पढने वालों को इससे विशेष सुविधा न होती और भक्ति-काल-साहित्य-संबन्धी पंडितों का भी इस से कोई उपकार न होता।

प्रस्तुत पुस्तक के निकालने में कई वर्ष लग गए और यदि हिन्दी-भवन, लाहौर का सहयोग न होता तो कदाचित अभी तक भी यह ऐसी ही पडी रहती । एतदर्थ प्रकाशक और मुद्रक दोनों मेरी ओर से धन्यवाद के पात्र हैं। 'अष्टछाप-पदावली' कहाँ तक उपयोगी सिद्ध होगी अथवा है ? इसका उत्तर मैं क्रमशः आलोचकों और विज्ञ पाठकों पर छोडता हूँ । हाँ, सबसे अधिक कृतज्ञ हूँ धीरेन्द्र वर्मा एम. ए., डी. लिट., अध्यक्ष हिन्दी-विभाग, प्रयाग विश्व-विद्यालय का, जिनकी शरण में रहकर मुझे सूर-साहित्य के साथ साथ अन्य ब्रज-भाषा के कवियों की कविता का रसास्वादन मिला और जिनके प्रोत्साहन से इस ओर मेरी प्रवृत्ति हुई।

जसवन्त कालेज
जोधपुर
१. १. ४०

सोमनाथ गुप्त

सूची

अष्टछाप-पदावली

सूरदास

समुदाय पद

१

रैन जागी पिय संग रंगभीनी।
प्रफुलित मुखकंज नयन खंजरीट मीन मन,
बिथुरि रहे चूरण कच बदन ओप कीनी॥
आतुर आलस जँभात पुलकित अति पान खात,
मदमाते तन सुधि न रही शिथिल भई बेनी।
माँग तें टरि मुक्ताहल अलक संग अरुझि रही,
उरगण फणीश मानो कंचुकी तजि दीनी॥
विकसित ज्यों चंपकली भोर भए भवन चली,
लटपटात प्रेम घटा गजगति गति लीनी।
आरति को करत नाश गिरिधर सुठि सुख की राशि,
सूरदास स्वामिनी गुणगण न जात चीनी॥

२

नयन मेरे घूँघट में न समात ।
सुन्दर बदन नँद-नंदन को निरखि निरखि न अघात ॥
अति रस लुब्ध महामधु लंपट जानत न एको बात ।
कहा कहौं दर्शन सुख माते ओट भये अकुलात ॥
बार बार बरजत हौं हारी तऊ टेव नहिं जात ।
सूर रसिक गिरिधर बिनु देखे अल्प कल्प शत जात ॥

३

अँखियन वाही टेव परी ।
कहा करौ वारिज मुख ऊपर लागत ज्यों भ्रमरी ॥
चितवत रहत चकोर चन्द्र लौं नहीं बिसरत एक घरी ।
यद्यपि हटकि हटकि हौं राखति त्यों त्यों होति खरी ॥
गुभि जु रहीं वा रूप जलद में प्रेम पियूष भरी ।
सूरदास गिरिधर तन परसत लूटत निशि सगरी ॥

४

राधे तू अति रंग भरी ।
मेरे जान मिली मोहन सों अंचल पीक परी ॥
छूटी लट टूटी नक बेसरि मोतिन की दुलरी ।
मैं जानो तू फौज मदन की लूटि लई सगरी ॥

अरुण नयन मुख शरत् निशा का सत कुसुम गलित कवरी।
सूरदास प्रभु नगधर के सँग सुरति समुद्र तरी ॥

५

लाले नाहि न जगाय सकति सुनि सुबात सजनी।
अपने जान अजहुँ किन मानत सुख रजनी ॥
जब जब हौं निकट जाऊँ रहत लागि लोभा।
तन की सुधि बिसरि गई देखत मुख शोभा ॥
बचनन को बहुत करत सोचत जिय ठाढ़ी।
नयन नयन बिचार परो निरखत रुचि बाढ़ी ॥
इहि विधि बदनारबिंद जसुमति जिय भावे।
सूरदास सुख की रासि कहत न बनि आवे ॥

६

भोर भए निरखत हरि को मुख, प्रमुदित जसुमति हर्षित नन्द।
दिनकर किरण कमल जनु बिकसित, उर प्रति अति उपजत आनंद ॥
बदन उघारि जगावति जननी, जागहु मेरे आनँद कंद।
मानहु मथि सुर सिन्धु फेन फटि, दई दिखाई पूरण चंद ॥
जा को ईश शेष ब्रह्मादिक, गावत नेति नेति श्रुति छंद।
सोइ गोपाल सुगोकुल भीतर, सूर सुप्रकटे परमानंद ॥

७

नयन श्याम सुख लूटत है ।
ईहै बात मोको नहिं भावे हमते काहू छूटत है ॥
महा अचय निधि पाइ अचानक आपुहि सबै चुरावत है ।
अपने हैं ताते वह कहियत श्याम इनहिं भरुहावत है ॥
चण क्षण प्रति सुखसागर लूटत बरजे भौहें तानत है ।
सूरदास जो देत कछु एक कहो कहा अनुमानत है ॥

८

श्री कृष्ण नाम रसना रट सोई धन्य कलि में ।
जाके पद पंकज की रेणु की बलि में ॥
सोइ सुकृत सोइ पुनीत सोई कुलवन्ता ।
जाको निशि दिन रहे कृष्ण नाम चिन्ता ॥
योग यज्ञ तीर्थ व्रत कृष्ण नाम पाहीं ।
बिना कृष्ण नाम कलि उद्धार और नाहीं ॥
सब सुखन को सार कृष्ण कबहुँ न बिसरैये ।
कृष्ण नाम लै लै भवसागर को तरिये ॥
श्री गोवर्धन धारण प्रभु परम मंगलकारी ।
उधरे जन सूरदास ताकी बलिहारी ॥

९

नन्द द्वारे एक योगी आया शृंगानाद बजाया।
सीस जटा शशी बदन सोहायो अरुण नयन छबि छाया॥
रोवत खीजत कृष्ण साँवरे रहत नहीं लराया।
लियो उठाय गोद नँदरानी द्वारे जाय देखाया॥
अलख अलख कर लियो गोद में चरण चूम उर लाया।
श्रवण लाग कछु मन्त्र सुनायो हँसि बालक किलकाया॥
चिरजीवे सुत महर तिहारो हों योगी सुख पाया।
सूरदास रम चल्यो रावलो शंकर नाम बताया॥

१०

मोहन जागि हौं बलि गई।
ग्वाल बाल सब द्वार ठाढ़े बेर बन की भई॥
पीत पट करि दूर मुख तें छाँड़ि दे अरसई।
अति आनन्दित होत जसुमति देखि द्युति नित नई॥
जागे जंगम जीव पशु खग और ब्रज सब सबई।
सूर को प्रभु दर्श दीजे अरुण की किरण छई॥

११

सखी हरि दर्श को मोहि चाव।
साँवरे सों प्रीति बाढ़ी लाख लोग रिसाव॥
श्याम सुन्दर कमल लोचन अंग अगणित भाव।
सूर हरि के रूप राची लाज रहो के जाव॥

१२

केहि मिस जसुमति के जाउँ।
सकल सुखनिधि मुख निरखि के नयन तृषा बुझाउँ॥
द्वारे आरज सभा जुरि रही निकसिबे नहिं पाउँ।
चितु गए पतिव्रत छूटे हँसे गोकुल गाउँ॥
श्याम गात सरोज आनन ललित ले ले नाउँ।
सूर है लगन कठिन मन की कहौं काहि सुनाउँ॥

१३

देखो मेरे भाग्य की शुभ घरी।
नवल रूप किशोर मूरति कंठ ले भुज धरी॥
जाके चरण सरोज गंगा शंभु ले शिर धरी।
जाके चरण सरोज परसत शिला सुनियत तरी॥
जाके बदन सरोज निरखत आशा सगरी परी।
सूर प्रभु के संग बिलसत सकल कारज सरी॥

१४

आज हरि पकर न पाए चोरी।
ले गये चोर चोरि मन माखन जो मेरे धन होरी॥
बाँधी कंचन खंभ कलेवर उभय भुजा दृग डोरी।
राखो कठिन कठोर कुचन बिच सके न कोऊ छोरी॥

अधर दसन खंडो रस गोरस छुवे न काहू कोरी।
काम दंड दंडो पर घर को नाम न लेई बहोरी॥
तब कुलकानि आनि तिरछी भई क्षमा अपराध किशोरी।
शिर पर हाथ धराइ सूर प्रभु सोच मोच शिर ढोरी॥

१५

निरखि हर्षि ब्रज युवती घोष मुरारि।
थकित जित तित अमर मुनिगण नंदलाल निहारि॥
बिनु बेन शिर केश लट चहुँ दिसा छटकी झारि।
शीश पर जानो जटा धरि शिशुरूप कियो त्रिपुरारि॥
रुचिर रचित ललाट केसर बिंदु शोभाकारि।
गेप मनहु तृतीय लोचन रहे रिपुजन जारि॥
कुटिल हरिनख हृदय हरि के सुभग इहि अनुहारि।
ईश जनु रजनीश राख्यो भाल तेज उतारि॥
कंठ सीपज नीलमणिमय माल रची सँवारि।
नील गिरिवर गरल मानो लाय लइ मदनारि॥
बदन रज तन श्याम मंडित शोभा इहि अनुहारि।
मनहु अंग विभूति राजत शंभु सोइ मधुहारि॥
त्रिदशपति उसुमति के आगे असन को करे ग्वारि।
सूरदास बिरंचि जाको जपत यश मुख चारि॥

१६

नँदनंदन एक बुद्धि उपाई ।
जे जे सखा प्रकृत के जाने ते सब लये बुलाई ॥
सुबल सुदामा श्रीदामा मिलि और महर सुत आये ।
जो कछु मन्त्र हृदय में हरि कीन्हों ग्वालनि प्रकट सुनाये ॥
व्रज युवती नित प्रति दधि बेचन बन बन मथुरा जाती ।
राधा चन्द्रावलि ललितादिक बहु तरुणी एक भाँती ॥
कालिन्दी तट कालि प्रात ही द्रुम चढ़ि रहो लुकाई ।
गोरस ले जब ही सब आवें मारग रोकहु जाई ॥
भली बुद्धि यह रची कन्हाई सखनि कह्यो सुख पाई ।
सूरदास प्रभु प्रीति हृदय की सब मन गये जनाई ॥

१७

भलि करी उठि प्रातहिं आये ।
मैं जानत सब ग्वारि उठी जब तब तुम मोहि बोलाये ॥
अब आवति ह्वैहैं दधि लीन्हे घर घर तें व्रजनारी ।
हँसे सब कर तारी दै दै आनँद कौतुक भारी ॥
प्रकृति प्रकृति के जे सब राखे संगी पाँच हजार ।
और पठाए दिये सूरज प्रभु जे जे अतिहि कुमार ॥

१८

कहा हमहिं रिस करत कन्हाई ।
यह रिस जाय करो मथुरा पर जहाँ है कंस कसाई ॥
हम अब कहा जाइ गोहरावें बसति तुम्हारे गाऊँ ।
ऐसे हाल करत लोगन के कौन रहे येहि ठाऊँ ॥
अपने ही घर के तुम राजा सब को राजा कंस ।
सूर श्याम हम देखत बाढ़े अब सीखे ए गंस ॥

१९

राधा सों माखन माँगत ।
औरनि के मट्ठुकिन को खायो तुम्हरो कैसो लागत ॥
लै आई वृषभानुसुता हँसि सद्य लवनी है मेरी ।
लै दीन्हो अपने कर हरि मुख खात अल्प हँसि हेरी ॥
सबहिन सों मीठो दधि है यह मधुरे कह्यो सुनाई ।
सूरदास प्रभु सुख उपजायो व्रज ललना मन भाई ॥

२०

धन्य बड़भागिनी व्रजनारि ।
खात ले दधि दूध माखन प्रकट जहाँ मुरारि ॥
नहीं जानत भेद जाको ब्रह्म अरु त्रिपुरारि ।
शुक सनक मुनि येउ न जानत निगम गावत चारि ॥

देखि सुख ब्रजनारि हरि सँग अमर रहे भुलाई ।
सूर प्रभु के चरित अगणित वरणि का पै जाई ॥

२१

श्यामा श्याम सुभग यमुना जलनि भ्रमि करत विहार ।
पीत कमल इन्दीवर मान्यो भौरहि भये निहार ॥
श्रीराधा अंबुज कर भरि भरि छिरकति बारंबार ।
कनकलता मकरन्द झरत मानो हालत पौन संचार ॥
अतसी कुसुम कलेवर बुंदे प्रतिबिंबित मनोहार ।
ज्योति प्रकाश सुघन में खेलत स्वाति सुमन आकार ॥
धाइ धरे वृषभानु सुता हरि मोहे सकल शृंगार ।
विद्युत् जलद सूर मानो बिधु मिलि श्रवत सुधा की धार ॥

२२

आजु बनो प्रिय रूप अगाध ।
पर उपकार श्याम तन धारो पुरवत सब मन साध ॥
धर्मनीति यह कहाँ पढ़ी जू हमहूँ बात सुनावहु ।
कहो कहाँ काको सुख दीन्हों काहे न प्रकट बतावहु ॥
धनि उपकार करत डोलत हो आजु बात यह जानी ।
सूर श्याम गिरिधर गुण नागर अंग निरखि पहिचानी ॥

२३

जापर दीनानाथ ढरे ।
सोइ कुलीन बड़ो सुन्दर सोई जिन पर कृपा करे ॥
राजा कौन बड़ो रावण ते गर्वहि गर्व गरे ।
रंकव कौन सुदामा हू ते आपु समान करे ॥
रूपव कौन अधिक सीता ते जन्म वियोग भरे ।
अधिक कुरूप कौन कुबजा ते हरिपति पाइ बरे ॥
योगी कौन बड़ो शंकर ते ताको काम छरे ।
कौन विरक्त अधिक नारद सों निशि दिन भ्रमत फिरे ॥
अधम सु कौन अजामिलहू ते यम तहँ जात डरे ।
सूरदास भगवंत भजन बिन फिर फिर जठर जरे ॥

२४

काया हरि के काम न आई ।
भाव भक्ति जहँ हरि यश सुनियत तहाँ जात अलसाई ॥
लोभातुर ह्वै काम मनोरथ तहाँ सुनत उठि धाई ।
चरण कमल सुन्दर जहँ हरि को क्योंहू न जात नवाई ॥
जब लगि श्याम अंग नहिं परसत अंधहि ज्यों भरमाई ।
सूरदास भगवंत भजन तजि विषय परम विष खाई

२५

अब के राखि लेहु भगवान ।
हम अनाथ बैठे द्रुम डरिया पारधि साधे बान ॥
जाके डर भाग्यो चाहत है ऊपर ढुक्यो सचान ।
दुवौ भाँति दुख भयो आनि यह कौन उबारै प्रान ॥
सुमिरत हीं अहि डस्यो पारधी कर छूटे सन्धान ।
सूरदास सर लग्यो सचानहिं जय जय कृपानिधान ॥

खंडिता पद

१

नाहि दुरत नयना रतनारे ।
जनु बन्धूक सुमन विशाल पर सुन्दर श्याम शिलीमुख तारे ॥
रही जो अलक कुटिल कुंडल पर मोतन चितवत चितै विसारे ।
शिथिल भौंह धनु गहे मदनगुण रहे कोकनद बाण बिपारे ॥
मंदे ही आवत हैं ए लोचन पलक आतुर उघरत न उघारे ।
सूरदास प्रभु सोई धौं कहो ऐसी को वनिता जासों रति रण हारे॥

२

अरुण नयन राजत प्रभु भोरे ।
अति सुख सुरति किये ललना सँग जात समय मन्मथ सर जोरे ॥
राति उनींदे अलसात मराल गति गोलक चपल रहत कछु थोरे
मनहुँ कमल के कोप ते प्रियतम ढूँढत रहत छपि रिपुदल दोरे
सजल कोप प्रति में जु शोभियत संगम छवि तारे पर ढोरे
मनु भारत के भ्रमर मीन शिशु जात तरल चितवत चित चोरे
वरणि न जाय कहाँ लौं बरणों प्रेम जलद बेला वलओरे
सूरदास सो कौन त्रिया जिनि हरि के सकल अंग बल तोरे

३

तहीं जाहु जहाँ रैन हुते ।
काहे को दुराव करत नँदनंदन मिटे न अंग उर चिह्न युते ॥
विन गुण हार मनोहर उर पर परम चतुर हिय लाइ सुते ।
बिथुरी अलक अटपटे भूषण छुटे काम कुच बीच उते ॥
दसन दाग नख रेख छबीली भामिनि भवन भाव सुगुते ।
सूर श्याम देखियत मम शोभा लोचन ललित उनींद हुते ॥

४

तहीं जाहु जहाँ निशा बसे ।
जानति हौं पिय चतुर शिरोमणि नागर जागर राग रसे ॥
घूमत हो मानो पिया उरगण तव विलास श्रम सेज डसे ।
श्याम उरस्थल पर नख शोभित गगन दुइज जनु इंदु लसे ॥
कारज अधर प्रकट देखिअत हैं नागवेलि रँग निपट खसे ।
लटपटि पाग महावर के रँग माननि पग पर शीस घसे ॥
विगलित बरस परगजी माला पीठि वलय के चिह्न बसे ।
सूरदास प्रभु प्रिया वचन सुनि नागर नगधर नेकु हँसे ॥

५

क्यों अब दुरत हो प्रगट भये ।
कहत हैं नैन निशा के जागे मानो सरसिज अरुण नये ॥

जावक भाल नाग रस लोचन मसि रेखा अधरनि जो ठये ।
मलया पीठि नितंब चरण मणि बिनु गुण कंठहार बनये ॥
भुज टंकता ग्रीव सोइ चन्दन चिह्न कपोल दसन ग्रसये ।
आलिंगन चन्दन कुच चर्चित मानो द्वै शशि उर उदये ॥
चरण शिथिल अरु चाल डगमगी घूमत घायल समर सये ।
सूर सखी कैसे मन माने सुन्दर श्याम कुटिल भये ॥

६

लालन आये री रैन गँवाई ।
निशि भइ क्षीण बोले तमचर खग ग्वालिन तबहिं हँसी मुसकाई ॥
अरुण किरण मुख पंकज बिकसित मधुप लियो सुंदर रस जाई ।
चन्द्र मलीन भयो दिनमणि ते कुमुद गये सब ही कुँभिलाई ॥
चारि याम जागत बीते मोहि तुम्ह बिनु मोकों कछु न सुहाई ।
सूरश्याम या दर्श पर्श बिनु सब निश गई मेरी नींद हेराई ॥

७

रति संग्राम वीर रस माते ।
हो हरि शूर शिरोमणि अजहूँ नहिं न सँभारे सकल अँगना ते ॥
औटे बरण भये यह लोचन अपने अपने सहज बिना ते ।
मानहु भीर परी औधन की तात भये क्रोध अति राते ॥

परिमल लुब्ध जहाँ अलि बैठत उड़ि उड़ि उड़ि नहिं सकत तहाँ ते।
जनु मनमथ सर लागे फाग्यो फाँक होत सब बाहरि पाते॥
बैठि जात अलसात उनींदे क्रम क्रम क्रम करि उठत तहाँ ते।
मन बरछा कटाक्ष नाटसल कढ़ता नाहि चुभ्यो हियरा ते॥
डगमगात घूमत ज्यों घायल शोभा अति भइ सुभट कला ते।
सूरदास स्वामी रण जीते अब सकुचत धों हो तुम काते॥

८

जानति हों जैसे गुणनि भरे हो।
काहे को दुराव करत मनमोहन सोइ पै कहो तुम जहाँ ढरे हो॥
निशि जागत निज भवन न भावत आलसवन्त सब अंग धरे हो।
चन्दन तिलक मिल्यो कहाँ बन्दन काम कुटिल कुच उर उघरे हो॥
तुम अति कुशल किशोर नन्द-सुत कहो कौन के चित्त हरे हो।
औचक ही जिय जानि सूर प्रभु सौंह करन को होत खरे हो॥

९

जाहु तहाँ कहा सोचत हो।
जा सँग रैन बिहात न जानी भोर भये तेहि मोचत हो॥
औरनि को क्षण युग बीतति है तुम निहचीते नागर हो।
घूमत नयन जँभात बार ही रति संग्राम उजागर हो॥

मैं अब कहति तुम्हारे हित की ताही के गृह जाइ रहो ।
सूर श्याम वैसी तिय को है वह रस वाही बिनु न लहो ॥

१०

नीके आए गिरवरधारी नागर ।
जिय की कृपा हम तब हीं जानी भोर खोलाई आगर ॥
तुम्हरे चितवत नयन अरुण भए सकल निशा के जागर ।
जिन तुम पै यह खेल रच्यो है ऐसी कौन उजागर ॥
तुम अपने रंग ही रीझे चतुर नारी के बागर ।
बलि बलि जाऊँ मुखारविन्द की सुरति कलेवर सागर ॥
गुण कहियत कहि पार न आवत मसि पर्वत क्षिति कागर ।
सूरदास प्रभु हमें लाज आवत है तुम हो सदा उजागर ॥

११

नयन उनींदे भए रँगराते ।
मनहु गुलाब कुसुम पर सजनी भिरत भृंग मदमाते ॥
प्रेम पराग पाखुरी पलदल प्रफुलित मदन लताते ।
सदा सुवास विलास विलोकनि प्रकट प्रेम के नाते ॥
तँसिये मारत मंद जँभाई मिलत मुदित छवि ताते ।
सींचे सूर श्याम माननि निज हित करि केलि कला ते ॥

१२

पाग खसी शिर पेंच लटपटी घूमत नयन उनींदे उजागरि ।
पीक कपोल अधर मसि दाग कंकणपीठि गड़्यो अति सुन्दरि ॥
जात उते इत पाँव चले क्यों बोलत हो तुतरात लिये दरि ।
प्रात समय उठि कहाँ ते सूर प्रभु आवत हो अनुराग भरे हरि ॥

१३

चन्द्रावलि-धाम श्याम भोर भये आये ।
अनि रिस करि रही बाम रैन जागि चारि याम,
देखे जो द्वार कान्ह ठाड़े सुखदाये ॥
मन्दिर तें रही निहारि मन हीं मन देति गारि,
ऐसे कपटी कठोर आये निशा बीते ।
रिस नहिं सकी सँभारि बैठि चली द्वारि बारि,
ठाड़े गिरधारी निरखि छबि नख शिख ही ते ॥
बिन गुण बनी हृदयमाल ता बिच नख-क्षत रसाल,
लोचन दोउ दर्शि लाल कैसी रुचि बाढ़ी[1] ।
जावक रंग लग्यो भाल चन्दन भुज पर विशाल,
पीक पलक अधर झलक बाम प्रीति गाढ़ी ॥
क्यों आये कौन काज नाना करि अंग साज,
उलटे भूषण शृंगार निरखत हौं जाने ।

१. पाठान्तर—जैसी रिस गाढ़ी

ताही के जाहु श्याम जाके निशा बसे धाम,
मेरे घर कहा काम सूरदास गाने ॥

१४

रैनि रीझे की बात कहौ।
काहे को सकुचत मन मोहन ठाढ़े क्यों न रहौ॥
पीताम्बर कहा भयो तुम्हारो कीधौं लियो गहौ।
नीलाम्बर पहिरावनि पाइ सन्मुख क्यों न चहौ॥
तब हँसि चले श्याम मंदिर तन कछु जिय लाज गहौ।
सूर श्याम हवाँ ही अब रहिये अति पुनीत तुम हौ॥

१५

आए कहँ रमारमन ? ठाढ़ भवन काज कवन ?
करौ गवन वाके भवन, जामिनि जहँ जागे।
भृकुटी भई अधोभाग, पल-पल पर पलक लाग,
चाहत कछु नैन सैन मैन प्रीति-पागे।
चंदन बंदन ललाट, चूरि चिन्ह चारु ठाठ,
अंजन-रंजित कपोल, पीक लीक लागे।
उर-उरोज नख ससि लौं, कुंकुम कर-कमल भरे,
भुज तटंक-अंक उभय अमित दुति विभागे।
नख सिख लौं सिथिल गात, बोलत नहि बनत बात,
चरन धरत परत अनत, आलस अनुरागे।

१२

पाग खसी शिर पेंच लटपटी घूमत नयन उनींदे उजागरि।
पीक कपोल अधर मसि दाग कंकणपीठि गड़्यो अति सुन्दरि।
जात उते इत पाँव चले क्यों बोलत हो तुतरात लिये दरि।
प्रात समय उठि कहाँ ते सूर प्रभु आवत हो अनुराग भरे हरि॥

१३

चन्द्रावलि-धाम श्याम भोर भये आये।
अनि रिस करि रही वाम रैन जागि चारि याम,
देखे ओ द्वार कान्ह ठाड़े सुखदाये॥
मन्दिर तें रही निहारि मन हीं मन देति गारि,
ऐसे कपटी कठोर आये निशा बीते।
रिस नहिं सकी सँभारि बैठि चली द्वारि वारि,
ठाड़े गिरधारी निरखि छवि नख शिख ही ते॥
विन गुण बनी हृदयमाल ता बिच नख-क्षत रसाल,
लोचन दोउ दर्शि लाल कैसी रुचि बाढ़ी[1]।
जावक रंग लग्यो भाल चन्दन भुज पर विशाल,
पीक पलक अधर झलक वाम प्रीति गाढ़ी॥
क्यों आये कौन काज नाना करि अंग साज,
उलटे भूषण शृंगार निरखत हौं जाने।

---

१. पाठान्तर—जैसी रिस गाढ़ी

ताही के जाहु श्याम जाके निशा बसे धाम,
मेरे घर कहा काम सूरदास गाने ॥

१४

रैनि रीझे की बात कहौ ।
काहे को सकुचत मन मोहन ठाढ़े क्यों न रहौ ॥
पीताम्बर कहा भयो तुम्हारो कीधौं लियो गहौ ।
नीलाम्बर पहिरावनि पाइ सन्मुख क्यों न चहौ ॥
तब हँसि चले श्याम मंदिर तन कछु जिय लाज गहौ ।
सूर श्याम ह्यॉं ही अब रहिये अति पुनीत तुम हौ ॥

१५

आए कहँ रमारमन ? ठाढ़ भवन काज कवन ?
करौ गवन वाके भवन, जामिनि जहँ जागे ।
भृकुटी भई अधोभाग, पल-पल पर पलक लाग,
चाहत कछु नैन सैन मैन-प्रीति-पागे ।
चंदन वंदन ललाट, चूरि चिन्ह चारु ठाठ,
अंजन-रंजित कपोल, पीक लीक लागे ।
उर-उरोज-नख ससि लौं, कुंकुम कर-कमल भरे,
भुज तटंक-अंक उभय अमित दुति विभागे ।
नख सिख लौं सिथिल गात, बोलत नहिं बनत बात,
चरन धरत परत अनत, आलस अनुरागे ।

फुटकर

१

शोभित कर नवनीत लिए ।
घुटुरुन चलत रेणु तनु मंडित मुख दधि लेप किए ॥
चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक किए ।
लट लटकनि मनो मत्त मधुप गन मादक मदहि पिए ॥
कठुला कंठ वज्र केहरि नख राजत रुचिर हिए ।
धन्य सूर एको पल या सुख का शत कल्प जिए ॥

२

धनि यशुमति बड़भागिनी लिए श्याम खिलावै ।
तनक तनक भुज पकरिकै ठाढ़ो होन सिखावै ॥
लरखरात गिरि परत हैं चलि घुटुरुनि धावै ।
पुनि क्रम क्रम भुज टेकि कै पग द्वैक चलावै ॥
अपने पाँयन कबहिं लौं मो देखत धावै ।
सूरदास यशुमति यह विधि सौंज मनावै ॥

३

खेलत में को काको गोसैयाँ।
हरि हारे जीते श्रीदामा बरबस ही कत करत रिसैयाँ ॥
जाति पाँति हम ते कछु नाहिन बसत तुम्हारी छहियाँ।
अति अधिकार जनावत या ते अधिक तुम्हारे हैं कछु गैयाँ ॥
रुहठि करै तासों को खेलै रहे पौढ़ि जहँ तहँ सब ग्वैयाँ।
सूरदास प्रभु खेलोइ चाहत दाँव दयो करि नंद दोहैयाँ ॥

४

श्याम कहा चाहत से डोलत।
बूझे हू ते बदन दुरावत सूधे बोल न बोलत ॥
सूने निपट अंध्यारे मंदिर दधि भाजन में हाथ।
अब कहि कहा बनैहो उत्तर कोऊ नाहिन साथ ॥
मैं जानो यह घर अपनो है या धोखे मैं आयो।
देखतु हौं गोरस में चींटी काढ़न को कर नायो ॥
सुनि मृदु वचन निरखि मुख शोभा ग्वालिनि मुरि मुसुकानी।
सूरश्याम तुम हो अति नागर बात तिहारी जानी ॥

५

श्याम गए ग्वालिनि घर सूनो
माखन खाइ डारि सब गोरस बासन फोरि सोरु हठि दूनो।

मढ़ो माट एक बहुत दिननि को तासु किए दश टूक।
सोवत लरिकन छिरकि मही सों हँसत चलै दै कूक॥
आइ गई ग्वालिनि तिहि औसर निकसत हरि धरि पायो।
देखत घर बासन सब फूटे-दही दूध ढरकायो॥
दोउ भुज धरि गाढ़े करि लीन्हें गई महरि के आगे।
सूरदास अब बसै कौन ह्याँ पति रहिहैं ब्रज त्यागे॥

६

देखो माई या बालक की बात।
बन उपबन सरिता सब मोहे देखत श्यामल गात॥
मारग चलत अनीत करत हरि हठि कै माखन खात।
पीताम्बर वै शिर ते ओढ़त अंचल दै मुस्कात॥
तेरी सौंह कहा कहौं यशोदा उरहन देत लजात।
जब हरि आवत तेरे आगे सकुचि तनक ह्वै जात॥
कौन कौन गुण कहौं श्याम के नेक न काहु डरात।
सूर श्याम मुख निरखि यशोदा कहति कहा यह बात॥

७

तनक कनक की दोहनी दै दै री मैया
तात दुहन सीखन कह्यौ मोहिं धौरी गैया॥
अटपटे आसन बैठि के गोथन कर लीनो।
धार अनत ही देखि कै ब्रजपति हँसि दीनो॥

घर घर ते आईं सबै देखन ब्रजनारी ।
चितै चोरि चित हरि लियो हँसि गोप-बिहारी ॥
विप्र बोलि आसन दियो करि वेद उचारी ।
सूर श्याम सुरभी दुही सन्तन हितकारी ॥

८

दूध दोहिनी ले री मैया ।
दाऊ टेरत सुनि मैं आऊँ तब लौं करि विधि धैया ॥
मुरली मुकुट पीताम्बर दे मोहि ले आई महतारी ।
मुकुट धरयो शिर कटि पीताम्बर मुरली कर लई धारी ॥
राधे राधे कहि मुरली में खरिकहि लई बुलाई ।
सूरदास प्रभु चतुर शिरोमणि ऐसी बुद्धि उपाई ॥

९

कुँवरि कह्यो मैं जाति महरि घर ।
प्रात ही आई खरिका दुहावन कहति दोहनी लेकर ॥
तब खरिकहि कोउ ग्वाल गये नहिं तिहि कारण ब्रज आई ।
जो देखौं तो अजिरहि बैठे गैया दुहत कन्हाई ॥
तनक दोहनी तनक दुहत मोहि देखत रुचि लागी ।
तनक राधिका तनक सूर प्रभु देखि महरि अनुरागी ॥

१०

हरि सों धेनु दुहावति प्यारी ।
करति मनोरथ पूरण मन वृषभानु महर की वारी ॥
दूध धार मुख पर छबि लागत सो उपमा अति भारी ।
मानो चन्द्र कलंकहि धोवत जहँ तहँ बुन्द सुधारी ॥
हाव भाव रस मग्न हैं दोऊ छबि निरखति ललितारी ।
गो-दोहन सुख करत सूर प्रभु तीनहु भुवन कहा री ॥

११

खेलन हरि निकसे ब्रज खोरी ।
कटि कछनी पीताम्बर ओढ़े हाथ लिए भौंरा चक डोरी ॥
मोर मुकुट कुंडल श्रवणन वर दशन दमक दामिनि छबि थोरी ।
गये श्याम रवितनया के तट अंग लसति चन्दन की खोरी ॥
औचक ही देखी तहाँ राधा नयन विशाल भाल दिए रोरी ।
नील वसन घरिया कटि पहिरे बेनी पीठि रुचिर झकझोरी ॥
संग लरिकिनी चलि इत आवति दिन थोरी अति छबि जनगोरी ।
सूर श्याम देखत ही रीझे नैन नैन मिलि परी ठगोरी ॥

१२

बूझत श्याम कौन तू गोरी ।
कहाँ रहति का की है बेटी देखी नहीं कहूँ ब्रज खोरी ॥

काहे को हम ब्रजतन आवति खेलति रहति आपनी पौरी
सुनति रहति श्रवणनि नँद ढोटा करत रहत माखन दधि चोरी।
तुम्हरो कहा चोर हम लैहैं खेलन चलौ संग मिलि जोरी।
सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि बातन भुरइ राधिका भोरी॥

१३

पीत उढ़नियाँ कहाँ बिसारी।
यह तौ लाल ढिगनि की औरै है काहू की सारी॥
हौं गोधन लै गयो यमुनतट तहाँ हुतीं पनिहारी।
भीर भई सुरभी सब बिडरीं मुरली भली सँभारी॥
हौं लै गयो और काहू की सो लै गई हमारी।
सूरदास प्रभु भली बनाई बलि यशुमति महतारी॥

१४

बूझति जननी कहाँ हुती प्यारी।
किन तेरे भाल तिलक रचि कीनों किहि कच गूँदि माँग शिर पारी॥
खेलत रही नंद के आँगन यशुमति कही कुँवरि ह्याँ आरी।
तिल चाँवरी गोद करि दीनी फरिया[१] दई फारि नव सारी॥
मेरो नाँउ बूझि बाबो को तेरो बूझि दई हँसि गारी।
मो तन चितै चितै ढोटा तन कछु सविता सों गोद पसारी॥
यह सुनि कै वृषभानु मुदित चित हँसि हँसि बूझति बात दुलारी।
सूर सुनत रस सिंधु बढ़यो अति दंपति मन में यहै बिचारी॥

१—एक चौकोर कपड़ा जो कमर में बाँधा जाता है।

१५

कहत कान्ह जननी समझाई।
जहँ तहँ डारै रहत खिलौना राधा जनि लै जाइ चुराई॥
साँझ सवारे आवन लागी चितै रहति मुरली तन आई।
इनही में मेरो प्राण बसतु है तेरे भाए नेकु न माई॥
राखि छपाइ कह्यो करि मेरो बलदाऊ को जनि पतियाई।
सूरदास यह कहति यशोदा को लैहै मुहि लगो बलाई॥

१६

आज मैं गाइ चरावन जैहौं।
वृंदावन के भाँति भाँति फल अपने कर मैं खैहौं॥
ऐसी अबहिं कहो जनि बारे देखौ अपनी भाँति।
तनक तनक पायन चलिहौ कस आवत ह्वै है राति॥
प्रात जात गैयाँ लै चारन घर आवत हैं साँझ।
तुम्हरो कमल बदन कुम्हिलैहै रेंगत घामहिं माँझ॥
तेरी सौं मोंहि घामु न लागत भूख नहीं कछु नेक।
सूरदास प्रभु कह्यो न मानत परे आपनी टेक॥

१७

मैया हौं गाय चरावन जैहौं।
तू कहि महर नंद बाबा सों बड़ो भयो न डरैहौं॥

तेरे हेत मात मनसुख अरु हलधर सँग रहिहौं।
बंशीवट तर गाइन के सँग खेलत अति सुख पैहौं॥
ओदन भोजन दै दधि काँवरि भूख लगे तो खैहौं।
सूरदास मैं साथ सौंह दै जो यमुना जल न्हैहौं॥

१८

जननि मथति दधि गो दुहत कन्हाई।
सखा परस्पर कहत श्याम सों हमहूँ ते तुम करत चँड़ाई॥
दुहुन देहु कछु दिन अरु मोको तब करिहौ मो सम सदिआई।
जब लौं एक दुहौगे तब लौं चारि दुहौं तो नंद दुहाई॥
झूठहि करत दुहाई प्रातहि देखिहिंगे तुम्हरी अधिकाई।
सूर श्याम कह्यो कालि दुहेंगे हमहूँ तुम मिलि होड़ लगाई॥

१९

करि लो न्यारी हरि आपनि गैयाँ।
नहिन बसात लाल कछु तुम सों सबे ग्वाल एक ठैयाँ॥
नाहिन अधिक तेरे बाबा के नाहिं तुम हमरे नाथ गुसैयाँ।
हम तुम जाति पाँति के एकै कहा भयो अधिकी द्वै गैयाँ॥
जा दिन ते सबरे गोपन में ता दिन ते तू करत लँगरैया।
मानी हार सूर के प्रभु सों बहुरि न करिहौं नंद दुहैया॥

२०

तुम पै कौन दुहावे गैया।
लिये रहत कर कनक दोहनी बैठत हो अधपैया॥
अति रस कामकि प्रीति जानि कै आवत खरक दुहैया।
इत चितवत उत धार चलावत एहि सिखयो है मैया॥
गुप्त प्रीति तासों करि मोहन जो है तेरी दैया।
सूरदास प्रभु झगरो सीख्यो ज्यों घर खसम गुसैयाँ॥

२१

धेनु दुहत अति ही रति बाढ़ी।
एक धार दोहनि पहुँचावत एक धार जहँ प्यारी ठाढ़ी॥
मोहन कर ते धार चलत पय मोहनी मुख अति ही छवि गाढ़ी।
मनो जलधर जलधार वृष्टि लघु पुनि पुनि प्रेम चंद पर बाढ़ी॥
सखी संग की निरखति यह छवि भई व्याकुल मन्मथ की डाढ़ी।
सूरदास प्रभु के वश भईं सब भवन काज ते भईं उचाढ़ी॥

२२

राधा सखियन लई बोलाइ।
चलहु यमुना जलहि जैये चलीं सब सुख पाइ॥
सबनि एक एक कलश लीन्हों तुरत पहुँचीं जाइ।
तहाँ देख्यो श्याम सुन्दर कुँवरि मन हरपाइ॥

नंदनंदन देखि रीझे चितै रहे चितलाइ।
सूर प्रिय की प्रिया राधा भरत जल मुसकाइ॥

२३

मेरे जिय ऐसी आनि बनी।
बिन गोपाल और नहिं जानों सुनि मोसों सजनी॥
कहा काँच संग्रह के कीन्हें हरि जो अमोल मनी।
विष सुमेर कछु काम न आवे अमृत एक कनी॥
मन वच क्रम मोहि और न भावै अब मेरे श्याम धनी॥
सूरदास स्वामी के कारण तजी जाति अपनी॥

२४

सेवा मानि लई हरि तेरी।
अब काहे पछिताति राधिका श्याम जात करि फेरी॥
गुरुजन में भावहि की पूजा और कहौ कछु टेरी।
मोहन अति सुख पाय गये री चाहति हौ कह मेरी॥
तेरे वश भए कुँवर कन्हाई करति कहा अवसेरी[१]।
सूर श्याम तुम को अति चाहत तुम प्यारी हरि केरी॥

२५

राधा भाव कियो यह नीको तुम बेंदी उन पाग छुआई
ऐसे भेद कहा कोउ जानै तुम ही जानौ गुप्त दुराई।

१—विलंब।

तुम जुहार उनको जब कीन्हों तुमको उनही जुहार कियो।
एकै प्राण देह द्वै कीन्हें तुम वै एकै नहीं वियो॥
तुम पग परसि नैन पद राख्यो उनि कर कमलनि हृदय धरयो।
सूर श्याम हृदय तुम राखे तुम उनको लै कंठ भरयो॥

२६

राधे! तेरे नैन किधौं मृगवारे।
रहत न युगल भौंह युग जोते भजत तिलक रथ डारे॥
यदपि अलक अंजन गहि बाँधे तऊ चपल गति न्यारे।
घूँघट पट वागुर ज्यों विडवत[1] जतन करत शशि हारे॥
खुटिला युगल नाक मोती मणि मुक्तावलि ग्रीव हारे।
दोउ रुख लिये दीप कर मानो किये जात उजियारे॥
मुरली नाद सुनत कछु धीरज जिय जानत चुचकारे।
सूरदास प्रभु रीझि रसिक प्रिय उमग प्राण धनवारे॥

२७

तोहिं किन रूठब सिखई प्यारी।
नवल वैस नव नागरि श्यामा वै नागर गिरधारी॥
सिगरी रैन मनावत बीती हा हा करि हौं हारी।
एते पर हठ छाँडत नाहीं तू वृषभानु दुलारी॥
शरद समय शशि दरशि समर सर लागे उन तन भारी।
मेटहु त्रास दिखाय वदन विधु सूर श्याम हितकारी॥

१—तोड़ते हैं।

२८

निशि दिन बरसत नैन हमारे ।
सदा रहत बरषा ऋतु हम पर जब ते श्याम सिधारे ॥
नैन अंजन न रहत निशि बासर कर कपोल भये कारे ।
कंचुकि पट सूखत नहिं कबहूँ उर बिच बहत पनारे ॥
ऐसे सलिल सबै भई काया पल न जात रिस टारे ।
सूरदास प्रभु गोकुल बूड़त काहे न लेत उबारे ॥

२९

अँखियाँ करत हैं अति आर ।
सुन्दर श्याम पाहुने के मिसि मिल न जाहु दिन चार ॥
बाँह थकी बायसहि उड़ावत कब देखौं उनहार ।
मैं तो श्याम श्याम कै टेरति कालिंदी के करार ॥
कमल वदन ऊपर दुइ खंजन मानो बूडत बार ।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिनु सकैं न पंख पसार ॥

३०

हौं ता दिन कजरा दैहौं ।
जा दिन नँदनंदन के नैनन अपने नैन मिलैहौं ॥
सुन री सखी इहै जिय मेरे भूलि न और चितैहौं ।
अब हठ सूर इहै व्रत मेरो कौंकिर[1] खै मर जैहौं ॥

---

१. हीरे की कनी ।

३१

हरि बिछुरन निशि नींद गई री ।
घन प्रिय विरह शिलीमुख मधुमति वचननि हौं अकुलाई री ॥
वह जु हुती प्रतिभा समीप की सुख सम्पति दूरत जई री ।
ताते भर हरि सुन री सजनी सेज सलिल दृगनीर भई री ॥
अबउ अधार जु प्राण रहत हैं इनि वशहिन मिलि काठिन ठई री ।
सूरदास प्रभु सुधारस बिना भई सकल तनु विरह रई री ॥

३२

रहु रहु मधुकर मधु मतवारे ।
कौन काज या निर्गुण सों चिरजीवहु कान्ह हमारे ॥
लोटत पीत पराग कीच में नीच न अंग सम्हारे ।
बारंबार सरक मदिरा की अपसर रटत उघारे ॥
द्रुम बेली हमहूँ जानत हौं जिनके हौं अलि प्यारे ।
एक बास लेके बिरमावत जेते आवत कारे ॥
सुंदर वदन कमल दल लोचन यशुमति नंद दुलारे ।
तन मन सूर अर्पि रही श्यामहिं काये लेहिं उधारे ॥

३३

मधुकर हम न होहिं वे बेली ।
जिन भजि तजि तुम फिरत और रंग करत कुसुम रत केली ॥

वारे ते वर वारि बढ़ी है अरु पोषी पिय पानि।
बिनु पिय परम प्रात उठि फूलत होति सदा हित हानि॥
ए बेली विरहा वृन्दावन उरझी श्याम तमाल।
पुहुपवास रस रसिक हमारे बिलसत मधुप गोपाल॥
योग समीर धीर नहिं डोलत रूप डार ढिग लागी।
सूर पराग न तजति हिए ते श्रीगुपाल अनुरागी॥

३४

काहे को रोकत मारग सूधो।
सुनहु मधुप, निर्गुन कंटक तें राजपन्थ क्यों रूँधो॥
कै तुम सिखै पठाए कुब्जा कै कही श्याम घन जूधौं।
वेद पुरान सुमृति सब ढूँढो जुवतिन जोग कहूँ धौं॥
ताको कहा परेखो कीजै जानत छाछ न दूधो।
सूर मूर अक्रूर गए लै ब्याज निबेरत ऊधो॥

३५

मोहन माँग्यो अपनो रूप।
यहि ब्रज बसत अँचै तुम बैठी ता बिनु तहाँ निरूप॥
मेरो मन मेरो अलि! लोचन लै जो गए धुप धूप।
हम सों बदलो लेन उठि धाए मनो धारि कर सूप॥
अपनो काज सँवारि सूर सुनु हमहिं बतावत कूप।
लेवा देई बराबर में है कौन रंक को भूप॥

३६

बिन गोपाल बैरन भईं कुंजैं।
तब ये लता लगत अति शीतल अब भईं विषम ज्वाल की पुंजैं॥
वृथां बहति जमुना खग बोलत वृथा कमल फूल अलि गुंजैं।
पवन पानि घनसार सजीवनि दधि सुत किरन भानु भईं भुंजैं॥
ये ऊधो कहियो माधव सों बिरह कदन[1] करि मारत लुंजैं।
सूरदास प्रभु को मग जोवत अँखियाँ भईं बरन ज्यों गुंजैं॥

३७

संदेसनि मधुबन कूप भरे।
जे कोइ पथिक गए हैं ह्याँ ते फिर नहिं गवन करे॥
कै वै श्याम सिखाय समोधे कै वै बीच मरे।
अपने नहिं पठवत नँदनन्दन हमरेउ फेर घरे॥
मसि खूँटी[2] कागर जल भीजे, सर दौ लागि जरे।
पाती लिखैं कहो क्यों करि जो पलक कपाट अरे॥

३८

उर में माखन चोर गड़े।
अब कैसहु निकसत नहिं ऊधो तिरछे ह्वै जु अड़े॥
जदपि अहीर जसोदानन्दन तदपि न जात छँड़े।
वहाँ बेन जदुबंस महा कुल हमहिं न लगत बड़े॥

१. छुरी
२. खतम हो गई

को वसुदेव, देवकी है को, ना जानैं औ बूझैं ।
सूरश्याम सुन्दर बिनु देखे और न कोऊ सूझैं ॥

३९

ऊधो जाहु तुम्हैं हम जाने ।
श्याम तुम्हैं ह्याँ नाहिं पठाए तुम हौ बीच भुलाने ॥
व्रज वासिन सौं जोग कहत हौ बातहु कहन न जाने ।
बड़ लागै न विवेक तुम्हारो ऐसे नये अयाने ॥
हम सों कही लई सो सहि कै जिय गुनि लेहु अयाने ।
कहँ अबला कहँ दिशा दिगम्बर समुख करो पहिचाने ॥
साँच कहो तुम को अपनी सौं बूझति बात निदाने ।
सूरश्याम जब तुम्हैं पठाये तब नेकहु मुसुकाने ॥

४०

ऊधो जान्यो ज्ञान तिहारो ।
जानै कहा राजगति लीला अन्त अहीर विचारो ॥
हम सब अयानी, एक सयानी कुब्जा सों मन मानो ।
आवत नहीं लाज के मारे मानहुँ कान्ह खिस्यानो ॥
ऊधो जाहु बाँह धै ल्यावो सुन्दर श्याम पियारो ।
ब्याहौ लाख धरौ दस कुबरी अंतहिं कान्ह हमारो ॥
सुन री सखी ! कछु नहिं कहिए माधव आवन दीजै ।
जबहिं मिलैं सूर के स्वामी हांसी करि करि लीजै ॥

जमुनापद

१

नाम महिमा ऐसी जो जानो ।
मर्यादादिक कहैं लौकिक सुख लहैं पुष्टि को पुष्टिपति निश्चय मानो ।।
स्वाति जल बुन्द जब परत है जाहि में ताहि में होत तैसो जो वानो ।
यमुना कृपा जान सिन्धु जल बहियान सूर गुणपूर कहाँ लो वखानो ।।

२

भक्त को सुगम यमुना अगम ओरे ।
प्रात ही न्हात अघ जात ताके सकल यमदूत रहत ताहि हाथ जोरे ।।
अनुभवी बिना अनुभव कहा जानहीं जाको प्रिया नहीं चित्त चोरे ।
प्रेम के सिन्धु को मर्म जान्यो नहीं सूर कहि कहा भयो देह बोरे ।।

३

फल फलित होत फल रूप जाने ।
देखि हू नहीं सुनी ताहि कहि आपनी,
ताकी यह बात कोऊ कैसे माने ।।

ताही के हाथ निर्मोल नग दीजिये,
जोई नीके करि परखि जाने।
सूर कहि क्रूर ते दूर बसिये,
सदा यमुना को नाम लीजे जो छाने॥

४

यमुनापति दास के चिह्न न्यारे।
भगवदी को भगवद संग मिलि रहे ताके वसत हिये प्राण प्यारे।
गूढ़ यमुना बात जोई अब जान ही ताके मनमोहन नयन तारे
सूर सुख सार निर्धार वहे पाव ही जापर होय बल्लभ कृपारे॥

५

श्री यमुना जी तिहारो दर्श मोहि भावे।
श्री गोकुल के निकट बहत हो लहरन की छवि आवे॥
सुख करणी दुख हरणी श्री यमुना जो जन प्रात उठि न्हावे।
मदन मोहन जू की खरी पियारी पटरानी सो कहावे॥
वृन्दावन में रास रच्यो है मोहन मुरली बजावे।
सूरदास प्रभु तिहारे मिलन को वेद विमल यश गावे॥

६

श्री यमुना जी पतित पावन करयो।
र ही जब दरश दीन्हों सकल पाप जु हरयो॥

भुज तरंगन स्पर्श कीन्हों पयपान दे सुख भरयो ।
नाम लेतहि गई दुर्मति कृष्ण रस वश तरयो ॥
गोपकन्या कियो मज्जन लाल गिरधर वरयो ।
सूर श्रीगोपाल निरखत सकल कारज सरयो ॥

७

श्री यमुना जी पतित पावन करण ।
प्रथम ही जाको दर्श पायो कोटि कलिमल हरण ॥
पैठत ही भुज तरंग परशत मिटत जिय की जरन ।
नाम उचरत शुद्ध वाणी बुद्धि पोषण भरण ॥
उपजे उग्र वैराग जाको खैंचि लावत शरण ।
सूर हरि को भक्ति दाता विश्वतारण तरण ॥

कृष्णदास

समुदाय-कीर्तन

१

मो मन गिरिधर छवि पै अटक्यो।
ललित त्रिभंग चाल पै चलिकै, चिबुक चारु गड़ि ठटक्यो ॥
सजल स्याम धन बरन लीन ह्वै, फिर चित अनत न भटक्यो।
कृष्णदास किये प्राण निछावर, यह तन जग सिर पटक्यो ॥

२

बरणत तऊ न बने सुनि सजनी! रगमगो बेष बन्यो गोपाल को।
रसना जो होहि लख[1] कोटिक रूप गोवर्धनधारी लाल को ॥
स्याम धाम कमनीय बरण सखि! मानो तरुण घन तरु तमाल को।
यवती-लता गात्त अरुझानी पान करत मधु मधुप माल को ॥
नख शिख मदन कोटि लावण छवि भूषण बसन नैन विशाल को।
कृष्ण दास प्रभु सुरत-सुधा-निधि ताप हरण तिय विरह ज्वालको।

नोट—पद १ कृष्णदास जी का यह पद एक वेश्या ने मंदिर में गाया था।
अ० छा० पृ० ३०

१ पा० सदा,

३

तोहि ध्यान लाग्यो री सजनी ।
चारेक दृष्टि परे मनमोहन, देखियत चित्र लिखी सी ठाढ़ी सदन[२]
सिंधु जल बूँद सनी ॥
रूप निधान, कमल लोचन तोहि मिल आजु की रजनी ।
कृष्ण दास प्रभु गोवर्धनधर रसिक जुवति दुख हरनी ॥

४

रीझियो रसिक गोपाल बिनोदी, तेज अलापी प्यारी अद्भुत टोड़ी ।
चदन देखि उडुपति नभ थकति, धरखित मन गति भई निगोड़ी ॥
दंपति सुघर राय चूड़ामणि, केलि कला कौतुक रस कौड़ी ।
कृष्णदास गिरिधरन बिलोकित, लज्जित मदन लहत नहिं चोड़ी ॥

५

बंक चितवनि चितै रसिक तन, गुप्त प्रीति को भेद जनायो ।
मुख की रुखाई कैसे घटत है, हिय प्रेम नहिं दुरत दुरायो ॥
सगबगे अलक बदन पर बिथुरें, यहि विधि लाल रहचटे लायो ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर नागर, नव निकुंज अपनो करि पायो ॥

६

ध्यावत कान्ह विमल यश तेरो ।
गावत शिव शारद मुनि नारद, प्राण जीवन धन मेरो ॥

---

२. ,, मदन

गावत वेद, बंदीजन अहर निश, अरु मुनि जूथ घनेरो।
गावत शेष महेश रसना रस रसिक सुख केरो॥
गिरिधर पिय गावत ब्रजवासी, मिले प्रेम के घेरो।
कृष्णदास द्वारे दुलरावत श्री वल्लभ को चेरो॥

७

जगन्नाथ मन मोह लियो रे।
घर अँगना मोहे कछु ना भावे, लोक लाज सब छोड़ दियो रे॥
नील चक्र पर ध्वजा बिराजे, परसत ही आनंद भयो रे।
साँवरी सूरत रज लपटानी, लाल दुशाला ओढ़ लियो रे।
श्री बलभद्र सहोदरा संगहि कृष्णदास बलिहार कियो रे॥

८

अरे मन क्यों न भया अपना रे, देख जगत सपना रे।
सुन्दर रूप देख लोभाना हो तुम, हुआ जग सपना रे॥
जप, तप, योग, यज्ञ, व्रत, संयम, कर याके कथना रे।
बिना भक्ति भगवान है दुर्लभ, वृथा जग में क्यों खपना रे॥
कृष्णदास दासन के ऊधो, हरि हरि हरि जपना रे॥

९

काहे को दुराव करति है री! देखिये फूल प्रकट हिये।
तू वर मधुप, प्रिय मुख कमल, आइ मकरंद पिये॥

शिथिल अंग निशा के जागे, बिथुरी अलकें स्वाद लिये।
जौवन के मदमाती ग्वालिन, डगत चरण धरनी पै दिये॥
नूपुर अरसात रुणित मानो रति केलि किये।
कृष्णदास स्वामिनी गिरिधरण रसिक रसिये॥

१०

आजु पिय सों तू मिली री मानो।
श्रमजल कण भर वदन की शोभा, निरखि नभसि उडुराज खिसानो।
त्रिभुवन जुवतिन को सुख सरवस, जानति हों तव माँझ सयानो।
कृष्णदास प्रभु रसिक मुकट मणि, सुवश किये गोवर्धन रानो॥

११

नव निकुंज तें आवति बनी राधा चाल सुहावनी मन की हरनि।
विकसित वदन कमल की शोभा कहा कहों देखत उदित तरनि॥
तरुण जलद नव श्याम के संग सरस भरि भेंटत भूतल जरनि।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर प्रिय सों कीनी बातें रसिक रसीली बरनि॥

१२

मैं तेरी अधिक चतुराई जानी तैंने कंचुकी सँभारी।
आनंद रस बश देह भूलि गई मिलत गोवर्धनधारी॥
कहा कहूँ गुणराशि अंग अंग चलति मधुर गति भारी।
कृष्णदास प्रभु रसिकलाल के तू अति प्राण पियारी॥

१३

आई तू तिलक क्यूं मिटाये ।
रति रन गोपाल संग नख सर उर लाये ॥
कपोलन पर पीक लगी नैन[१] कषाये ।
हरि सों मिलि मदन जीत्यो दाव उपाये ॥
कृष्णदास प्रभु सों मिलि निशान बजाये ।
ऐसी को ? निमिष तजे गिरिधर पाये ॥

१४

तें गोपाल हेत कुसंभी कंचुकी रँगाय लई ।
भली भई सुफल करी आजु निशि सुहावनी ॥
रोम रोम फूल चाय, चपल नैन भृकुटि भाय ।
अभरण चल अंग चाल डगमगी सुहावनी ॥
शुभग सारी झुमक तन श्याम पाट कुसुम नीबी ।
तनसुख पचरंग छींट ओढ़नी सुहावनी ॥
सोहत अलक बिथुरी बदन मोहन लावण्य सदन ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर केलि अति सुहावनी ॥

१५

कंचुकी के बंद तरकि तरकि टूटे देखत मदन मोहन घनश्यामहिं
काहे को दुराव करत है री नागरि ! उमगत उरज दुरत क्यों यामहिं

१. पाठान्तर—मैन ।

कछु मुसकात दसन छवि सुंदर हँसत कपोल लोल भ्रू भ्रामहिं।
रवि शशि युगल परे रति फंदन श्रवणनि पालक ताटंक के नामहिं॥
वदन कमल पर अलक मधुप वर खंजन नैन लेत विश्रामहिं।
सुनि कृष्णदास रसिक गिरिधर रंग रंगित सुमुखि लजावति कामहिं॥

१६

झूमत अलक तेरे कमल वदन पर अधिक नीके लागत नैन आलस री।
कहा कहूँ शोभा उरज युगल नव ले चली रसिक वर मंगल कलस री।
जानी मैं तें निधि पाई निकुंज मंडप यह जाके करत ही नैन ललस री।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर प्रतीति बाढ़ी नख पद पांति सोहे मोहनललसरी

१७

कहि न परे तेरे वदन की ओप।
झलकनि नव मोतिनहि लजावति निरखत शशि शोभा भई लोप॥
पञ न लागति चाहति प्रिय तन उन्नत भौंह घटाटोप।
चपल कटाक्ष कुसुम शर तानति फुरत अधर कछु प्रेम प्रकोप॥
प्रात समय आए श्याम मनोहर तब ही लुहावत अपनी चोप।
कृष्णदास प्रभु गोवर्धन धर अति नागर वर धरे वेष गोप॥

१८

प्रात आवत बनी वृषभाननंदिनी कणित[1] नूपुर चरण लटक मन्दालसी
सुरति सुखभाव अंग अंग भूषणवसन अलक फरकतकछु भाँतिमंदालसी

पाठान्तर—१. रणित

अधर अद्भुत रेख प्रिया प्रीतम वेश सखी मंडल रसद नैन मन्दालसी
कृष्णदासनि नाथ रसिकगिरिवरधरण मन हरो चारु चल भौंह मंदालसी

१९

अरुण उदय नीके लागत सुनि सजनी ! हौं तेरे नैन रसमसे ।
मानहु शरत कमल संपुट मंह युग अलि मधु लंपट विवश वसे ॥
श्याम श्वेत आलम रस भावित भाव समूह कषाय कसमसे ।
सुनि कृष्णदास रसिक गिरिधर प्रिय सुखद सहज अंजनसों मसमसे ॥

२०

ऐसी मानत ही अपने जिय मँह पिय से मिलत ही करोंगी लड़ाई ।
देखत बदन[1] धीरज न धरो मन लाल गिरिधर[2] हौं जानि पाई ॥
कहा कहौं[3] सरवस चोरो सखि ! रूप दिखाय ठगोरी लाई ।
कृष्णदास प्रभु रसिक शिरोमणि ले भुज बीच बातनि अरुझाई ॥

२१

नयन मन्द आलस भरे हैं लसत वदन चन्द्रमहिं प्रकाशित ।
गति मन हरति सकल जनता के उरज युगल कर लिनु उपदासित ॥
रति तव कोक कला परिपूरण भौंह रुचिर चित्र लेख विकासित ।
सुनि कृष्णदास विविध युवतिनि के ले यौवन गिरिधरण विकासित ॥

२२

उरताल से दुराव कित करत मानहु मिले गोवर्धनधारी ।
अधर सुरंगे पीक कपोलन नख पद उरज सोहत चरण गति भारी ॥

पाठान्तर—१. नन्दन २. गिरिधरण ३. करौं

मरगजी ओढ़नी कंचुकी के बंद टूटे नोवो पट ग्रीवन होय सारी।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर सँग जागीताते उमगति फूल अंग अंगसुखकारी

२३

लाल गिरिधर संग लाड़िली भामिनी ललित रसरति केलि चारु सोहे।
नव तमालहि मानो नवल पालति वेलि नव रंग विलास निधि आरोहे॥
कछुक मुसकात चमकत दसन झलमलानि जनु कहूँ मुक्तामणि हार पोहे
सुनि कृष्णदास अंग अंग वैभव सुमुखि सघन वृन्दाविपिन मार मोहे॥

२४

राधा रंग भरी नहिं बोलति।
मोहन मदन गोपाल लाल सों अपनो यौवन तोलति॥
चाहति मिलन प्राण प्यारे को, मेरो मन टकटोलति।
छाँड़हु बहुत चातुरी भामनि कह हम सों झकझोरति॥
प्रात होन लागो सुन सजनी अबहीं तमचर बोलति।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर प्रिय हित सारँगनैन सलोलति॥

२५

स्याम सिंधु अंग चन्दनादि गंध, पूजित पट पीत,
मदन लजावत सुभग तरंगिमा।
युवती सरिता अनंग सम्मिलित शोभा सीमन्त,
गुणगरिष्ट भाव भाव सिंधु संगिमा॥

वदन कमल अलक मधुप, नैन खंजरीट बीच,
अद्भुत तिलक कुसुम नाक भौंह अंगिमा ।
श्रवण श्रुति विमोहन चल, कुंडल तार्टक गंड,
मंडित मुस्कानि अधर रंग रंगिमा ॥
नख शिख भूषण अमोल, मनहर मादक सुबोल,
वैजयन्ती भूषित श्री उर उतंगिमा ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर सुरतिनाथ राधावर वेणु,
गान तान शब्द थुंग थुंगिमा ॥

२६

तेरे भाव से गोपाल प्यारी ! बोलत बन ।
चलहि मिलहिन राधिका नव-मत साजे शृंगार तन ॥
नव देही विद्युत लता नंद सुवन साँवल[1] घन ।
सोहहि किन कंठ लागि रति विलास उलसित मन ॥
नव निकुंज कूजत कल वेणु युवति ताप हरण ।
कृष्णदास प्रभु नटवर मोहन गिरिराज धरण ॥

२७

जैसे तू कहति तैसेई बने ।
मेरे जाने सखि लेहि सँभारि भामनी अपने धने ॥
सुरति-सुधा-निधि श्याम मृदुल रस यामे कैसे के सने ।
कृष्णदास प्रभु गोवर्धनधर गुण रसाल कौन गने ॥

---

१. पाठान्तर—साँवल ।

२८

गोपालें देखेहि किन आई री !

आजु बने गोविन्द नव कमल नैन तो को हौं लेन पठाई री ॥
तरणि-तनया पुलिन विमल[1] शरत निशि जुन्हाई री ।
राकापति कर रंजित द्रुमलता भूमि सुहाई री ॥
गोवर्धनधरण लाल गान सौं बोलाई री ।
कृष्णदास प्रभु को मिलनि युवतिन सुखदाई री ॥

२९

सुन्दर नँदनंदन जो हौं पाऊँ ।

अँग सँग[2] लागि मदन मनोहर या जाड़े को देश निकारो दिवाऊँ॥
मृगमद अगरु कपूर कुंकुमा मिलें अरगजा देह चढ़ाऊँ ।
त्रिविध सुगंध सुमन वै[3] सुनु सखि सघन निकुंज में सेज बिछाऊँ॥
राग रागिनी उरय सुलय सचें तान तरंग के मधुरे गाऊँ ।
कृष्णदास प्रभु गोवर्धन धर रँसिक शिरोमणि सुविधि रिझाऊँ ॥

३०

जिहिं फन्द पिउ वेगि मिले करहि किन सोई फंद ।
विरह-पीर-हरण रसिक सुन्दरि ! सुंदर गोविंद ॥
तू व्रज-सर की कुमुदनी हरि वृंदावन चंद ।
वचन-किरणि-विगत अमृत पीवहिं श्रुति पुट स्वच्छंद ॥

१. पाठान्तर—बिम्ब, २. अंग, ३. की, ४. उपज सुलय स्वर ।

तू करिणी वर ललना नंद सुवन मद गयंद ।
कृष्णदास प्रभु गिरधर रति सुख आनँद कंद ॥

३१

हरि मोहन की मोहन बानक ।
मोहन रूप मनोहर मूरति मोहन मोहि अचानक ॥
मोहन बरह चन्द्र शिर भूषण मोहन नैन सलोल ।
मोहन तिल भौंह मन मोहन, मोहन चारु कपोल ॥
मोहन श्रवण मनोहर कुंडल मधु मृदु मोहन बोल ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधरण मनोहर नखशिख प्रेम कलोल ।

३२

तरणि-तनया तट आवत ही प्रात समय
कंदुक खेलते देखो आनंद को कँदवा ।
नूपुर-पद क्वणित, पीतांबर कटि बांधे,
लाल उपरना शिरमोरनि को चँदवा ॥
पंकज-नैन सलोल, मधुर मोहन बोल,
गोकुलसुंदरि संग विनोद सुछँदवा ।
कृष्णदास प्रभु हरि गोवर्धनधारी
लाल चारु चितवनि तोरे कंचुकी के बँदवा ॥

३३

जो आवति सो करति लाड़िली हां री रसिक गोपालहि भावति ।
गुण की राशि ताल जाति[1] प्रमुदित राग विभासहि[2] गावति ॥
तान बंधान सप्त स्वर साँचे गति बहु भाँति मिलावति ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर नागर छैल छबीले सुविधि रिझावति ॥

३४

तेरे वदन की शोभा तोहि पै कहत बनें,
जो मुख जीभ होय लख कोटिक ।
चिबुक साँवल बिंदु छैल चतुर विधाता
देखें जिन कोउ दियो चखोड़ा टोटिक ॥
तिलक आधो ललाट छूटि उरज सुलट
शिथिल अंग अंग भासै[3] फोटिक ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधरण रसिक संग
सुरत हिंडोले प्यारी लिये निशि झोटिक ॥

३५

रंगीले नैना तेरे हों कब देखों गिरधरन ।
शरत मुख, सुंदर वर त्रिविध ताप हरण ॥

---

१. पाठान्तर—यत तालहि सम्मिलित. २. एक राग जो सवेरे के समय गाया जाता है। ३. भाव स्फोटिक।

श्याम श्वेत अनियारे भाव त्रिविध वरन ।
मीन कमल खंजन अलि मृग जु भए शरन ॥
श्रीराधा रसलंपट कुच सरोज चरन ।
गायक कृष्णदास हेतु मुरलि तान ढरन ॥

३६

भृकुटि धनुष युत नैन कुसम शर जिहि के लागत सो परिताने ।
सहजहि सुभग छबीली सोई गोवर्धन धर जाकी माने ॥
हाव भाव नव सुरति तरंगनि सव विधि कोक कला सोई जाने ।
कृष्णदास प्रभु युवति यूथपति करि लीन्हों तिहि अपनो लाने ॥

३७

इह मन कैसे के रहत रहत[1] राखो ।
जेहि मधुपति होई[2] गिरिधर प्रिय को वदन कमल रस चाखो ।
जो कछु मैं कीन्हों परवश हो साते ही[3] सत साखो ।
बार बार बहुविधि समझायो ऊँचो नीचो भाखो ॥
केहु न मानति महा हठीली कही तुम्हारी आखो ।
कहे कृष्णदास कहाँ लों वरणों पाँच चोर पिलि चाख्यो[4] ॥

३८

कंचन मनि मरकत रस ओपी ।
नंद सुवन के संगम सुख कर अधिक विराजति गोपी ॥

१. पाठान्तर—रहे । २. मधुव्रत हो । ३. इतनो ही । ४. काख्यो ।

मनहुँ विधाता गिरधर, पिय हित सुरत धुजा सुख रोपी।
वदन कांति कै सुनु री भामनि! सघन चंद श्री लोपी॥
प्राननाथ के चित्त चोरन को भौंह भुजंगम कोपी।
कृष्णदास स्वामी बस कीन्हें, प्रेम पुंज की चोपी॥

३९

आजु कछु देखियत है रागमगी काहे न सम्हारति छूटेई अलक।
अधरनि रंग कंचुकी बंद टूटे, नैन राते, आई आधेई तिलक॥
मरकत खंभ, बाहु नँद नंदन मिलि रही री हेय सलक।
रति रन रस जीन्यो काम छत्रपति ताही ते तेरे फूल किलक॥
मोहन लाल गोवर्धनधारी, वदन कोटि चंद पलक।
कृष्णदास स्वामी सो प्यारी लीन्हों ते सुरति रति हिंडोले झलक॥

४०

रंग रसिक नंदनंदन, रंग रसिक भामनी,
मृग नैनी कमल नैन नागर नागरी।
गिरिधर कल हंस हँसनी, मानो गोप तरुणि दोऊ,
सम तूल गुणन सागर सागरी॥
करत केलि बन विहार, निरखि कोट लजित नार,
गावत मिलि बदन चारु ललित राग री।
सुनत नाद, पिवत अधर सुधा स्वाद,
कृष्णदास बदत बाद सुफल भाग री॥

४१

जब तें श्याम शरन में पायो ।
तब तें भेंट भइ श्री वल्लभ निजपति नाम सुनायो ॥
और अविद्या छाँड़ि मलिन मति श्रुत पति सों दग दृढ़ायो।
कृष्णदास सब युग जन खोजत अब निश्चय मन आयो।

४२

कहाँ लों बरनों तेरे वदन की ज्योति झलक ऊपर वारों कोटि चंद
श्रवण पास ताटंक सोहत मानो रवि ससि जुगल परे मन फंद।
उपमा कहत न बने कमल की नाक शुक मोहित भौंह स्वच्छंद
खंजन भीत न तजत अलक अलि अति सोमन लंपट मकरंद।
कृष्णदास प्रभु गोवर्धन धर अब मिलै मैं देखे टूटे कंचुकि बंद
भिन्न सेत विहरत तू करनी अति नागर हरि मत्त गयन्द।

४३

सोभा बरनी न जाय री माइ जो मुख जीभ होय लख कोरी
नंदराय की अंगुरी लागे गिरधर पिय बलराम की जोरी।
बड़े भाग देखे नौ तन भई जेतिक कहुँ तेती तेंती थोरी
कृष्णदास बलि बलि चरनन की तन मन फूल गावे नाँचे होरी।

४४

कटितट सोहति हेमणि दाम।
पीत काछ पर अधिक विराजत न्याइ लजावत काम॥

कोहैं न मोहन को चित मोहति चपल कुटिल भ्रू बाम।
अनु छिनु रटत वेणु कल कूजित सुनि राधे तव नाम॥
तेरे नील पट ओढ़ि रसिकवर लेत दिवस के जाम।
कृष्णदास प्रभु गोवर्धन धर सुभग साँव अभिराम॥

४५

छलै छबीले लाल रँगीलो देखन किन कानन आई।
रूप निधान रसिक गिरिधर पिय हौं तोको लेन पठाई॥
सघन निकुंज नवल चित्रसारी विविध लता कुसुमनि छाई।
पिक अलि संग करत कोलाहल मलय पवन बहे सुखदाई॥
रति पति मृग बाँध्यो खेलन के कमल पत्र लै सेज बिछाई।
कृष्णदास प्रभु सुरत सुधा निधि जुवति सभा यह कीरति गाई॥

४६

ए तेरे तन लागी प्यारे अंग की ओप,
सो रंग सुनि सखि काहे को दुरावति।
अपने समान न गनति और को, जैसे तैसे हमरे तू नैन चुरावति॥
बोलनहार तुही जुवतनि महँ, मोसन को बातनि बौरावति।
घर के भेद न जानति नागरि मन की प्रीति आँखिनि समुझावति॥
मोहनलाल गोवर्धनधारी सों रहसि मिलि कोकिल सुर गावति।
कृष्णदास प्रभु नटवर नायक रसिक शिरोमणि सुविध रिझावति॥

४७

मेरे मन भावत मदन गोपाल ।
छैल मनोहर हेमलता जुवतिनि श्याम तमाल ॥
ए री शम्भु दग्ध मन्मथ को अनु छिनु अवहि करत प्रतिपाल ।
वृंदावन भुवि सुरत सुधानिधि कूजित वेणु रसाल ॥
कृष्णदास प्रभु रसिक शिरोमणि अंबुज नैन विसाल ।
नव भूषण कुच विच धरि राख्यो गोवर्धन लाल ॥

४८

अरुणोदय आवति है रसमसि सुमुखि ! उरसि वर लकचतु हार ।
पीत काछनी कटि तट बाँधे, तूहि भई मानो नन्दकुमार ॥
मोर चन्द्रिका मुकुट धरे सिर जुवति भाव को विगत विचार ।
पिय की मुरली अपने अधर धरे कर कूजति लोचन अनुसार ॥
तन मन रसिक लाल गिरधर मों देखति दह दिसि सुरत विहार ।
कृष्णदास प्रभु अपने रूप रस बस कियो सरवस दान उदार ॥

४९

पिय की प्रीति की फूल जमावति री ! तेरे नव लोचन चल ।
अरुणोदय सर सीरुह की श्री जीतन चाहत तरुण तेज बल ॥
मिटत नहीं अभ्यास अधर को सुरत सजे को जी सुकंठ कल ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर संगम भीजे उरज विमल सुख श्रम जल ॥

५०

तेरे उर सोहत सुनि सुंदरि पिय संगम की श्रम जल बूँद।
कुचन उपर मंजरी विराजत मनहु अमृत घट दीनी रति मूँद॥
मुख जँभात जीतति अंबुज बन मोहति रसिक दसन कलि कुंद।
कृष्णदास प्रभु गिरिधरि रस भरि बस कियो मदन डगत पग खुंद॥

५१

हरि भजु भामिनी सुभग सयानी।
शरद काल की घटा सदृश तू कत गरजति अलसानी॥
हौं पठइ नव-रंग-रायपति सींच अमृत मधु बानी।
विरह अनल सशंकित प्रीतम रसिक राय सुख दानी॥
दूत धर्म अति निपुन दूतिका सरल सुभावहि आनी।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर पिय को रचकि कंठ लपटानी॥

५२

तेरे चरण की हौं शरण।
राखो राखो दयाल मूरति रसिक गिरिवर धरण॥
काम क्रोधज दाव दाह्यो कुविधि लाग्यो शरण।
कृपा दृष्टि जिवाउन घनस्याम अंबुज चरण॥
निरखि नख मणि ज्योति वैभव मुदित अन्तः करण।
कृष्णदासनि तेरोई बल विरह जलनिधि तरण॥

५३

अधर चन्द्र तिलक श्रीराधे के (कुं) कुम को, ता महँ मृग मदरस बिंदु।
मानहु स्याम लागि रह्यो श्याम सुन्दर को चिबुक मोहन श्याम बिंदु॥
सखिन ते दुराउ करत पोंछत बिच कुच जुग मंह श्रम जल बिंदु।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर जानी रीझि दियो चुम्बन सोहत पीक बिंदु॥

५४

देख री नैननि गिरिवर धर।
सहचरि कहति द्वितीय सहचरि सों प्रेम मुदित प्यारी राधावर॥
भूषण भूषित अंग मनोहर, वसन मनोहर कनक कांति हर।
चितवन हरत विस्व युवतिन के सर्वस देत उदार कमल कर॥
उपमा कहा कहौं को लायक बरनों कहा किशोर वेश वर।
सुरत अंत लटकत व्रज आवत कृष्णदास बड़ भाग कलपतर॥

५५

एकही हाथ टेके ठाढ़ी दधि मथनियाँ शीश लिये।
झगरति झर बातें कहति ढीठ भई दूजो कर हरि मुख निपट निकट किये॥
चलति फिरि चलति जाति नाही चलि जानत सतर भौंह किये।
कृष्णदास प्रभु तन झुकि परसति नैन और बैन और हिये॥

५६

चली जाति उत गेह को मुरि मुरि हरि देखति इत।
कबहुँ के यहि मिस ठाढ़ी ह्वै लावण्यहि सुधारति,
कबहुँ ओढ़ति आँचरु बनाय, बनाय द्विग जित तित॥

झूटेई सोच सोचि सोचि रहति, पुनि डगरति फिरि डगरति,
पुनि डगरति, अटपटाति कछु भूली सी भ्रमित चित।
कृष्णदास प्रभु के रूप गुण मन अरुझ्यो,
तातें सुरझि न सकति, सकति अकति हित ॥

५७

श्री वृषभानु-नन्दनी नाचत गिरधर संग,
लाग डाट उरपति रसरास संग राखौ।
झपताल मिल्यौ राग केदारौ,
सप्त सुरन अब घर तान रंग राख्यौ ॥
पाई सुख सिद्धि भरत काम विविध रिद्धि,
अभिनव दल लसत सुहाग हुलास रंग राख्यौ।
वनिता सत जून्य संग लिये निरखत क्यों सघर्स,
चंद बलिहारी कृष्णदास सुधरे रंग राखौ ॥

५८

आवत बने कान्ह गोप बालक संग।
नेंचुकी खुर रेणु छुरतुँ अलकावली ॥
भौहैं मनमथ छाप वक्र लोचन बान।
सीस सोभित मत्त मयूर चंद्रावली ॥

पा०—१. सघन २. सुघर पद ५२ : देखो अ० छ० पृ० २०० । ३. ~

उदित उडुराज सुन्दर सिरोमणि वदन।
निरखि फूली नवल जुवती कुमुदावली ॥
अरुण सकुच अधर बिंबफल हसात।
कहत कछुक प्रकटित होत कुंद रसनावली ॥

५९

श्रवण कुंडल भाल तिलक बेसरि नाक।
कंठ कौस्तुभ मणि सुभग त्रिवलावली ॥
रत्न हाटक खचित पुरसि पदिक निपाति।
बीच राजत सुभ पुलक मुक्तावली ॥
†विलय कंकण बाजूबंद आजानुभुज।
मुद्रिका कर दल विराजत नखावली ॥
कर्ण तर मुरलिका मोहित अखल विश्व।
गोपिका जनमासि ग्रसयित प्रेमावली ॥
कटि छुद्र घंटिका जटित हीरामयी।
नाभि अम्बुज वलित भृगरोमावली ॥
धायक बहुक चलत भक्त हित जानि पिय।
गंड मंडल रुचिर श्रमजल कणावली ॥
पीत को सम परिधानें सुन्दर अंग चरण।
नुपुर वाद्य गीत सबदावली ।
हृदय कृष्णदास गिरवर धरण लाल की।
चरण नख चन्द्रिका हरति तिमरावली ॥

---

† देखो अ० छा० पृ० २८.

खंडिता-पद

१

नव कंज नैन रति रंग रंगे।
प्रिया प्रेम वली, रस रास रसमसे आलस बस माधुरी अंग अंगे[1]।
रूप यौवन चपलता गुणन आगरे मधुप खंजन मीन मान भंगे।
कहे कृष्णदास कामिनि उरसि मध्यगति,
गिरिधरण सुखद प्रतिबिंब संगे।

२

प्रातकाल प्यारे लाल आवनी बनी
उरसि मरगजि सुमाल डगमगी सुदेश चाल,
चरण खूँदि मदन जीति करत होमनी।
प्रिया प्रेम अंग राग सगबगी सुरंग पाग,
गलित वरूठ चूड़ श्रम वारि कण सनी।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर कंठ सुरत पत्र लिख्यो,
करज लेखनी। सुनि पुलि राधिका गुनी।

पा०—१ प्रिया प्रेमवली, रास रस वश अलस वर माधुरी अंग अंगे

३

आजु नीके बने नंद नंदा
मदनइंदु की ज्योति निरखि नभ,
चंद्र (मा) क्षार अम्बुधि परत सघन चंदा।
श्रम स्वेद कण गात लाल गिरिधरण,
सुख देत मलयज सुपौन मंदा।
कृष्णदासनि नाथ डगमगत पग चलत,
मानों कुंजर गूँथ्यो प्रेम फंदा।

४

आवत लाल गोवर्धन धारी।
आलस नैन सरस रस रंगित प्रिया प्रेम नूतन अनुहारी॥
विलुलित माल मरगजी उर पर सुरति समर की लगी पराग।
चुम्बन श्याम अधर रस गावत सुरति भाव सुख भैरव राग॥
पलटि पर्दे पट नील सखी के रस में झीलत मदन तड़ाग।
वृन्दावन बीथिनि अवलोकत कृष्णदास लोचन बड़भाग॥

५

प्रात भये आए लाल छाँड़हु अटपटी।
आजु की रैनि मोहि नक्षत्र गिनत गई,
मारग जोवत आँखि न लगी चटपटी॥

पा०—१ कर जो

उर नख पद वर सुनु गिरिवरधर,
गलित वरूहा चूड़ा पाग बनी लटपटी।
कृष्णदास प्रभु जानत रनित दाम निशान,
मदन नृपति रण लीनी मानो झटपटी॥

६

बलि बलि जाऊँ रसिक गिरिधर प्रिय,
नीके आए प्रात तमचुर के बोले।
इतो संकोच कौन कहो[1] मानत,
अधिक लजाये रहे बिन बोले॥
सन्ध्या बदे बोल सांचे किये अनत बसे[2],
मैं जानो करि है यहाँ रहि जौंले।
कृष्णदास प्रभु ऐसी कौन तोसों कहि सके,
त्रिजग माँह[3] त्रिभुवन तक तोले॥

७

अरुण उनींदे आए हो रसमसे निशि के चिन्ह पिय कहां दुराये।
नख पद प्राण प्यारी के मोहन कान्ति न छिपत छिपाये॥
कुंकुम रंजित उर वनमाला विलुलित मुख मधुर जँभाये[4]।
गिरिधर नव केलि कला रस प्रमुदित कृष्णदास अलि गाये॥

पा०—१ कोहो, को २ अनतसि ३ मों ४ जनाये।

८

आज सिगरी निश कहां जागे लाल !
कहो जु साँची सुभग साँवरे माधो ।
घोष मंथन शब्द प्राणपति गृह गृह,
रह्यो मोहन स्वर अकट भयो आधो ॥
कमल विकसित भये चक्रवाकी हंसी,
सुमुखि पुलकित मुदित निज पति आराधो ।
विश्व मोहन वदन निरखि नभ चन्द्रमा,
सगण लज्जित भयो प्रेम गुण बाधो ॥
ललित सुन्दर राग चर्चरी ताल धरि,
मधुप गावत सुयश पिक निकर साधो ।
कहे कृष्णदास गोवर्धन उद्धरण धीर,
प्रिय सुन्दरी कृपण धन लाधो ॥

९

भली कीन्ही लाल गिरिधर भोर आए बोल साँचे ।
युवति-बल्लभ विरध कहियत मोहि सों सब सुविध बाँचे ॥
ताही पै जु सिधारिये पिय जाहि के तुम रंग राचे ।
यहां लौं केहि सिख पठये मानहु मंत्री मते काचे ॥
अध सूचत स्वास स्थिर नहीं निशि प्रिया रति बन्ध पाचे ।
सुनहि किन कृष्णदास नागरि ज्यों नचाए त्यों ही नाचे ॥

१०

अधिक नीके लागत रगमगे लाल आधी आधी बतियाँ कहत मेरे प्यारे।
खेलत प्राण प्यारी सों मोहन निशि जागे नयना रतनारे ॥
मरगज्यो मृगमद तिलक माथे पर कछुक जँभात अधर मसि कारे।
श्रम जल कण कपोल मंडल वर[1] सिन्दुर रंगराते भौंह अनियारे ॥
अभरण वसन पलटि पहरे अंग नूपुर क्वणित चरण सौंह भारे।
सुनि कृष्णदास रसिक गिरिधर पीय गए हों नेक करहुँ न न्यारे ॥

११

आवत बने सुन्दर नंदनंदन लपटी पाग डगमगति चाल।
अरुण कपोल अधर मसिकारे चपल नैन असरौंधे लाल ॥
रति जय लेख लिखि उर पद नख जीत्यो मदन गोपाल वन अलिमाल।
तजि न सकत सौरभ रस लंपट कुच कुंकम रंजित वनमाल।
पलटि परे पट कहहु कहाँ ते शिथिलग्रंथि कटि किंकिणि जाल।
छूटे चन्द स्वेद कनिका तन काहे लजात विरह रिपुसाल ॥
कृष्णदास प्रभु किवव दुरत हो मृगमद तिलक मरगजी माल।
मोहन लाल गोवर्धनधारी प्रकट भयो प्रिय सुयश विशाल ॥

१२

अरुण उदय सुरत केलि रत लाल,
नीकी बनी नव निकुंज तें आवनी।
मनमारु रस मत्त संग अलि मंडली,
तासों मिले श्री मुखहिं सरस गावनी ॥

---

१ पर

चरण नूपुर दीप्ति कटि छुटि क्षुद्रघंटिका,
मधुर मुखरित नील पट पर सुहावनी।
रगमगी ओढ़नी प्राणप्यारी की सुरत,
अभिराम तन देह बिसरावनी ॥
काम जयपत्र उरसि कामनी लिख्यो,
नख अंक पाँति रसिकनि हृदय भावनी।
शिथिल अलकावली गलित विरहा पीड़,
अरुण लोचन भौंह मन्मथ नचावनी ॥
श्रम स्वेद कण गात लाल गिरिधर के,
निशि कथा सुमिरि मन रुचिर मुसकावनी।
मदन रस रहसि गाइके कृष्णदास,
कहाँ आपने पीत पट दिये पहरावनी ॥

१३

काहे को दुरावत अपुनी केलि जाने हो हरि प्रियतम नागर।
मोहि दिखावहु बाँचि सुनावहु प्यारी करज अंक उर कागर॥
निशि की बातें सबै प्रगट भईं कत लजात हो कौतुक सागर।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर चंचल युवति तापहर सुयश उजागर॥

१४

सन्ध्या बंद बोल मन मोहन प्रात आइ कीन्हें सब साँच।
तन मन उन्हें अभासत प्रीतम काहे को लाल! करत हो छ-पाँच॥

यह तो बिथा सो जाने गिरिधर जाके लगी बिरह की आँच ।
सुनि कृष्णदास जाऊँ बलि ताकी जिन लीन्हें सरबस दै जाँच[1] ॥

१५

बने हो रसमसे आए प्रात
आलस भरे बदन की शोभा निरखि लजित जलजात ॥
सन्ध्या बदे बोल किये सांचे काहे को लाल लजात ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर चितवत युवति-मृगी तकि घात ॥

१६

बने हो रसमसे आए प्रात
प्यारी नख पद रत्नावलि रस रंजित नव रंग गात ॥
नख रेखा मोहनि युवतिन मन प्रमुदित पुलक जँभात ।
कृष्णदास गिरिधर चित चंचल ज्यों तरवर को पात ॥

१७

कौन के भोराये भोर आए हो भवन मेरे,
ऊँची दृष्टि क्यों न करो कौन ते लजाने हो ।
जाही के भवन भाये ताहि के धारिये पाँव,
काहे ऐसी चाउ पड़ी कौन गहराने हो ।
भोरी भोरी बतियन भोरवन लोग मोहि,
श्री गिरिधारी तुम अति ही ५

१. लाँच (पा०)

कृष्णदास प्रभु छोड़ो अटपटी रहे हो लाल,
आज हों तुम्हें देखि नीके पहिचाने हो।

१८

कहो तुम साँची कहाँ ते जु आये भोर भये नंदलाल।
पीक कपोलनि लागि रही है घूमत नैन विसाल॥
लटपटि पागि अटपटी बंदसि उरसि मरगजी माल।
कृष्णदास प्रभु रसवस कर लीनो धन्य वहै व्रजबाल॥

१९

तुम सों बोलिबे की नाहीं॥
घर घर गमन करत गिरिधर पिय चित नाँहीं एक ठाहीं॥
कहा कहूँ सुन्दर घन तुम सों जो होत मनमाहीं।
कृष्णदास प्यारी के वचन सुनि हृदय माँझ मुसकाहीं॥

२०

प्यारी तेरे नैन रंग मगे निस पिय संग जागे।
अरुन वरुन शोभत आलस भरे अति रति रति रस पागे॥
पलक पीक भौंहें रमि रही आली मानो कमल परागे।
कृष्णदास गिरिधरन पीय सँग हँसि हँसि हँसि मुख लागे।

२१

आवत लाल गोवर्धन धारे डगमगी चाल लटपटी पाग ।
आलस नैन रस रँग रंजित प्रिया प्रेम नव नव अनुराग ।
विलुलित माल मगरजी उर पर सुरत समर की लगी पराग ।
चुंबन स्याम अधर कल गावत रति सुख भाव विलावल राग ॥
पलटि परे पटनील सखी के रस गह झीलत मदन तड़ाग ।
वृंदावन वीथिनि अवलोकत कृष्णदास लोचन बड़भाग ॥

२२

कहाँ अब दुरत पिय जानि शिरोमणि रतिके चिन्ह देखियत हैं न्यारे
अरुण नैन घूमत आलस यह कछुक जँभात अधर मसि कारे ।
स्याम अंग नख नख पद न्यारे चंदन छीट बने मनो तारे ।
अवर अनेक कहाँ लौं वरनों यह नागर तो जु आए सवारे ॥
मोहन लाल गोवर्धन धारी कटि तटि नील वसन बने प्यारे ॥
कृष्णदास कहहु धौं पीतम चतुर पीत पट कहाँ बिसारे ॥

२३

दया कीनो बलवीर आये तमचुर के बोल ।
नागर नंदलाल कुँवर पहिरे नील निचोल ॥
मोहन रगमगे अलसात कमल नयन अति सलोल ।
अधरन नख देख घनी अरुण स्याम कपोल ॥

मृगमद को तिलक रच्यो सिंदुर के झोल ।
ऊपर नख चिह्न रतन क्यों दुरत अमोल ॥
कृष्णदास प्रभु गिरिधर मांगत मन ओल ।
अपनो पीतांबर दै लियो मदन मोल ॥

२४

मोहन कुंद दाम उर पर कुच कुंकुम रंजित बनी ।
गंध लुब्ध अलि पाँति न तजत केलि-धन-धनी ॥
मोहय (?) अधर श्याम सुख जँभानि संगम स्वास. सनी ।
अवर चिह्न अगनित पिय न गनो गणना गनी ॥
कृष्णदास प्रभु नव रँग युवतिनि चिंतामनी ।
गोवर्धनधारी रसिकनि चूड़ामनी ॥

२५

लाल तेरे चपल नैन अनियारे ।
: कुमार सुरत - रसभीने प्रेम रंग रतनारे ॥
ऽ अस रीझे चकित चहूँ दिसि नव वर जोवन तारे ।
नो शरद कमल पर खंजन मधुप अलक घुँघरारे ॥
जू मीन घनश्याम सिंधु में विलसत लेत झुलारे ।
वर्धनधर जान मुकुटमणि कृष्णदास प्रभु प्यारे ॥

२६

सोइ भली जिन तुम विरमाये ।
पूजा करि भामिनी सब निशि तब पद उर नख कुसुम चढ़ाये ॥
अरुण दिसा अबहिं नहिं देखो रटत मधुप कमलनि समुदाये ।
रूप निधान रसिक नँदनंदन कब तस को न सवारे आये ॥
सँध्या बदे बोल मनमोहन कीनों भली ओर अबराये ।
आलस नैन जँभात अधर चर रति के चिह्न नहिं दुरत दुराये ॥
अपने पीत पट दिए सखी को छीन लये नील वसन पराये ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधरधर पिय युवतिन सदसि उदार कहाये ॥

२७

ांग मरगजी तिलक आधो,
अधरनि रंग आई सगवगाति ।
चपल नैन आलसहि जनावत,
भौंह भुजंगनि लसलसाति ॥
नान के सुंखल खूटे, चोली के बंद टूटे,
वदन की ज्योति कछु औरहि भाँति ।
कुच नख रेख बनी किलकत काम तनी,
मानहु कनक घट मानिक कांति ॥
पलटि, परे पट, कहहु कहां ते,
बोलत बोल कछु अठपटाति

केस कुसुम ससि पद नख पूजत,
चलत मधुर गति डगमगाति ॥
सुरत समर जीत्यो मदन नृपति ते,
ताही ते अधिक फूली अंग न समाति ।
कृष्णदास स्वामी लाल गोवर्धन धारी,
संग रति विलास सुख भले बीति राति ॥

९७

आई रति रण जीते भामिनी बाँधी काछ कटि तट पर फेटक ।
रिझयो सकल कला गुण नागर कछु तेरे नैननि मह चेटक ।
भले नछत्र भले गुणनि में सखि कमल नैन सों ते बदे सहेटक ।
ऐसी कही अबहिं आवति हों आपुन चलो जहाँ बस हेटक ॥
डगमग चरण धरत धरती तल गज मद त्रसत निरखि गति लटक ।

फुटकर पद

१

आवे माई व्रज ललना-उर-विमोचन !
गौ-धन संग कुणित कर मुरली शरद कमल-दल लोचन ॥
दुरव आगे आगे धेनु पाछे नंदनंदन कर कमल फिरावे।
मोर मुकुट वैजयन्ती माला कुंडल झलकत आवे ॥
कटि तट लाल काछनी काछे ओढे पीत पिछौरी।
आपुन हँसत हँसावत ग्वालन राग अलापत गौरी ॥
तुलसी-पत्र पुष्प की माला गूँथ गोपन को पहिरावे।
बाल गोपाल नंद जू के ढोटा मधुरी वेणु बजावे ॥
बरपत कुसुम देव मुनि हरषति मोही व्रज की नारी।
'कृष्णदास' प्रभु रसिक मुकटमणि लाल गोवर्धन धारी ॥

२

बाल दसा गोपाल की सब काहू प्यारी
लै लै गोद खिलावहीं यशुमति महतारी ॥
पीत झगुलि तन सोहहीं सिर कुलह विराजे।
छुद्र घंटिका कटि बनी पायन नूपुर बाजे ॥
मुरि मुरि नाचे मोर ज्यों सुर नर मुनि मोहे।
'कृष्णदास' प्रभु नंद के आँगन सोहे ॥

३

धनि धनि माता तू तुलसी बडी ।
नारायण ले माथे चढ़ी ॥
जे कोउ तुलसी की सेवा करे, काटि पाप छिन में परिहरे ॥
जे कोउ तुलसी को फेरी देत, सहजे जनम सफल करि लेत ॥
दान पुण्य में तुलसी होय, कोटिक फल पावे नर सोय ॥
जो घर तुलसी करत निवास, सो घर सदा कृष्ण को वास ॥
'कृष्णदास' कहे वारंवार, तुलसी की महिमा अपरम्पार ॥

४

चतुर चारु चन्द्रावली मुख चकोरे ।
अस्तु में चरण रति व्रज युवति भूषणी कमल लोचन नंद नृप किशोरे ॥
मानि मेरो कह्यो अति सील रस रीति क्यों करावति सखी वहु निहोरे।
मिले किनि धाई अब कुँवर चूडा रत्न रसिकवर भूपाल चित्त चोरे ॥
नव रंग कुंज मँह तव नाम हित नाथ कुणित कल मुरलिया ठाठ मोरे।
सुनि'कृष्णदास' शुभ लग्न वह धन्य घरी लाल गिरिधरण सों हाथ जोरे॥

५

बोलत कोक कला निधान ।
मम वचन सुनि उठि चलहि सखि छाँडि सुन्दरि मान ॥
तव नाम सहित निकुंज मँह प्रिय करत मुरली गान ।
केलि कौतुक रसिकनी तिय सुनहि दे किनि कान ॥

शेष रजनी खसत उडुपति जनु कि भयो विहान।
'कृष्णदास' प्रभु गिरिधरण पर वारिहौं तन प्रान॥

६

तेरे चपल नैन युग खंजन तें नीके।
ताप हरन अति विदित विस्व मँह देखत सत दल लागत फीके॥
स्याम स्वेत रति अनियारे गिरधर कुँवर रिसद सुख जीके।
सुनि 'कृष्णदास' सुरत कौतुक वस प्यारी दुलरावति अपने पी के॥

७

राग रंगनि[1] मिलवत नई, नाचत व्रज ललना ततु थेई।
मुखरित कटितट मणि मेखला, अभिनवजति[2] चंचल करतला॥
नूपुर संचित मोहित जना लेति उरग[3] गति प्रमुदित-मना।
कृष्णदास' प्रभु दे अँकवारी, रिझिए लाल गोवर्धन धारी॥

८

नीको मोहि लागे गिरधर गावे।
तत् थेई तत् थेई भैरव राग मिलि मुरलिका वजावे॥
नाचत नृप वृषभानु-नंदिनी औघर गति रंग उपजावे।
नूपुर रणित मुखर मणि कंकण सखी यूथ सुख राशि बढ़ावे॥
सुरति देत मधुमत्त मधुप-कुल एक ताली सब के मन भावे।
सुरति सिंधु प्यारी पिय पद रज 'कृष्णदास' न्योछावरि पावे॥

पा०—१. रंकनिधि. २. अभिनव यत्. ३. उरप.

९

नृतत गोपाल संग राधिका बनी।
बाहु दंड भुजन मेलि, मंडल मधि करत केलि,
सरस गान स्याम घरें संग भामिनी।
मोर मुकुट कुंडल छवि काछनी बनी विचित्र,
झलकत उर हार विमल थकित चाँदनी
परम मुदित सुर नर मुनि बरषत सब कुसुम अति,
वारति तन मन प्राण कृष्णदास स्वामिनी।

१०

डगमग चलती और ही भाँती।
नव निकुंज ते राधा भामिनी अरुण उदय घर जाती॥
रति की केलि सुमिरि मृग-नैनी बार बार मुसकाती।
बदन जोति में सुन री भामिनी मेटत उड़पति कांती॥
नख के चिन्ह प्रगट देखियत हैं काम केलि कुल कांती।
प्रियतम प्राण रतन संपुट कुच भेंटि जो गई छाती॥
नंद कुमार सुरति संग लीन्हें शरत् विमल की राती।
'कृष्णदास' गिरिधर पिय के संग अधर सुधारस माती॥

११

हरि अनुभवति युवति बड़भागी।
राधा रसिक नंदनंदन के सुखनिधि चरण कमल अनुरागी।

कोक कला संगीत निपुण सखि पिय संगम रति रस निसि जागी ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर पिय मुख देखत नैन टकटकी[1] लागी ॥

१२

गाऊँ रसिक नट भूपाल गुण अनन्त न पार,
कमल नैन प्रिय यशोदा दुलारु ।
प्रकट पुरुष सार, पृथ्वीतल हरे भार,
जानत महिमा जाके उर उरग हारु ।
राम कली एक तार, नाचे अमोघ विहार,
कालिन्दी पुलन सखी लोचन निहारे ॥
उत्तम भूषण धार, तन लोपि घन सार,
वृन्दावन चन्द्र चहुँ दिशि उजियारे ॥
मोहन नंदकुमार, अंग अंग सुकुमार,
गिरिवर धर यश त्रिलोक विस्तारे ।
उभय कर उदार, व्रज भामिनी शृंगार,
'कृष्णदास' प्रभु हरि सर्वस्व दातारे ॥

१३

रास रस गोविन्द करत विहार ।
सूर-सुता के पुलिन रम्य मँह फूले कुंद मँदार ॥

पा० १ देखत ते नटनी लागी.

अद्भुत शतदल विकसित कोमल मुकुलित कुमुद कल्हार[1]
मलय पौन बहे शरद पूरण चन्द्र मधुप झंकार।
सुवर राय संगीत कला-निधि मोहन नंद कुमार
व्रजभामिनी संग प्रमुदित नाचत तन चर्चित घनसार।
उभय स्वरूप शुभगता सीमा कोक-कला सुख सार
'कृष्णदास' स्वामी गिरिधर प्रिय पहरे रस में[3] हार।

१४

गोविन्द करत मोहन गान।
सप्त सुर गति भेद मिलवत वेणु सुरति बँधान॥
तरणिजा कर लहर विचरित पुलिन केलि बँधान।
शरद रजनी विपल उडुपति मलय पौन सुठान॥
राग वारि समुद्र तांडव लास्य[4] कला निधान।
व्रज वधू संग मुदित नाचत लेत अवघर[5] तान॥
वशी कृत गण सिद्ध सुरगण थकित व्योम विमान॥
'कृष्णदास' विलास रस गिरिधरण सब गुण जान॥

---

१. पा० कछार. २. सुघराई. ३. रसमय. ४. नाटय. ५. अवधर.

१५

खँजरीट मोहे, अलि कुल मोहे, अंबुज दल मोहे नयननि।
शौभ-गता मृग शावक मोहे, मीन मोहे जल सैननि॥
मुक्ता मोहे मरकत मोहे विद्रुम मोहे रस ऐननि।
प्रताप बल उडुराज मोहे, नटवर मोहे गति नयननि॥
आलस ललित वलित भुव पल्लव, वल्लभ पति सुत युत चैननि॥
बलि 'कृष्णदास' आश परिपूरण गिरधर मोहे सह मैननि॥

यमुना-वर्णन

१

ऐसी कीजे कृपा लीजिये नाम ।

यमुना जगवंदनी गुणन जात योगिनी

जिनके ऐसे धनी सुन्दर श्याम ॥

देत संभोग रस ऐसे प्रिय हैं जो वश सुनत

सुयश तिहारो पूरे सब काम ।

'कृष्णदासनि' कहे भक्त के कारणे

यमुने एक छन नहीं करे विश्राम ॥

२

नमो तरणि-तनया परम पुनीत जग पावनी

कृष्ण मनभावनी रुचिर नामा ।

अखिल सुखदायिनी सर्व सिद्धि हेतु

श्री राधिका-रमण रति करण श्यामा ॥

विमल यश सुमन नव कानना मोद युत

पुलित अति रम्य प्रिय व्रज किशोरी ।

गोप गोपी नवल प्रेम रति वंदिता

तट मुदित रहत जैसे चकोरी ॥

लालहरि भांवरि ललित वालुका[1] शुभग
ब्रज बाल ब्रत पूरणा रास फलदा।
ललित गिरिवर धरण प्रिय कलिंद नंदिनी
निकट 'कृष्णदास' विहरत अबलदा॥

३

यमुने तुम सी एक हो जो तुम ही।
करि कृपा दर्श निसि वासर दीजिये,
तिहारे गुण गान को रहे उद्यम ही॥
तुम जु पाये ते सकल निधि पावहीं
चरण कमल चित भ्रमर भ्रमही।
'कृष्णदासनि' कहे कौन यह तप कियों
तिहारे ढिग रहती है लता द्रुम ही॥

४

यमुना के नाम अघ दूर भाजे।
जिन के गुण सुनि के लाल गिरिधरण
प्रिय आय सम्मुख ताके विराजे॥
तेहि क्षण काज ताके जो सगरे सरत
जाइके मिलत ब्रजवधू समाजे।
'कृष्णदासनि' कहे ताहि अब कौन डर
जाके सिर यमुना जी गाजे[2] ॥११७॥

१. पाठ०—सालुका। २. सिगाजे।

५

यमुना के नाम तेई जो ले हैं।
जिन की लगन लागी नंदलाल सों
सर्वस्व देके निकट रहैं॥
जिनहि सुगम जानि बात मन में
मानि बिना पहिचानि कैसे जो पै हैं।
'कृष्णदासनि' यमुना नाम नौका भक्त
भव-सिंधु ते यों जो तरे हैं॥

गुरु सम्बन्धी पद

१

श्री विट्ठल जू के चरण की बलि।
हमसे पतित उधारन कारन परम कृपाल आपै आपन चलि ॥
उज्ज्वल अरुण दया रंग रंजित दश नख चंद्र विहरत मन निरदलि।
सुभगकर सुखकर शोभन पावन भक्ति मुदित ललित कर अंजलि ॥
अति सेमर दुलि सुगंध सुशीतल परत त्रिविध ताप डारत मल।
भजि 'कृष्णदास' वार एक सुधि करि तेरौ कहा करेगौ रिपुकल ॥

२

ताही कौं सिर नाइयै जौ श्री वल्लभसुत पदरज रति होय।
बीजै कहा आन ऊचे पद तिन सों कहा सगाई मोय ॥
सार सार विचार मतौ करि श्रुति वचन[1] गोधन लियो निचोय।
तहाँ नवनीत प्रगट पुरुषोत्तम सहजई गोरस लियो विलोय ॥

नोट पद १—बंदीखाने से छूटने पर और ठकुरानी घाट पर गोसाईं से भेंट होने पर कृष्णदास ने उनसे क्षमा माँगी और यह गाया।

नोट पद २—इस पर गोसाईं जी इन्हें घर ले आए और भोजन को कहा। जब भोजन करने बैठे थे। उस समय यह पद गाया।

१. पा० वच।

जाके मन में उग्र भरम है श्री विट्ठल श्री गिरधर दोय।
ताकौ संग विषम विषहू ते भूलिहू चातुर कर है जिन कोय॥
जिन प्रताप देखि अपने चख असन सार जोयिदेन तोहि।
'कृष्णदास' ते सुरते असुर भये असुर ते सुर भये चरणनछोह॥

३

परम कृपाल श्री वल्लभनंदन, करत कृपा निज हाथ दे माथै।
जे जन शरण आये अनुसरही गहि सों पति श्री गोवर्धन नाथै।
परम उदार चतुर चिंतामणि राखत भव धरा ते साथै।
भजि 'कृष्णदास' काज सब सरहीं जो जानें श्री विट्ठल नाथैं।

४

कमल मुख देखत कौन अघाय।
सुन री सखी! लोचन अलि मेरे मुदित रहे अरुझाय॥
मुक्तामाल लाल उर ऊपर जनु फूली वन जाय।
गोवर्धन अंग अंग पर 'कृष्णदास' बलि जाय॥

नोट पद ३—जब गोसाईं जी ने कृष्णदास को अधिकार दिया तब श्रीनाथ जी के सम्मुख यह पद गाया। अ० छ० पृ० ३८, ३६.

१. छोहि। २. धारा।

परमानन्ददास-पदावली

समुदाय पद

१

मंगल माधो नाम उचार।
मंगल वदन कमल कर मंगल मंगल जनहि सदा संभार ॥
देखत मंगल पूजत मंगल गावत मंगल चरित उदार।
मंगल श्रवण कथा रस मंगल मंगल तन वसुदेव कुमार ॥
गोकुल मंगल मधुवन मंगल मंगल रुचि वृन्दावन चन्द।
मंगल करन गोवर्धन-धारी मंगल भेष यशोदानन्द ॥
मंगल धेनु रेनु भुव मंगल मंगल मधुर बजावत वेनु।
मंगल गोपवधू परिरंभन मंगल कालिन्दी मय फेनु ॥
मंगल चरण कमल मणि मंगल कीरति जगत निवास।
अनु दिन मंगल ध्यान धरत मुनि मंगल पति 'परमानन्ददास' ॥

२

बड़ी है कमलापति की ओट ।
शरण गए ते पकरी न आये कियो कृपा को कोट ॥
जाकी सभा एक रस बैठत कौन बड़ो को छोट ।
सुमिरि नाम अघे भव भंजन कहा पंडित कहा बोट ॥
जदपि काल बली अति समरथ नाहि न ताकी चोट ।
'परमानन्द' प्रभु पारस परस ते कनक लोह नही खोट ॥

३

जापर कमला-कान्त ढरे ।
लकरी घास को बेचनहारो ता शिर छत्र धरे ॥
विद्यानाथ अविद्या समरथ जो कुछ चाहै सो करे ।
रीते भरे, भरे फिर ढोरे, जो चाहे तो फेरि भरे ॥
सिद्ध पुरुष अविनाशी समरथ काहू तें न डरे ।
'परमानन्द' देह मन सँपति यातें कछु न टरे ॥

४

मेरो माई हरि नागर सों नेह ।
एक बेर कैसे छूटत है पूरब बढ्यो सनेह ॥
अंग अंग निपुण बन्यो नन्दनन्दन श्याम बरण तन देह ।
जब ते दृष्टि परे यदुनन्दन तब ते विसरयो गेह ॥

कोऊ नीदो कोऊ बन्दो, मन को गयो सनेह।
सरिता सिंधु मिले 'परमानन्द' भयो एक रस नेह ॥

५

जित देखूँ तित कृष्ण मनोहर दूजो द्रष्ट ना परे री।
चित सुहावनि छवि अति सुन्दर रोम रोम रस ही भरे री ॥
शिव विरञ्च जहां ढूँढ़त फिरे, सो मन मेरे अरे री।
निश दिन राची गुण गोविंद के, और उपाय न करे री ॥
जा कारन अटकी फिरी जग में, पायो निज घर मेरे री।
परमानन्द लह्यो सुख दर्शन चित कारज सब ही सरे री ॥

६

जइये वह देश जहाँ नन्दनन्दन भेटिये।
निरखिये मुख कमल कान्ति विरह ताप मेटिये ॥
सुन्दर मुख रूप सुधा लोचन पुट पीजिये।
लम्पट लव निमिष रहित अंचय अंचय जीजिये ॥
नख शिख मृदु अंग अंग कोमल कर परसिये।
अरु अनन्य भाव सो भजि मन क्रम वच सरसिये ॥
रास हास भ्रुव विलास लीला सुख पाइये।
भक्तन के यूथ सहित रसनिधि अवगाहिये ॥

इह अभिलाप अन्तरगत प्राणनाथ पूरि
सागर करुणा उदार त्रिविध ताप चूरियें ॥
छिन छिन[1] पल कोटि कल्प बीतत अति भारी ।
'परमानन्द' कल्प तरु दीनन दुख हारी ॥

७

मदनगोपल हमारे राम ।
धनुप बाण धारि विमल वेणु कर,
पीत वसन अरु तन घनश्याम ॥
अपनी भुज[2] जिनि जलनिधि बांध्यो,
रास नचाये कोटिक काम ।
दश शिर हति सब असुर संहारे,
गोवर्धन धारयो कर बाम ॥
तब रघुवर अब यदुवर नागर,
लीला नित्य विमल बहु नाम ।
'परमानन्द' प्रभु भेद रहित हरि,
निज जन मिलि गावत गुण ग्राम ॥*

---

१. पा० छण छण. २. भुजा.

*राम और कृष्ण की एकता वैष्णव संप्रदाय में कोई नवीन बात नहीं है । वल्लभ सम्प्रदाय वाले केवल कृष्ण रूप के उपासक हैं ।

८

प्रात समै उठि हरिनाम लीजे ।

.... ॥

गोविन्द नाम ले आनंद मुख में जाय ।

चक्रपाणि करुणा मय के सो विघन विनासन जसोदा माय ॥

कलिमल हरन तरन भवसागर भक्त चिंतामणि कामधेनु ।

.... ॥

शिव विरंचि इन्द्रादि देवता मुनि जन करत नाम की आस ।

भक्तवछल ऐसो नाम कल्पद्रुम वरदायक 'परमानन्द दास' ।

९

काहे न सेइये गोकुल नायक ।

भक्तन को ठाकुर भगवान सकल सुखनि को दायक ॥

ब्रह्मा महादेव इन्द्रादिक जाके आज्ञाकारी ।

सुरतरु कामधेनु चिंतामणि वरुण कुबेर भंडारी ॥

औरो नृपति कह्यो सब मानैं सनमुख विनती कीजे ।

तुम प्रभु अंतर्यामी व्यापक द्वितिय साखि क्यों[1] दीजे ॥

जनम करम अवतार रूप गुण नारदादि गुण गावे ।

'परमानंददास' श्रीपति यश अधम भले बिसरावे ॥

---

१. पा० कों.

१०

बलिहारी पद कमल की जिन यह शत लक्षण ।
ध्वज वज्रांकुश यव[1] रेखा ध्यान करत विचक्षण ॥
ते चिंतत त्रय[2]-ताप हरत शीतल सुखदायक ।
नख पाणि की चंद्रिका ज्योति उज्ज्वल व्रज-नायक ॥
वृन्दावन गोसंग फिरत भूतल कृत पावन ।
गंगादिक तीर्थ प्रसाद भक्तन मन भावन ॥
भक्त धाय कमला-निवास माया गुण वादक ।
'परमानंद' तें धन्य जन्म जे सगुण अराधक ॥

११ *

माई हौं आनंद गुण गाऊँ ।
गोकुल की चिन्तामणि माधो जो मांगों सो पाऊँ ॥
जब ते कमलनैन ब्रज आये सकल सम्पदा बाढ़ी ।
नंदराय के द्वारे देखो अष्ट महासिधि ठाढ़ी ॥
फूल्यो फल्यो सकल वृन्दावन कामधेनु दुहि लीजे[3] ।
मांगे[4] मेह इन्द्र वर्षावे[5] कृष्ण कृपा सुख जीजे[6] ॥
कहति यशोदा सखियन आगे हरि उत्कर्ष जनावे ।
'परमानन्द' दास को ठाकुर मुरलि मनोहर गावे ॥

---

* नोटः—११वें पद के विषय में उल्लेख है कि यह पद परमानन्ददास जी ने महाप्रभु जी के साथ मथुरा जाते हुए अपने निवास स्थान कन्नौज में गाया था। (अष्ट० छा० पृ० ५६, ६०)

१. पा० जव. २. भय. ३. दीजे. ४. मार्ग. ५. वरषा में ६. लीजे.

१२

कृष्ण कथा बिन, कृष्ण नाम बिन, कृष्ण भक्ति बिन दिवस जात।
तें प्राणी काहे को जीवत नहिं मुख वदन कृष्ण की बात॥
श्रवण कथा श्यामसुन्दर की राम कृष्ण रसना न स्फुरात।
मानुस जन्म कहा पावेगो ध्यान धरे घनश्याम गात॥
जो यह लोक परम सुख राखत अरु परलोक करत प्रतिपाल।
'परमानंददास' को ठाकुर अति गंभीर दीनानाथ दयाल॥

१३

हरि लीला गावति गोपीजन आनंद ही में निशि दिन जाय।
बाल चरित्र विचित्र मनोहर कमल नयन ब्रज के सुखदाई॥
दोहन मंडन[1] खंडन लेपन गृह मज्जन सुत पति सेवा।
चारि जाम[2] अवकाश नहीं क्षण सुमिरन कृष्ण देवदेवा॥
भवन भवन प्रति दीप विराजित कर कंकण नूपुर बाजे।
'परमानन्द' प्रभु घोष कुतूहल देखि भाँति सुरपति लाजे॥

१४

सो गोविन्द तुम्हारो ब्रज बालक।
प्रकट भये घनश्याम चतुर्भुज धरे धनुज[3] कुल कालक॥
कमलापति त्रिभुवनपति नायक भुवन चतुर्दश नायक सोई।
उत्पत्ति प्रलय काल को कर्त्ता जाके किये सबै कुछ होई॥

---

१. पा० मथय। २. याम। ३. धनुज के स्थान पर दनुज होना चाहिए।

सुनहु नंद उपनंद[1] कथा इह ईश क्षीर-समुद्र को वासी।
वसुधा भार उतारन आयो परब्रह्म वैकुण्ठ निवासी ॥
ब्रह्मा महादेव इन्द्रादिक विनती कै यहाँ ले आये।
'परमानन्ददास' को ठाकुर बहुत पुण्य तप कै तुम पाये ॥

१५

प्रात समय गोपी नन्दरानी।
मिश्रित धनि उपजतहिं औसर[2] दधि मन्थन अरु माट मथानी ॥
तीक्ष्ण लोल कपोल विराजत कंकण नूर[3] कुणित एक रस।
रज्जु[4] करषत भुज लागत छवि गावत मुदित श्याम सुन्दर यश॥
चंचल अचपल कुच हारावलि वेणी चाल खसित कुसमाकर।
मणि प्रकाश नहिं दीप अपेक्षा सहज भाव राजत ग्वालिन घर ॥
चढ़ि विमान देवता गोकुल अमरावती विशेषी।
'परमानन्द' घोष कुतूहल जहाँ तहाँ अद्भुत छवि पेखी॥

१६

पीताम्बर को चोलना पहरावति मैया।
कनक छाप तापर दियो झीनी एक तैया ॥

ऐसा करने पर इसका अर्थ स्पष्ट हो जायगा। दनुज-कुल-कालक = राक्षसों के कुल के लिए कालस्वरूप। १. नंद जी के छोटे भाई। २. पा० धन्य उपजत हियो सर ३. यहाँ नूपुर होना चाहिए कदाचित भूल से रह गया है। उर्दू में नूर शब्द का अर्थ होता है प्रकाश। ४. पा० रज्जुवा।

सूथन लाल चुनाव की जरकशी[1] चीरा।
हँसुली हेय जराव की उर राजत हीरा॥
ढाढ़ी निरखे यशोमति फूली अंग न समाय।
कज्जर ले बिन्दू[2] दियो ब्रजजन मुसिकाय॥
नंद बबा मुरली दई एक तान बजावे॥
जोई सुने ताको मन हरे 'परमानन्द' गावे॥

१७

कमल मुख देखत त्रिप्ति न होई।
इह कहा जाने वात दुहागिनी[3] रही निशा भरि सोई॥
ज्यों चकोर चाहत उडुराजे रही चन्द्र मुख जोई।
नेकु अकोर देत नहिं राधे चाहति पियहि निचोई॥
हरि तो अपनो सर्वस दीन्हो एक प्राण वपु दोई।
भजन भेद न्यारो परमानंद जानत बिरला कोई॥

१८

तैं[4] मेरी लाज गँवाई हो यशुमति के ढोटा।
देह विदेही है गई मिलि घूँघट ओटा॥
कमलनयन तुम कुँवर हो हलधर ते छोटा।
छैल छबीले रूप में भई लोटक पोटा।
श्री गोपाल तुम चतुर हो हम मति की बोटा।
परमानंद सो जानहीं जाहि प्रेम की चोटा॥

---

१. जिस पर ज़री (काढ़ने इत्यादि) का काम हो।
२. पा० बिन्दुका. ३. पा०. सुहागिनी ४. पा० तू.

१९

जो रस रसिक कीर पुनि गायो।
सो रस रटत रहत[1] निशि वासर शेष सहस्र मुख पार न पायो॥
गावत शुक नारद मुनि सारद कमल कोक[2] रस तउ न चखायो।
[3]तरणि-तनया तट निकट वंशी वट वृन्दावन वीथिन वहायो॥
तो रस रसिकदास 'परमानंद' ले राधा उर बीच दुरायो।
यद्यपि रमा रहत चरणनितर निगमनि अगम अगाध बतायो॥

२०

आनंद की निधि नंदकुमार।
परब्रह्म नर भेष नराकृति जगमोहन लीला अवतार॥
श्रवणनि आनंद लोचन आनंद मन में आनंद आनंद मूरति।
गोकुल आनंद गोपिन आनंद आनंद जसुदा आनंद मूरति॥
सब दिन आनंद धेनु चरावत वेणु बजावत आनंद कंद।
खेलत हँसत कुतूहल आनंद राधापति वृन्दावन चंद॥
शुक मुनि आनंद भक्तन आनंद निज जन आनंद हास विलास।
चरण कमल मकरन्द पान करि अलि[4] आनंद 'परमानंद दास'।

---

१. पा० याही रस सराहत, २. पा० कोस,
३. पा० अरुणा तनयातट वंशीवट निकट वृन्दावन विथनि वहायो।
सो रस रसिक परमानंद वृषभानुसुता कुच बीच समायो॥
गावत शिव शारद मुनिनारद कमलयन को रस यश जो पखायो॥
४ पा० अति.

२१

जब नंदलाल नैन भरि देखे।
एक टक रही सँभार न तन की मोहनि मूरति पेखे ॥
श्याम वरण पीताम्बर काछे अरु चन्दन की खोर।
कटि किंकण कलराव मनोहर सकल त्रियन के चित के चोर ॥
कुण्डल झलक परत गण्डनि पर आइ अचानक निकसे भोर।
श्री मुख कमल मन्द मृदु मुसकनि लेत कर्पि मन नंद किशोर ॥
मुक्तामाल राजत उर ऊपर चितए सखी जबै इह ओर।
'परमानंद' निरखि अंग शोभा ब्रज वनिता डारति तृन तोर ॥

२२

कौन मेरे आंगन ह्वै जु गयो।
जगमग ज्योति वदन की माई सपनो सो जु भयो ॥
हौं दधि पेलि भौन सुनि सजनी लेनु गई जु मथानी।
कमलनयन की नाईं चितयो वह मूरति[1] मैं जानी ॥
कर नहिं चलत देह गति थाकी बहुत खेद मैं पायो।
'परमानंद' प्रभु चरण शरण गहि रहती कित गृह आयो ॥

२३

रहि री ग्वालि यौवन मदमाती।
मेरे छगन मगन से लालहि कत ले उछंग लगावति छाती ॥

---

१. पा० सूरति.

खीझत तें अबहीं राखे हैं नान्हीं नान्हीं उठति दूध की दांती।
खेलन दे घर जाहि आपने डोलति कहाँ इतो इतराती॥
उठि चलि ग्वालि लाल लागे रोवन तब यशोमति लाई बहु भाँती।
'परमानंद' ओट दे अंचल फिरि आई नयननि मुसकाती॥

२४

गावति गोपी मृदु मधुवाणी।
जाके भवन बसत त्रिभुवनपति राजनंद जसोदा रानी॥
गावत वेद भारती गावत गावत नारदादि मुनि ज्ञानी।
गावत शिव काल गण गन्धर्व गोकुलनाथ माहात्म्य जानी॥
गावत चतुरानन गज-आनन गावत शेष सहस्र मुख रास।
मन क्रम वचन प्रीति पद अम्बुज अब गावत 'परमानंददास'॥

२५

कहा करौं वैकुँठहि जाय।
जहाँ नहीं नंद जहाँ न यशोदा जँह नहीं गोपी ग्वाल न गाय॥
जहँ नहीं जल यमुना को निर्मल और नहीं कदमन की छाय।
'परमानंद' प्रभु चतुर ग्वालिनी ब्रज रज तजि मेरी जाय बलाय॥

२६ *

यमुना जल घट भरि चली चन्द्रावलि नारि।
मारग में खेलत मिले घनश्याम मुरारि॥

---

* नोट: २६ वाँ पद परमानंद दास जी ने बाल-लीला विशिष्ट श्री गोकुल बनाया था। (अ० छा० पृ. ६१)

नयननि सों नयना जुरे मन रह्यो लुभाई।
मोहन मूरति जिय बसी पगु धरो न जाई॥
तब की प्रीति प्रकट भई यह पहली भेंट।
'परमानन्द' ऐसे मिले जैसे गुर चेंट॥

२७

सुन्दर ढोटा कौन को सुन्दर मृदु बानी।
जौन बतायो ग्वालिनी जायो नंदरानी॥
सुन्दर भाल तिलक दिये सुन्दर मुसकानी।
सुन्दर नयननि हरि लियो कमलनि को पानी॥
सुन्दरता तिहँ लोक की या ब्रज में आनी।
'परमानंद' यशोमति सब सुख लपटानी॥

२८ *

सुन सुत एक कथा कहूँ प्यारी।
कमल नैन मन आनन्द उपज्यो रसिक सिरोमणि देत हुंका

---

* सूरदास जी के पदों में भी एक पद ऐसा मिलता है यथाः—
सुन सुत एक कथा कहौं प्यारी।
कमलनयन मन आनन्द उपज्यो चतुर सिरोमनि देत हुँकारी।
नगर एक रमनीक अजोध्या बड़े महल जहँ अगम अटारी॥
बहुत गली पुर बीच बिराजत भाँति भाँति सब हाट बजारी।
तहाँ नृपति दसरथ रघुवंशी जाके नारि तीन सुखकारी॥
कौसल्या कैकेयी सुमित्रा तिनके जनमत ये सुत चारी।
चारि पुत्र राजा के प्रगटे तिन में एक राम व्रतधारी॥
जनक धनुपप्रन देखि जानकी त्रिभुवन के सब नृपति हंकारी॥

दशरथ नृपति हुते रघुवंशी तिनके प्रकट भये सुत चारी
तिन में राम एक व्रतधारी जनक-सुता ताके वर नारी
तात बचन मानि राज तजो है भ्राता सहित चले बनचारी
तिन उठि जाय कनक मृग मारो राजिव लोचन केलि विहारी
रावण हरण सीय को कीन्हों सुनि रघुनंदन नींद निवारी
'परमानंद' प्रभु चाप रटत कर लक्ष्मण देहु जननि भ्रम भारी।

२९

कमल-नयन कमलापति त्रिभुवन को नाथ।
एक प्रेम ते सब बने जो मन होय हाथ॥
सकल लोक की सम्पदा जो आगे धरिये।
भक्ति बिना माने नहीं जो कोटिक करिये॥

राजपुत्र दोउ ऋषि लै आए सुनि मत जनक तहाँ प्रगुधारी।
धनुष तोरि सुख मोरि नृपन को जनक-सुता तिनकी घर नारी॥
पग अँगुठा जब पीर नृपति के तब कैकेयी मुख मेलि निवारी।
वचन मांगि नृप सों तब लीनो, रघुपति के अभिषेक सँवारी॥
तात वचन सुनि तज्यो राज्य तिन भ्राता सहित घरनि वनचारी।
उनके जात पिता तनु त्याग्यो अति व्याकुल करि जीव बिसारी।'
चित्रकूट गये भरत मिलन जब पग पाँवरि दै करी कृपा री।
जुवती हेत कनक मृग मारो राजिवलोचन गरव प्रहारी॥
रावन हरन करथो सीता को सुनि करुनामय नींद बिसारी।
'सूर' स्याम कहि उठे "चाप कहँ लछिमन देहु" जननि भय भारी॥

दास कहावत कठिन है जो लौं चित : राग ।
'परमानंद' प्रभु साँवरो पैयत बड़ भाग ॥

३०

ताते नवधा भक्ति भली ।
जिन जिन साधी तिन तिन की मति नेकुन अनत चली ॥
श्रवण परीक्षत तरे राज-ऋषि कीरतन करी शुकदेव ।
सुमरण कर प्रह्लाद निरभय भयो कमला हरिपद सेव ॥
अर्चन पृथु वंदन सुफलक-सुत दास-भाव हनुमान ।
सखा भाव अर्जुन बस कीने श्रीपति श्री भगवान ॥
बलि आत्म-समर्पण कीनो हरि राखे अपने पास ।
अतिमति प्रेम बढ़यो गोपाल सों बलि 'परमानन्ददास' ॥

३१

नाहिन गोकुल बास हमारो ।
बैरी कंस बसे सिर ऊपर नित उठि करे खगारो ॥
गाँव गाँव प्रति देश देश प्रति लोक लोक प्रति जानी ।
इह गोपाल कहाँ ले राखौं कहति नंद की रानी ॥
शकट पूतना तृणावर्त तें इहै विधाता राख्यो ।
कैसे मिटे कहो हो संतन गरग वचन तव भाख्यो ॥
यद्यपि परब्रह्म अविनाशी महतारी उरु माने ।
'परमानंद' प्रीति है ऐसी पुनि पुनि व्यास बखाने ॥

३२

देखत ब्रजनाथ वदन चंद कोटि वारौं।
जलज निकट नैन मीन उपमा बिचारौं॥
कुंडल शशि सुर उदित अघटन की घटना।
कुंतल अलि माल तापें मुरली कल रटना॥
जलद कंठ सुन्दर तन पीत वसन दामिनी॥
वनमाल शक्र-चाप मोही सब भामिनी॥
मुक्तामणि हार मंडित तारागणि पांति।
'परमानन्द' स्वामी गोपाल सब विचित्र भांति॥

३३

गाय चराएवें को व्यसनु।
राधा मुख लाय राख्यो नैननि को रसनु॥
कबहुँक घर कबहुँक वन खेलन को जसनु[1]।
'परमानंद' प्रभुहि भावै तेरे ए मुख हसनु॥

३४

तुम तजि कौन नृपति पै जाऊँ।
मदनगोपाल मंडली मोहन सकल भुवन जाको ठाऊँ।
तुम दाता समर्थ तिहुँ पुर के जग के दीए अघाऊँ[2]
'परमानंददास' के ठाकुर मनवांछित फल पाऊँ॥

---

१. फ़ारसी शब्द जश्न—खेल तमाशा। २. पा० जाके दीए अघाऊं।

३५

वदन निहारत है नंदरानी ।
कोटि कामशत कोटि चन्द्रमा कोटिक रवि वारति जिय जानी ॥
शिव विरंचि जाको पार न पावत शेष सहस गावत रसना री ।
गोद खिलावति महरि जसोदा 'परमानंद' किये बलिहारी ॥

३६ *

जसोदा तेरे भाग्य की कही न जाय ।
जो मूरति ब्रह्मादिक दुर्लभ सो प्रगटे हैं आय ॥
शिव नारद सनकादिक महामुनि मिलिबे करत उपाय ।
ते नंदलाल धूर धूसर वपु रहत गोद लिपटाय ॥
रतन जटित पोढ़ाय पालने वदन देखि मुसिकाई[1] ।
झूलौ मेरे लाल बलिहारी 'परमानंद' जस गाई[2] ॥

---

*नोट:—३६ वें पद के विषय में उल्लेख है कि यह पद भी परमानन्द-दास जी ने वल्लभ संप्रदाय में दीक्षित होने के पश्चात् गाया था। (अष्ट-छाप पृ० ५६)

१. पा० मुसिकाय   २. पा० गाय

३७ *

हरि तेरी लीला की सुधि आवै ।
कमल नन मन मोहनी मूरत मन मन चित्र चनावै ॥
एक वार जाय मिलत माया करि सो कैसे विसरावै ।
मुख मुसिक्यान बंक अविलोकन चाल मनोहर भावै ॥
कबहुक निबड तिमर आलिंगन, कबहुक पिक सुर गावै ।
कबहुक सम्भ्रम क्वासि क्वासि कहि संगहीन उठि धावे ॥
कबहुँक नैन मूँद अंतरगति मणिमाला पहिरावै ।
'परमानन्द' श्याम ध्यान करि ऐसे विरह गँवावै ॥

३८

जसुमति गृह आवत गोपीजन ।
वासर ताप निवारन कारन बारम्बार कमल मुख निरखन ॥
चाहत पकरि देहरी उलंघय किलक किलक हुलसत मन ही मन।
लोन उतारि दोऊ करि वारी फेरि वार (वार) तन मन धन ॥
लेन उठाय चापत हीयो भरि प्रेम दिवस लागै दृग दरकन ।
चली लै पलना पौढ़ावन को अरुकसाय पौढ़े सुन्दर धन ॥
देत असीस सकल गोपीजन चिरजीवो लोग गज मुन ।
'परमानंददास' को ठाकुर भक्तवत्सल भक्ति मन-रंजन ॥

---

* ३७ वें पद के विषय में कहा जाता है कि इसे सुनकर आचार्य्य महाप्रभु को तीन दिन सुध न रही थी। (पृ० ५८-५६)

३९

यह माँगौ जसोदानंदन ।
चरण कमल मन मन मधुकर या छवि नैनन पाऊँ दर्शन ॥
चरण कमल की सेवा दोऊ तन राजत विजै-लता घन नंदन ।
वृषभानुनंदिनी मेरे उर वसु[1] प्रान जीवनधन ॥
व्रज बसिबो जमुना अचिवो श्री वल्लभ को दास यही मन ।
महाप्रसाद पाऊँ हरि गुन गाऊँ 'परमानंददास' जीवनधन ॥

४०

मेरी माई माधौ सौं मन लाग्यौ ।
मेरो नयन और कमल नयन कौं इक ठौरो करि मान्यौ ॥
लोक वेद की कान तजी मैं न्योती अपने आन्यौ ।
एक गोविंद चरण के कारण बैर सबन सौं ठान्यौ ॥
अब को भिन्न होय मेरी सजनी दूध मिल्यो जैसे पान्यौ ।
परमानंद मिलि गिरधरसौं है पहली पहचान्यौ ॥

---

१. पा० सर्वसु ।

नोटः—श्री गोकुलनाथ जी का दर्शन कर परमानंददास जी को उन पर आसक्ति हुई। और फिर ऐसे पद गाये जिन में श्री आचार्य महाप्रभु जी से यह प्रार्थना की कि मुझ को श्री गोकुल में ही रख दीजिये जिससे नित्यप्रति प्रभु के दर्शन हों। इस पद में (३६) यही प्रार्थना है। (अं० छा० पृ० ६३)।

नोटः— पद संख्या ४० परमानन्ददास जी ने श्रीनाथ जी के दर्शन

४१ *

आये मेरे नंदनंदन के प्यारे।
माला तिलक मनोहर बानो त्रिभुवन के उजियारे॥
प्रेम सहत बसत मन मोहन नेकहु टरत न टारे।
हृदय कमल के मध्य विराजत श्री व्रजराज दुलारे॥
कहा जानो कौन पुण्य प्रगट भयो मेरे घर जो पधारे।
'परमानंद' प्रभु करी न्योछावर वार वार हौं वारे॥

करने के पश्चात् गाया था। इस समय के पश्चात जो पद बने उनमें प्रथम अवतार लीला, फिर चरणारविंद वंदना, भगवद्वर्णन, बाल-क्रीडा एवं ठाकुर जी का माहात्म्य इत्यादि सब कुछ वर्णन किया है इन पदों में से एक यह है:— (अ० छा० पृ० ६४)

मोहन नंदराय कुमार।
प्रकट ब्रह्म निकुंज नायक भक्त हित अवतार॥
प्रथम चरण सरोज बन्दो श्याम घन गोपाल।
मकर कुंडल गंड मंडित चारु नैन विसाल॥
बलिराम सहित विनोद लीला से कर हेल।
दास परमानन्द प्रभु हरि निगम बोलत नेत॥

* नोट—पद संख्या ४१ रामदास, कुंभनदास आदि भक्तों के परमानन्ददास जी के घर पर जाने के समय उनके एक प्रकार से स्वागत में गाया गया था। (अ० छा० पृ० ९८-९९)

४२

पिछवारे ह्वै ग्वालन टेर सुनायो ।
कमल नयन प्यारो करत कलेऊ कोटन सुख लों आयो ॥
अरी मैया गैया एक वन व्याय रही हैं वछरा उहाँ ही वसायो ।
मुरली लई न लकुटिया लीनी अरवराय कोऊ सखा न बुलायो ॥
चकत भई नंदजू की रानी सत्य आप किधों अपनों पायो ।
फूलो न अंग समात रसव त्रिभुवनपति सिर छत्र जो छायो ॥
मिल बैठे संकेत सघन वन विविध भांति कीयौ मन भायो ।
'परमानंद' सयानी ग्वालिन उलटि अंग गिरधर पिय प्यायो ॥

४३

गोरी गुजरिया दही विलोवे अपने जोवन के जोरे ।
प्रेम मुदित बाल गोपाल यश गावै मन्द-मन्द घन घोरे ॥
नूपुर कंकण छुद्र घंटिका रज्जु अकर्षित बाजे ।
मिश्रित धुनि उपजत तिहि औसर देखत शचिपति लाजे ॥
मंगल घोष सदा कौतूहल अजन जनम हरि लीन्हों ।
नंद यशोदा को सुकृत फल वपु दिखाय सुख दीन्हों ॥
शिव विरंचि जाके पद वन्दित सो गोकुल के वासी ।
'परमानंददास' को ठाकुर पलना फूले सुखरासी ॥

नोट:—पद ४२. यह कलेऊ का पद है ।

खंडिता पद

१

कमल नयन श्यामसुन्दर निश के जागे हो आलस भरे।
कर नख उर राजत मानो अर्ध शशि धरे॥
लटपटी शिर पाग बनी खिसत बदन तिलक टरे।
मरगजी उर कुसुम माल भूषण अंग अंग परे॥
सुरति रंग उमगि रहे रोम पुलकि होत खरे।
'परमानंद' रसिकराय जाही के भाग्य ताही के ढरे॥

२

साँवरे भले हो रतिनागर।
अबके दुराये क्यों दुरत हो प्रीति जु भई उजागर॥
अधर काजर नयन रगमगे रची कपोलनि पीक।
उर नख रेख प्रगट देखियत है परी मदन की लीक॥
पलटि परे पट तिलक गयो मिटि जहँ तहँ कंकण गाड़े।
'परमानंद' स्वामी मधुकर गति भली आपने चांड़े॥

३

चले उठि कुंज भवन ते भोर ।
डगमगात लटकति लर छूटी पहरे पीत पटोर ॥
अरुण नैन आलस युत घूमत विधु[1] मुख चन्द्र चकोर ।
गिरि गिरि परत गलित कुसमावली शिथिल शीश कचडोर[2] ॥
लपटित वसन रसन मणि भूषण कुंडल सों लट छोर ।
'परमानंद' मिलों गिरधर सों रस सागर झकझोर ॥

---

१. पा० विवि । २. पा० षकडोर ।

फुटकर पद

१

जागो हो मेरे जगद'[*] उजारे ।
कोटिक मन्मथ वारों मुसकानि पर कमलनयन अंखियन के तारे ॥
संग ग्वाल बछ सब लेके जमुना के तीर बन जाऊ सवारे ।
'परमानन्द' कहति नंदरानी दूर जिनि जाहु मेरे ब्रज रखवारे ॥

२

आछो नीको लोनो मुख भोरहि दिखाये ।
निसि के उनींदे नैन, तोतरात मीठे बैन,
भावत हों जी के मेरे सुख ही बढ़ाइये ।
सकल सुखकरन, त्रिविध ताप-हरन,
उर को तिमिर बाढ़यौ तुरत नसाइये
द्वारे ठाड़े ग्वाल बाल, करऊ कलेऊ लाल,
मिसरी रोटी छोटी मोटी माखन सौं खाइये ।
तनिक सो मेरो कन्हैया, वारि फेरि डारी मैया,
बेनी तो गुहू बानय गहरु न लाइये
'परमानन्द' जन, जननि मुदित मन,
फूली फूली फूली उर अंग न समाइये ।

---

*. यहाँ पर पाठ 'जगत उजारे' होना चाहिए था ।

३

प्रात समै भयो साँवलिया हो जागो ।
नन्द जसोदा के मन आनन्द गाय दुहन को भाजन माँगो ।।
रवि के उदय कमल प्रकासे, भ्रमर उठि चले तमचुर बासे ।
गोप-वधू दधि मथन लागी; हरिजू की लीला रस पागी ।।
विकसित सित कमल चलत अलिसेनी, उठो गोपाल गुहूँ तेरी वेनी ।
'परमानंददास' मन भायो चरण कमल रज देखन आयो ।।

४

प्रात भयो कृष्ण राजिव लोचन ।
संग सखा ठाड़े गो मोचन ।।
विकसित कमल रटत अलि श्रेणी ।
उठो हो गोपाल गुहूँ तेरी वेणी ।।
खीर खांड घृत भोजन कीजे ।
सद्य दूध धौरी को पीजे ।।
सुत हित जानि जगावे नंदरानी ।
परमानंद प्रभु सब सुखदानी ।।

५

भयो पाछलो पहर ।
"कान्ह" "कान्ह" कहि टेरन लागे बाबा नन्द महर ।।

ब्रह्म मुहूर्त भयो सांवरे रांभन लागी धेन।
उठे बलभद्र बछरुवा ढीलन गोपन पूरे चैन॥
गोप वधू दधि मंथन लागीं विप्र पढ़न लगे वेद।
'परमानंददास' को ठाकुर गोकुल के दुख छेद॥

६

उठ गोपाल भयो प्रात देखूँ मुख तेरो।
पाछे गृह काज करों नित्यनेम मेरो॥
विहित निशा अरुण दिशा प्रकट भयो भान।
कमल में के भ्रमर उड़े जागिये भगवान॥
बंदीजन द्वार ठाड़े करत हैं केवार।
मधुर बैन गान करत लीला अवतार॥
'परमानंद' स्वामी दयालु जगत मंगल रूप।
वेद पुराण गावत हैं महिमा अनूप॥

नोट:—पद ६ पाठान्तर—

जागो गोपाला लाल मुख देखों तेरौ।
पाछे गृह काज करों नित्य नेम मेरो॥
विगसत निसा अरुण दिसा उदित भयो भानु।
गुंजत भ्रंग पंकज वन जागिये भगवान॥
द्वारे ठाड़े बंदी जन करत हैं पुकार।
बंस प्रसंग गावत हरि लीला सार॥
परमानंद स्वामी दयाल जगत मंगल रूप।
वेद पुराण पठित महिमा लीला अनूप॥

७

प्रात समय उठि चलहु नन्द गृह बलराम कृष्ण मुख देखिये।
आनंद में दिन जाय सखी री जनम सुफल करि लेखिये॥
प्रथम काल हरि आनंदकारी लखि पाछे भवन काज कीजिये।
राम कृष्ण मुनि वनहिं जाइँगे चरण कमल रस लीजिये॥
को इक गोपिका ब्रज में सयानी श्याम महात्म्य सोइ है जाने।
'परमानंद' प्रभु यद्यपि बालक नरायण करि सोई माने॥

८

करो कलेऊ बलराम कृष्ण तुम कहति यशोदा मैया।
पाछे बछ ग्वाल संग लेके चलहु चरावन गैया॥
पायस सिता घृत सुरभिन को हेत करि भोजन कीजे।
जग जीवन ब्रजराज लाड़िले जननी को सुख दीजे॥
शीप मुकुट कटि काछि काछिनी पीत बसन तन धारो।
लेहु लकुट मुरली कर मोहन मन्मथ दर्प निवारो॥
मृगमद तिलक श्रवण कुंडल मणि कौस्तुभ कंठ बनावो।
'परमानंददास' को ठाकुर ब्रजजन मोद बढ़ावो॥

९

कोउ मैया बेर बेचन आई।
सुनतहि टेर नन्दराव घर[1] में भीतर भवन बुलाई॥

---

१. पा० नन्द रावर में

सूरत धान परे आंगन में कर अंजुली बनाई।
ठुमक ठुमक चलत अपने रंग गोपीजन चलि जाई॥
लिए उठाय रिझाय कर गोपी मुख चूमत न अघाई।
'परमानंद' स्वामी आनंद बहुत बेर जब पाई॥

१०

गोविंद दधि न विलोवन देहि।
वार वार पाय परति यशोदा कान्ह कलेऊ लेहि॥
बाँधि कटि पट क्षुद्र घंटिका मुदित नंद की रानी।
कंचन चीर हार उर मणिगण वलय घोष मृदु वानी॥
एक एकत होय देव दैत्य सब कमठ मन्दराचल जानी।
देखत देव लक्ष्मी कांपी जब गहि गोपाल मथानी॥
कृष्णचन्द्र ब्रजराज रमापति भूतल भार उतारे।
'परमानंददास' को ठाकुर ब्रज बसि जगत उधारे॥

११

हरि जू की बालक लीला भावति।
माखन दूध दही की चोरी सोई यशोदा गावति॥
शकट विभंग पूतना शोपण तृणावर्त्त वध कीन्हों।
ऊखल बंधन जमल उधारन भक्तन को सुख दीन्हों॥
वच्छ चरावन मुरली बजावन यमुना काछ विहारी।
'परमानंददास' को जीवन वृन्दावन संचारी॥

पद १०—समुद्र मथन की ओर निर्देश है। पद ११—कृष्ण भगवान की कुछ लीलाओं का वर्णन है यथा—शकट-भंजन,तृणावर्त्त-वध इत्यादि।

१२

भावत हरि के बाल विनोद ।
कैसो राम निरखि सुख प्रहसित प्रमुदित रोहिणी मात यशोद ॥
अंगन पंक-राग तन शोभित चल नूपुर ध्वनि सुनि मन मोद ।
परम सनेह बढ़ावत मातनि रवकि रवकि बैठत उठि गोद ॥
अतिशय चपल सदा सुखदायक निशि दिन रहत केलि रस ओद ।
'परमानंद' प्रभु अंबुज लोचनि फिरि फिरि चितवत व्रज जन कोद ॥

१३

बाल दशा गोपाल की सब काहू भावे ।
जाके भवन में जात हैं ले गोद खिलावे ॥
श्यामसुंदर मुख निरखि के अविरल सचु पावे ।
लाल बाल कहि गोपिका हसि भलो बनावे ॥
चुटकी दे दे प्रेम सों करताल बजावे ।
'परमानंद' प्रभु नाच ही शिशुताहि जनावे ॥

१४

बाल विनोद गोपाल को देखत मोहि भावे ।
प्रेम पुलकि आनंद भरी यशोमति गुण गावे ॥
बल समेत घन साँवरो आँगन में धावे ।
बदन चूमि कोरा लियो सुत जानि खिलावे ॥

शिव विरंचि मुनि देवता जाको पार न पावे ।
सो 'परमानंद' ग्वालि को हँसि भलो मनावे ॥

१५

हरि को विमल यश गावति गोपांगना ।
मणिमय आँगन नँदराय के बाल
गोपाल तहाँ करे रिंगना ॥
गिरि गिरि उठत घुटुरुअनि टेकत
जानि पाणि मेरो छगन को मँगना ।
धूसर धूरि उठाय गोद ले
मात यशोदा के प्रेम को भंजना ॥
त्रिपद पुहुमि नापी तब न आलस्य भयो
अब जो कठिन भयो देहरी को लँघना ।
'परमानंद' प्रभु भक्तवछल हरि रुचिर
हार वर कंठ सोहे बघना ॥

१६

मणिमय आँगन नंद के खेलत दोऊ भैया ।
गौर श्याम जोरी बनी बल कुँवर कन्हैया ॥
नूपुर कंकण किंकिणी रुन झुन झुन बाजे ।
मोहि रही ब्रजसुन्दरी मनसा-सुत लाजे ॥

संग संग यशोमति रोहिणी हित कारण मैया।
चुटकी दै दै नचावही सुत जानि कन्हैया ॥
नील पीत पट ओढ़नी देखत मोहि भावे।
बाल लीला विनोद सों 'परमानंद' गावे ॥

१७

यह तन वारि डारों कमल नयन पर साँवलियो मोहि भावे रे।
चरण कमल की रेणु यशोदा ले ले शिरसि चढ़ावे रे ॥
ले उछंग मुख निरखन लागी राई लोन उतारे रे।
कौन निरासी दृष्टि लगाई ले ले अंचर झारे रे ॥
तू मेरो बालक तू मेरो ठाकुर तोहि विस्वंभर राखे रे।
'परमानंद' स्वामी चिर जीवहु बार बार यों भाखे रे ॥

१८

तनक कनक की दोहनी दे दे री मैया।
तात दुहन सिखवन कह्यो मोहि धौरी गैया ॥
हरि विषमासन बैठि के मृदु कर थन लीन्हों।
धार अटपटी देखि के व्रजपति हँसि दीन्हों ॥
गृह गृह से आई सबे देखन व्रजनारी।
सचकित तन मन हरि लियो हँसि घोष विहारी ॥
द्विज बुलाइ दक्षिणा दई मंगल यश गावे।
'परमानंद' प्रभु लाड़िलो सुख सिंधु बढ़ावे ॥

१९

बाबा जी मोहि दोहन सिखाऊ।
गाय एक सूधी सी मिलवहु हौं नीके दुहूँ के बलदाऊ ॥
ले नोई मेली चरणनि में लाडिलो कुँवर नोयत बछराऊ।
पाणि पयोधर घरे धेनु के भाजन वेगि भरो[1] उबटाऊ ॥
तब नंदरानी नैन सिरानी द्विज बुलाइ दक्षिणा दिवाऊ।
वारि फेरि पीतांबर हरि पर 'परमानंद' दासहिं पहिराऊ ॥

२०

बोलन लागे मैया मैया।
बाबा कहत नंदराय सों अरु हलधर सों भैया ॥
खेलत फिरत सकल गोकुल में घर घर बजत बधैया।
'परमानंददास' को ठाकुर व्रज जन केलि करैया ॥

२१

नंदजू के लालन की छवि आछी।
चरण पैजनियाँ घुम घुम बाजे चलत पूँछ गहि बाछी ॥
अधर अरुण दधि मुख सों लपट्यो अति राजत तन छींटे छाछी।
'परमानंद' प्रभु बालक लीला चितव का फिरि पाछी ॥

२२

आछे आछे बोल गड़े।
कहा करों उत्तर नहिं निकसत श्याम मनोहर चतुर बड़े ॥

---

१. पा० भरवे।

मेरे नेक आवरी भामिनि रहसि बुलावत रूख चढ़े ।
'परमानंद' स्वामी रति नागर प्रीति वेखन कुँवर लड़े ॥

२३

बड़भागिन गोकुल की नारि ।
माखन रोटी दे जु नचावति जग[1]दाता मुख लेति पसारि ॥
शोभित वदन कमल दल लोचन शोभित केश मधुप अनुहारि ।
शोभित मकराकृत[2] कुंडल छवि शोभित मृगमद तिलक लिलारि ॥
शोभित गात चरण भुज शोभित शोभित किंकिणी करत उचारि ।
शोभित नित्य करत 'परमानंद' गोप वधू वर भुजा पसारि ॥

२४

गोपाल माई खेलत हैं चक डोर ।
लड़का सात पचास संग लीने निपट साँकरी खोर ॥
चढ़ि धौ राह झरोखा झांकत कुँवर हँसत मुख मोर ।
सुहाई रहे बलैया लीनी कर अंचर की छोर ॥
चार नैन भए जब सन्मुख सखी लिए चित चोर ।
'परमानंद' स्वामी सुख सागर चितै लई रति जोर ॥

२५

गोपाल माई खेलत हैं चौगान ।
लड़का संग गोकुल के लीन्हें वृन्दावन मैदान ॥

---

१. पा० पगदाता ।   २. पा० मकर ।

चंचल पात नचावत आवत होड़ लगावत पान ।
सवही तन हस्तन न चलावत कहत बबा की आन ॥
करत आनंद निशंक महाबल हरत नयन को मान ।
'परमानंददास' को ठाकुर गुण आगरो निधान ॥

२६

गोपाल माई नीके फिरावत वंगी ।
भीतर भवन भरे बहु बालक नाना विध बहु रंगी ॥
सेह सुभाव डोर खेंचत है लेत उठाय कर संगी ।
कबहुँक डार देत भुव ऊपर कबहुँ बजावत जंगी ॥
कबहूँ करले श्रवण सुनावत उपजावत शब्द तरंगी ।
'परमानंद' स्वामी मनमोहन खेल चलो सर संगी ॥

२७

लाल आज ले खेलत सुरंग खिलौना ।
काम शब्द उघटत है पपिहा बंगी मधुर मिलौना ॥
प्रेम घुमेंड़ लेत है फिरकी झुँझना मन हुलसौना ।
चट्टा बट्टा चौंकत चकई हितजू सबही करौना ॥
झुमरि झूमि झुकि घाट देखत हथ चंगी भुजन फिरौना।
'परम[illegible]' [illegible] ॥

२८

माखन चोर री हौं पायो ।

जयतु कहा जान कैसे पैयतु बहुत दिनन ही खायो ॥
हो जु कहती ही होत कहा है नित उठि भाजन लगन छुछायो ।
बहुत बार कौरे लगि देख्यौ मेरी घात न आयो ॥
बेनी की कर गही बामटी घूँघट माझ डरवायो ।
मत रोवो तुम सों कौन कहति है ले उछंग हुलरायो ॥
श्री मुख तें उघरी द्वै दंतियाँ तब हँसि कंठ लगायो ।
'परमानंद' प्रभु प्राण जीवनधन बिसद बिमल जस गायो ॥

२९

हौं तकि लागि रही री माई ।

जब गृह तें दधि लै निकसे तब मैं बाँह गही री माई ॥
हँसि दीन्हों मेरो मुख चितयो मीठी सी बात कही री माई ।
ठगि जु रही चेटक सो लाग्यो परि गई प्रीति सही री माई ॥
बैठो नेकु जाऊँ बलिहारी लाऊँ दौरि[1] दही री माई ।
'परमानंद' सयानी ग्वालिन सर्वस्व दे निबही री माई ॥

३०

अरी मेरो तनक सो गोपाल कहा करि जाने दधि की चोरी ।
काहे को आवति हाथ नचावति जीभ न करही थोरी ॥

---

१ पा० और

कब छींकें तें माखन खायो कब दधि मटुकी फोरी ।
अँगुरिन करि कबहुँ नहीं चाखत घर ही भरी कमोरी ॥
इतनी बात सुनी जब ग्वालिन बिहँसि चली मुख मोरी ।
'परमानंद' नंदरानी के सुत सो जो कुछ कहे सो थोरी ॥

३१

ढोटा रंचक माखन खायो ।
काहे को हसई होति री ग्वालिनि सब ब्रज गाजि हलायो ॥
जाको जितनो तुम जानत हो दूनो मो ये लेहू ।
मेरो कान्ह रहे इकेला तब सबे असीस मिलि देहू ॥
कमल नयन मेरी अँखियनि तोरा कुल दीपक ब्रज गेह ।
'परमानंद' कहति नंदरानी सुत प्रति अधिक सनेह ॥

३२

दधि मथति ग्वालि गर्बीली री ।
रुनक झुनक कर कंकण बाजे बाहु डुलावति ढीली री ॥
कृष्णदेव दधि माखन मांगत नाहिंन देत हठीली री ।
भरी गुमान विलोवनि लागी अपुने रंग रँगीली री ॥
हँसि बोल्यो नंदलाल लाड़िलो कछु एक बात कहीली री ।
'परमानंद' नंदन को सर्वस दियो है छबीली री ॥

३३

दधि मंथन करे नंदरानी हो ।
वारे कन्हैया आरि न कीजे छाड़ि न देहु मथानी हो ॥
वारी मेरे मोहन कर पिराइगे कौन चित्त में ठानी हो ।
हरि मुसकाइ जननि तन चितयो सुधि सागर की आनी हो ॥
जो गुण श्रुति[1] छन्दनि गाए नेति नेति मधुवाणी हो ।
'परमानंद' यशोदा रानी सुत सनेह लपटानी हो ॥

३४

ऐसे लरिका कतहुँ न देखे चार सुचालि गाँउ की माई ।
माखन चोरत भाजन फोरत उलटि गारि दे मुरि मुसिकाई ॥
तब हौं देन उराहनो आई कहा करों जो नाकहि आई ।
सुनहु यशोदा तुम ठकुरायनि तुम सों कहत मेरी बोराई ॥
पाछे ठाड़े मोहन चितवत धीरे ही ते चारों लाई ।
'परमानंददास' को ठाकुर पचयो चाहत चोरी खाई ॥

३५

तेरे लाल मेरो माखन खायो ।
घोर[2] दुपहरी देखि घर सूनो ढोरि ढँढोरि अबहिं घर आयो ॥
खोलि कपाट पैठि मन्दिर में सब दधि अपने सखनि खवायो ।
छींके हूँ ते चढ़ि ऊखल पर अनभावतो धरणी ढरकायो ॥

---

१. पा० सरस्वती । २. पा० घोस ।

दिन दिन हानि कहाँ लौं सहिये ए ढोटा जू भले ढंग लायो ।
'परमानंद' प्रभु बहुत बचति हों पूत अनोखो तेंही जायो ॥

३६

बहुतें उपजत या ढोटा पै कैसी धौं ले ले आवत ।
हरि हरि हरि देखो री माई जानी जू बात दुरावत ॥
बिद्यमान दधि दूध चुरायो फिरि फिरि मोहि बिरावत[1] ।
चतुर चोर बिद्या संपूरण गढ़ि गढ़ि छोलि बनावत ॥
जो न पतियाहु सोंह ले मोंसों साँची शपथ करावत ।
तेरे वक्ष जात जे द्वे शिव तापर हाथ दिवावत ॥
वदन मोरि मुस्काई चली है फिरि उरहन मिस आवत ।
'परमानंद दास' को ठाकुर श्याम मनोहर भावत ॥

३७

भाजि गयो मेरो भाजन फोरि ।
कहा कहौं सुन मात यसोदा अरु खायो माखन सब चोरि ॥
लरिका सात पांच सँग लीन्हें रोके रहत गाँव की खोरि ।
मारग में कोउ चलन न पावत लेत दोहनी हाथ मरोरि ॥
समुझि न परे या ढोटा की रीति घोष[2] गोरस ढंढोरि ।
आनन्द फिरत फागु सी खेलत तारी दे दे हसत मुख मोरि ॥
को यह कुँवर कौन को ढोटा सब ब्रज बाँध्यो प्रेम की डोरि ।
'परमानंददास' को ठाकुर लेति बलैया अंचर छोरि ॥

---

१. पा० खोरावत। २. घोस।

३८

ऐसे माई लड़िकनि सों आदेश कीजे ।
दूरहिं ते भए दास देखिये पांय लागि मांगि कछु लीजे ॥
अब ही हरि ढंढोरि मारि सब माखन खाय मौन ह्वै बैठे ।
हौं पचिहारी मेरो कह्यो न मानत विनती करत जात है ऐंठे ॥
सुनहु यशोदा करतब सुत के चोरी करि करि साधु कहावै ।
यद्यपि ए गुण कमल नयन के 'परमानंददास' जिय भावै ॥

३९

यशोदा चंचल तेरो पूत ।
आनन्दो व्रज भीतर डोलत करत अटपटे सूत ॥
दही दूध घृत ले आगे करि जँह जँह धरों दुहाई ।
अँधियारे घर कोउ न जाने तँह पहले ही धाई ॥
गोरस के सब भाजन फोरे माखन खाइ चुराई ।
लरिकन के कर कान मरोरे तहँ ते चले रुवाई ॥
चांटि देत हैं बनचरनि कों कौतुक करे विनोद विचारी ।
'परमानंद' प्रभु गोपीवल्लभ भावै मदन मुरारी ॥

४०

ठाढ़ी बूझति नैन विशालै ।
ताहि यशोदा सिखवन लागी त्रिभुवन गुरु गोपालै ॥
बला लेऊँ कत घर जात पराये दूध दही की चोरी ।

ऐसोइ ग्वालि कहति हैं मोसों माट दोहनी फोरी ॥
जिनि पतिया तू इनकी बातें युवती सुभाव न जाई ।
जो हम पोच करें काहू को बाबा नंद दुहाई ॥
खेलत हूते जहँ रँग अपने झूंठे दोष लगावैं ।
'परमानंद दास' यह बूझे कौन बात जिय भावै ॥

४१

चले हरि बच्छ चरावन भाई ।
रेरे तोपै ते तोक श्रीदामा लीने संग लगाई ॥
कहत गोपाल सुनो रे गोपी वृन्दावन अनुसरिए ।
मधु मेवा पकवान मिठाई भूख लगे तब खईए ॥
खेलत हसत करत कौतूहल आए यमुना तीर ।
परमानंददास को ठाकुर रामकृष्ण दोउ बीर ॥

४२

मोहन नेक सुनाओ गौरी[1] ।
वन तें आवत कुँवर कन्हैया पुहुपमाल ले दौरी ॥
ग्वाल बाल के मध्य विराजत टेरत धूमर धौरी ।
'परमानंद' प्रभु की छवि निरखत पर गई प्रेम ठगोरी ॥

४३

कांधे लकुटि धरि नंद चले वन दोऊ बालक दीने आगे ।
राम कृष्ण सों प्रीति निरन्तर सखा पायो विभागे ॥

१. एक राग विशेष ।

पूरब संचित सुकृत रास फल अपनी आंखिन देख्यो ।
यों सयान अब कोऊ नाहीं जनम सुफल करि लेख्यो ॥
खेलत हँसत पंथ में धावत लड़काई की बानी ।
'परमानंद' भक्त बस माधो चार पदारथ दानी ॥

४४

बने बन आवत मदन गोपाल ।
नृत्यत हँसत हँसावत किलकत संग मुदित ब्रजबाल ॥
वेणु मुरझ उपचंग चंग मुख चलत विविध सुरताल ।
बाज अनेक वेणु रव सों मिलि रणित किंकिणी जाल ॥
यमुना तट के निकट वंशीवट, मंद समीर सुढाल ।
राका रजनी विमल शरद शशि क्रीड़त नंद को लाल ॥
श्याम सघन-तन कनक पीत पट उर लंबित बनमाल ।
'परमानंद' प्रभु रसिक शिरोमणि चंचल नैन विशाल ॥

४५

मैया तेरो लाल को मुख देखन हौं आई ।
कालिह मुख देख गई दधि बेचन जातहि गयो है विकाई ॥
दिन तें दूनो दाम लाभ भयो गाइनि बछिया जाई ।
आई सबै थमाय साथ की गिरिधर देहु जगाई ॥
सुनि त्रिय बचन विहँसि उठि बैठे नागरि निकट बुलाई ।
'परमानंद' सयानी ग्वालनी चली संकेत बनाई

४६

लाल को दरसन भयो सवेरो ।
बहुत लाभ पाऊँगी माई दह्यो विकैहे मेरो ॥
गली जु सांकरि एक जो नीकी भेट भयो भट मेरो ।
अंक दे चली सयानी ग्वालिन हरि को वदन फिरि हेरो ॥
प्रातहि मंगल भयो सखी री ह्वै है सब काज भले रो ।
'परमानंद' प्रभु मुख निरखत मिट्यो भवसागर झेरो ॥

४७

हौं प्रभात समें उठि आई कमलनयन देखत तुम्हरो मुख ।
गोरस बेचन चली मधुपुरी लाभ होइ मारग पाऊँ सुख ॥
करत कलेवर श्याम मनोहर नेकु चिते कीजे हम तन रुख[1] ।
तुम सपने मोहि मिलि के बिछुरे का सों कहो इह रजनि जनित दुख ॥
प्रीति जु एक लाल गिरिधर सों इह मिस करि सब बात जनाई ।
'परमानंददास' वह नागरि नागर सों मनसा अरुझाई ॥

४८

पिछौंड़ी बाँह न दैहौं दान ।
सूधे मन तुम लेहु गोसाईं राखो हमारो मान ॥
मारग रोकि रहे नंदनँदन सब गुण रूप निधान ।
वदन मोरि मुसकाइ भामिनी नयन बाण सन्धान ॥

१. रुख—हमारी ओर ध्यान करना दृष्टि ।

नंदराय के कुँवर लाडिलौ सब के जीवन प्राण ।
'परमानंद' स्वामि मोहन हो तुम तें कौन सुजान ॥

४९

रंचक चाखन दे री दह्यो ।
अद्भुत स्वाद श्रवण करि मोपे नाहिन परत रह्यो ॥
ज्यों ज्यों कर अंबुज कुच झंपति त्यों त्यों मर्म लह्यो ।
नंदकुमार छबीलो ढोटा अंचल धाइ गह्यो ॥
हरि हठ करत दास 'परमानंद' इह मैं बहुत सह्यो ।
इन बातनि खायो चाहत हो सेत न जात बह्यो ॥

५०

भली यह खेलिबे की बानि ।
मदन गोपाल लाल काहू की नाहिन राखत कानि ॥

नोट—पद. ५०. इस पद के विषय में उल्लेख है कि एक राजा एक बार दर्शन करने आया । श्री गोवर्धन नाथ जी के दर्शन के पश्चात् उसने अपनी रानी से भी उनके दर्शन करने को कहा । परन्तु जब तक पर्दे का प्रबन्ध न हो जाय रानी ने स्वीकार नहीं किया । पश्चात् महाप्रभु जी ने राजा की प्रार्थना पर एकान्त में दर्शन कराने का वचन दिया । जिस समय रानी इस प्रकार दर्शन कर रही थीं श्री गोवर्धननाथ जी ने सिंह पौर का दरवाजा खोल दिया और सारे दर्शक रानी के ऊपर आ गिरे । उसके वस्त्र तक अस्त व्यस्त हो गए और वह बहुत लज्जित हुई । उसी समय परमानंद दास जी ने यह पद बनाया । (अ० छा० पृ० ६७-६८)

देखि यशोमति करवच सुत के यह ले माट मथानि ।
फोरि ढोरि दधि डारि अजिर में कौन सहे दिन हानि ।।
अपने हाथ ले देत वनचर को दूध भात घृत सानि ।
जो बरजों तो आंखि दिखावे पर घर कूदि निदानि ।।
ठाढ़ी हँसति नंद की रानि मूँदि कमल मुख पानि ।
'परमानंददास' जानत है बोलि बूझि दे आनि ।।

५१

ठाढ़ी यशोदा कहे ।
यह ब्रज के लोग लाल के गोहन लागे रहे ।।
जाके भवन जात न कबहूँ सो झूटे आनि गहें ।
एक गाँउ एक बास बसेवो कैसे जात निबहे ।।
तुम जिन लीजो मात जसोदा सबन के जीवन यहे ।
'परमानंद' आँखि जरो जाकी जू टेढ़ी दृष्टि चहे ।।

५२

धन वह राधिका के चरन ।
सुभग सीतल अति सुकोमल कमल कैसे वरन ।।
नख चन्द्र चारु अनूप राजत विविध सोभा धरन ।
क्वणित नूपुर कुंज विहरत परम कौतुक करन ।।
रसिक लाल मन मोदकारी विहर सागर तरन ।
बिवस 'परमानंद' छिन छिन स्याम जी के सरन ।।

५३

परमेश्वरी देवी मुनि वंदे पवित्र देवी गंगे।
वामन चरण कमल नख रंजित शीतल वारि तरंगे॥
मज्जन पान करत जे प्राणी त्रिविध ताप दुख भंगे।
तीरथराज प्रयाग प्रगट भयो जब बनी जमुना वेणी संगे॥
भगीरथराज सगर कुल तारन वालमीकि जस गायो।
तव प्रताप हरि भक्ति प्रेम रस जन 'परमानंद' पायो॥

५४

हो मोहन हौं हारी तुम जीते।
नागर नट पट देहु हमारे काँपत है तन शीते॥
रसिक गोपाल लाल अबलनि पर एती कहा अनीते।
'परमानंद' प्रभु हम सब जानत गाल बजावत रीते॥[1]

५५

हरि यश गावति चलि व्रज सुन्दरी श्री यमुना के तीर।
लोचन लोने बाँह जोरि करि, श्रवणनि फलकत बीर॥
वेणी सुचिर चारु कांधे पर[2] कटि तट अम्बर लाल।
हाथनि फूल लिये डलिया भरि अरु मुक्ता मणि माल॥
जल प्रवेश करि मज्जन कीन्हौं प्रथम हेमन्त के मास।
ए[3] वर होहु[4] नन्द सुत मेरे[5] व्रत ठान्यो इहि आश॥

१. पा०—जानत सब तुम गाल बजावत रीते। २. परे। ३. यह।
४. खेंच। ५. प्यारे

तब ही चीर हरे हरि नागर चढ़े कदम की डारि
'परमानंद' प्रभु वर देवे को उद्यम कियो मुरारि।

५६

राधे जू हारावलि टूटी।
उरज कमलदल माल मरगजी बाम कपोल अलक लट छूटी।
बर उर उरज करज कर[1] अंकित बाहु युगल बलयावलि फूटी
कंचुकि चीर विविध रँग रंजित गिरिधर अधर माधुरी घूंटी
आलस वलित नयन अनियारे अरुण उनीदे रजनी खूटी
'परमानंद' प्रभु सुरति समय रस मदन नृपति की सेना लूटी।

५७

तुम पै कौन दुहावत गैया।
गूढ़ भाव सूचित अन्तरगति अति सुकाम की नैया॥
गूढ़ प्रीति तासों मिलि कीजे जो होइ तिहारी दैया।
ज्यों भावे त्यों मिलत सबनि सों इहे सिखाई मैया॥
ले जु रहे कर कनक दोहनी बैठे हो अध-पैया।
'परमानंद' स्वामी हठ मागो ज्यों घर खसम-गुसैया॥

५८

भली करी जू आए सवारे।
बहुरि प्रभात काउ दोहाइगो प्रकट देखिये अंक निनारे[2]।

पा०—१ पर। २. ग्रंकिनी मारे।

पहिरे[१] पीत नील पट ओढ़े ऐसी को चतुर धन भावत ।
एते मान देह सुधि भूली तुमही आपनपो[२] बिसरावत ।।
पाउ धारिये बहुत बेर भई कर गहि कनक तलय बैठारे ।
'परमानंद' प्रभु तुम से और को संध्या वचन वदे नहिं टारे ।।

५९

महाबल कीनो हो व्रजनाथ ।
इत मुरली उत गोपिन सों कृत उत श्री गोवर्धन हाथ ।।
इत बालक पय पान करत है उत सुरभी तृण खात ।
उत सब बच्छ चरत अपने रंग ग्वाल बजावत पात ।।
कोप्यो इन्द्र महा प्रलय को झर लायो दिन सात ।
'परमानंद' राख लीनो गोकुल मेटि इन्द्र की घात ।।

६०

मोहन मानु मनायो मेरो ।
हौं बलिहारी कमलनयन की नेकु चिते मुख फेरो ।।
माखन खाहु लेहु मुख मुरली ग्वालन बालन टेरो ।
जोरी करिके जोर आपनी न्यारी गैयाँ घेरो ।।
कारो कहि कहि मोहि खिजावत नहीं बरजत बल अधिक अनेरो ।
इन्द्र नीलमणि सों तन सुन्दर कहा जाने बल चेरो ।।
सेरो सुत सिरताज सबन को सबते कान्हे बड़े रे ।
'परमानन्द' भोर भयो गाईं विमल बिसद यश तेरो ।।

पा०—१. पहने । २. आपन को ।

६१

माई री कमल नैन श्याम सुन्दर झूलत हैं पलना।
बाल लीला गावत सब गोकुल की ललना॥
अरुण तरुण कमल नख मनि जस जोती।
कुंचित कच मकराकृत[1] लटकत गज मोती॥
अंगूठा गहि कमल पान मेलत मुख माँहीं।
अपनों प्रति बिंब देखि पुनि पुनि मुसिकाहीं॥
जसुमति के पुन्य पुंज बार बार लाले।
'परमानन्द' स्वामी गोपाल सुत सनेह पाले

६२

ब्रज के बिरही लोग बिचारे।
बिन गोपाल ठगे से ठाढ़े अति दुर्बल तन हारे॥
मात जसोदा पंथ निहारत निरखत साँझ सकारे।
जो कोउ[1] कान्ह कान्ह कहि बोलत अँखियन बहत पनारे॥
यह मथुरा काजर की रेखा जे निकसे ते कारे।
'परमानंद' स्वामी बिन ऐसे जैसे चंदा बिनु तारे॥

पा० १. भवराकृत.

नोट: पद ६१ के विषय में उल्लेख है कि पद परमानन्दजी ने म प्रभुजी द्वारा दीक्षित होने के पश्चात् गाया था। (अष्टछाप पृ० ५५-५६

६३

सब गोकुल गोपाल उपासी ।
जो गाहक साधन के ऊधो सो सब बचन ईस पुर कासी ॥
जद्यपि हरि हम तजी अनाथ करि अब छांडत क्यों रति जासी।
अपनी सीतलता कहां छोड़त जद्यपि विधु राहु है ग्रासी ॥
किंहि अपराध जोग लिखि पठयौ प्रेम भजन तें करत उदासी ।
'परमानंद' ऐसी को विरहन मांगे मुक्ति पुनि रासी[1] ॥

६४

कौन रसिक है इन बातन कों ।
नंदनंदन बिन कासों कहिये सुनि री सखी मेरे दुखिया मन को।
कहा वे यमुना पुलिन मनोहर कहाँ वह चाँद सरद राति कौ ।
कहा वे मंद सुगंध अमल[2] रस कहा वे षट् पद जलजातन कौ ॥
कहा वे सेज पौढ़िवो वन को फूल बिछौना मृदु पातन कौ ।
कहा वे दरस परस 'परमानंद' कोमल तन कोमल गात[3] कौ ॥

पा०—१. गुनरासी । २. अमत । ३. गातन ।

नोट:—६२, ६३, ६४, ६५, पदों के विषय में वार्ता में यह उल्लेख है कि परमानंददास जी ने ये पद प्रयाग में [illegible] कीर्त्तन में गाये थे। (अष्टछाप पृ० ४७)

६५

माई को मिलिवै नंद किसोरे ।
एक वार को नैन दिखावें मेरे मन को चोरे ॥
जागत जाम गनत नहीं खूँटत क्यों पाऊँगी मोरे ।
सुन री सखी अब कैसेजीजै सुन तमचर खग रोरे॥
जो यह प्रीति सत्य अंतर गति जिन काहू बन होरे ।
'परमानंद' प्रभु आन मिलेंगे सखी सीस जिन ढोरे ॥

६६

कोन वेर भई चले री गोपाले ।
हौं ननसार गई हों[1] न्योते वार वार बोलत व्रज बोले[2] ॥
तेरौ तनको रूप कहां गयौ भामिन अरु मुख कमल सुखाय रह्यौ ।
सब सौभाग्य गयौ हरि के संग हृदय सों कमल विरह दह्यौ ॥
को बोले को नैन उघारे को प्रति उत्तर देहि विकल मन ।
जो सर्वस्व अक्रूर चुरायौ 'परमानंद' स्वामी जीवन धन ॥

६७

जिय की साधन जिय ही रही री ।
बहुरि गोपाल देखि नहीं पाए विलपत कुंज अहीरी ॥
एक दिन साज समीप यह मारग बेचन जात दही री ।
प्रीत के लिये दान मिस मोहन मेरी बाँह गही री ॥

पा०—१. ही । २. वाले ।

बिन देखें घड़ी जात कलप सम बिरहा अनल दही री।
'परमानंद' स्वामी बिन दर्शन नैन न नींद वही री॥

६८

वह बात कमल दल नैनन की।
बार बार सुधि आवत रजनी वहु दुरि देनी सेनी सेन की॥
वह लीला वह रास सरद को गोरज रजनी आवनि।
अरु वह ऊची टेर मनोहर मिस करि मोह सुनावनि॥
वसन कुंज में रास खिलायो बिथा गमाई मन की।
'परमानंद' प्रभू सों क्यों जीवे जो पोखी मृदु बेन की॥

६९

ता दिन काजर दैहौं सखी री।
जा दिन नंदनंदन के नैना अपने नैना मिलैहों॥
करों न तिलक तंबोल तरौन वसन पलटि न पहरैहों।
करों हटतार सिंगार सवन को कंगना पात बंधै हों॥
अब तो जिय ऐसी बन आई भूले अनत चितै नहिं दैहों।
'परमानंद' प्रभु चाही परेखो अब बार बार लजैहों॥

नोटः—६६, ६७, ६८, के विषय में वार्ता में यह उल्लेख है कि कीर्तन के पश्चात जिस में स्वयं श्री नवनीत प्रिया जी ने जलघरिया छत्री कपूर की गोद में बैठकर पद सुने थे परमानंदजी की इच्छा फिर उस मूर्ति के दर्शन की हुई। अतएव वह प्रयाग से अड़ेल को गए। वहाँ महाप्रभुजी का दर्शन हुआ और उनके कहने पर परमानंद दास जी ने ये विरह के पद गाये। (अष्ट-छाप पृ० ४६-५२)

जमुना पद

१

श्री जमुना गोपालहि भावे ।
जे जमुना के दरसन कीन्हे कोटि जनम के पाप नसावे ॥
जे जमुना असनान करत हैं धरमराज लेखो न गनावे ।
जे जमुना जलपान करत हैं बहुरो संकट और न आवे ॥
पद्मपुराण कथा सब ऊपर धरनी सो वराह जस गावे ।
ते तीरथ ए प्रगट जगत में 'परमानंद' प्रसादे पावे ॥

२

अति मंजुल जल प्रवाह मनोरमा, सुखावगाहन,
नव द्युति राजत अति तरणि नंदनी ।
श्याम वरण झलक रूप, लाल लहरि बन अनूप,
सेवत सन्तन मनोज वायु मन्दनी ॥
कुमुद कंज वन विकाश, मण्डित दिश दिश सुवास,
कूजित कल हंस कोक मधुर छन्दनी ।
प्रफुलित अरविन्द पुंज, कोकिल शुक सार गज,
सेवत अलि भृंगपुंज विविध बन्दनी ॥

नारद शुक सनक व्यास, ध्यावत मुनि करत आश,
चाहत हैं पुलिन वास सफल दुख निकन्दनी ।
नाम लेत कटत पाप ऋषि किन्नर मुनि कलाप,
करत जाय 'परमानंद' आनंद कन्दनी ॥

३.

यमुना की आशा अब करत हैं दास ।
मन क्रम वचन कर जोरि के माँगत निशि दिन राखिये अपने ही पास ॥
जहाँ अब रसिकवर रसिकनी राधिका दोउ जन संग मिलि करत हैं रास ।
दास 'परमानंद' पाय अब व्रजचन्द्र देखि सिराने नयन मन्द हास ॥

४

यमुना सुखकारिणी प्राणपति की ।
प्रिय जे भूलत जिन्हें सुधि करि देत तिन्हें,
कहाँ लों कहिये अतिहि इनके हित की ॥
पिय संग गान करे अति रस उमगि भरें,
देत तारी करें लेत जित को ।
दास 'परमानंद' पाय अब व्रजचन्द्र,
एहि जानत अति प्रेम गति को ॥

५

यमुना के साथ अब फिरत हैं नाथ ।
भक्त के मन के मनोरथ पूरत सबे कहाँ लों कहिये अब इनकी जो बात ॥

विविध शृंगार भूषण अंग अंग सजे वरणी न जात शोभा बनी गात
दास 'परमानंद' पाय अब ब्रजचन्द्र राखे अपने शरण वहे जो जात।

६

यमुने पिय को वश तुम कीने।
प्रेम की फन्द ते घेरि राखे निकट, ऐसे निर्मोल नग मोल लीने।
तुम जो पठावत तहां अब धावत निशिदिन तिहारे रस रंग भीने।
दास 'परमानंद' पाय अब ब्रजचन्द्र परम उदार यमुना जो दीने।

७

श्री यमुना जी यह प्रसाद हौं पाऊँ।
तुम्हरे निकट रहों निशि वासर रामकृष्ण गुण गाऊँ॥
मज्जन करों विमल पावन जल चिन्ता कलुष बहाऊँ।
तिहारी कृपा भानु की तनया हरि पद प्रीति बढ़ाऊँ॥
बिनति करों यहे वर माँगू अधम संग बिसराऊँ।
'परमानंद' चार फल दाता मदनगोपालहिं भाऊँ॥

८

श्री यमुना जी दीन जानि मोंहि दीजे।
नंद को लाल सदा वर मांगूँ सब गोपिन की दासी कीजे॥
तुम हो परम उदार कृपानिधि सन्त जनन सुखकारी।

नोटः—पद ७ तथा ८ प्रयाग से मथुरा पहुँचने पर और यमुना स्नान करने के उपरान्त गाए गए थे। (अ० छा० पृ० ६० ६१)

तिहारे[1] वश वरतत राधावर तट खेलें गिरिधारी ॥
सब सखियन मिल हरि संग खेलें अद्भुत रूप निहारी[2] ।
तिहारे[3] पुलिन मध्य[4] निकट कुंज द्रुम कमल पुहुप हैं सुवासी[5] ॥
श्रम जल सहित वाम अति रस भरे जल क्रीड़ा सुखकारी ।
मनो तारा मधि चन्द विराजत भरि भरि छिरकति नारी ॥
राणी जू के पाइ लागि विनती करि गृह को कारज सब कीजे ।
'परमानंद' प्रभु सब सुख दाता इह रस नयन भरि पीजे ॥

९

तू यमुना गोपालहि भावे ।
यमुना यमुना नाम उच्चारे धर्मराज ताकी न चलावे ॥
जे यमुना को जानि महातम जे यमुना जल पान करे ।
जे यमुना अवगाहे निशिदिन चित्रगुप्त लेखो न धरे ॥
पद्मपुराण कथा इह पावन धरणी मुख वाराह कही ।
तीर्थ महातम जानि जगत गुरु इह प्रसाद 'परमानंद' लही ॥

पा०—१. तुम्हरे । २. अद्भुत रास विलासी । ३. तुम्हारे । ४. नहीं है
५. पुहुप वर वासी ।

गुरु सम्बन्धी पद

१

ए री गोपाल सों मेरो मन मान्यो कहाँ करेगो कोउ री।
अब तो चरण कमल लपटानी जो भावै सों होउ री॥
माय रिसाय बाप घर मारे हँसे बटाऊ लोग री।
अब जिय ऐसी बन आई विधना रच्यो सँजोग री॥
वरु इह लोक जाओ किन मेरो अरु परलोक नसाइ री।
नन्दनंदन हौं तऊ न छाँड़ो मिलि हों निशान बजाइ री॥
बहुरि यहै तनु धरि कहा पैहों वल्लभ भेष मुरारि री।
'परमानंद' स्वामी के ऊपर सर्वस देहों वारी री॥

नोट:—वल्लभ संप्रदाय वाले महाप्रभु वल्लभाचार्य और भगवान में कोई अन्तर नहीं मानते। अतएव उनके मतानुसार महाप्रभु की पूजा उपास्य की ही पूजा है।

कुंभनदास पदावली

समुदाय कीर्तन

१

भावे तोहि तोडको[1] घनो।
फाटे पगे गोखरू छूवे फाटो जात तनो ॥
सिंवे कहा लोखरी को डर ऐसो बानरु बनो।
'कुंभनदास' लाल गिरिधर बिन कौन रांड को जनो ॥

२

तेरो मन गिरिधर विना न रहैगो।
बोलेंगे मुरली की ध्वनि सुनि, तुव तन मदन रहेगो ॥
जानोगी तब मानोगी आली प्रेम प्रवाह बहेगो।
'कुंभनदास' गोवर्धनधर नित उठकान कहेगो ॥

पद १ पा० देखो अ० छा० पृ० ७२, ७३,
भावत है तोय टोडको घनौ।
काँटे लगे गोखरू बूढे फट्यौ जात यह तनौ ॥
सिंहो कहा लोकटी को डर यह कहा बानरु बन्यौ।
'कुंभनदास' प्रभु तुम गोवर्धनधर वह कोन रांड ढेडनी को जन्यौ

३

अंग दुराय चलिये संग मेरे।
कहि मुख मौन अधर वोट दे दसन दामिनी चमकत तेरे॥
तजि नूपुर अति छुद्र घंटिका नाद सुनत खग मृग सब घेरें।
'कुंभनदास' स्वामिनी वेग चली निपट निकट गिरिधरन के नेरे॥

४

शरद सरोवर सुभग अंग में वदन कमल चारु फूल्यो री माई।
ता ऊपर बैठे जुगल खंजन मत्त भये मानो करत लराई॥
कुंचित केश सुदेश सखी री मधुपन की माला झुरि आई।
'कुंभनदास' प्रभु गिरवरधरन लालन हैं युवतिन सुखदाई॥

५

तेरे शिर कुसुम विथुरी रह्यो भामनी शोभा देत मानो नभ निशि तारे।
श्याम अलक छूटि रही री वदन पर, चन्द छिप्यो मानो बादर कारे॥
मुक्तमाल मानो मानसरोवर, कुच चकवा दोऊ न्यारे न्यारे।
'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धन धर, बस कीन्हे नंदलाल पियारे॥

६

वह देख वरत[1] झरोखन दीपक, हरि पौढ़े ऊँची चित्रसारी।
सुन्दर वदन निहारन कारण राख्यो है बहुत जतन कर प्यारी॥

पा० १, वे देखो वरन।

पद छः—प्रथम पंक्ति कुम्भनदास जी की है और दूसरी उनके पुत्र [illegible] किनकी हैं पता नहीं) अ० छा० पृ० १०४ १०६.

कंठ लगाय भुज दे सिरहाने अधर अमृत पीवत सुकुमारी ॥
तन मन मिलि प्राण प्यारे सों नूतन छवि बाढ़ी अति भारी ॥
'कुंभनदास' दम्पति सौभाग सींवा जोड़ी भली बनी एक सारी।
नव नागरी मनोहर राधे नवल लाल गोवर्धन धारी ॥

७

माई गिरधर के गुण गाऊँ।
मेरे, तो व्रत यहै निसि दिन और न रुचि उपजाऊँ॥
खेलन-आंगन आउ लाडिले नेकहुँ दर्शन पाऊँ।
'कुंभनदास' इह जग के कारण लालच लागि रहाऊँ ॥[1]

८

यहूँ जोत वहि मान धरि आवे।
सुन्दर स्याम बहुरि सम्मुख ह्वै अंबुज बदन दिखावे ॥
तब लग मान करहु कोउ कैसे जब लग वह दर्शन नहिं पावे।
दृष्टि परे मन मधुकर तिहि छिनु सहज सरोजहि धावे।
त्रिभुवन मांझ हो उत्तम जुवती आरज[2] पथहि ढ़ढ़ावे।
'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर कुल मर्य्याद बढ़ावे ॥

९

सखी री जिनि वा सरोवर जाहि।
अपने रस को तजि चकवाकी बिछुरि चलति सुख चाहि

पा० १. रखाऊं। २. होउ बदें युवती आर्य।

सकुचत कमल अकाल पाइ के अलि व्याकुल दुख दाहि।
तेरे सहज आनि यह गति यह अपराध कहि काहि॥
यह अद्भुत सरिस रच्यो विधाता सरस रूप अनुसाहि।
'कुंभनदास' प्रभु गिरिधर सागर देखत उमगे ताहि॥

१०

तू तो आलस भरी देखियत है री रसी।
रजनी चोरि तातें आखिन लागी, अरु अकेली भामिनी कुंज वसी॥
घर विरोध तें रूसी काहु जानी नवन को दिन गत हीन सी।
'कुंभनदास' गिरधर के कंठ की यह जानति हो तें तो गिरि पाइ मोतिन माल लसी॥

११

आज देखिये वदन डहडही प्यारी रगमगे नयना तेरे रंग भरे।
मानहु शरद कमल ऊपर उन्मद युगल खंजन लरे॥
रसिक शिरोमणि लाल सुशीतल कमल कर उर धरे।
'कुंभनदास' कहि काहे न फूले गिरधर पिय सब दुख हरे॥

१२

काहे ते आज विथुरी प्यारी क्यों न बाँधहि[1] अलक।
भौंह कमान नैन रतनारे मानो न लागी पलक॥
रति रस सुख की फूल जनावति[2] मद गयंद की चाल पलक।
'कुंभनदास' मिलि गिरधर को मानो कोटि चंद की झलक॥

पा० १ बाँधई। २. जवावति।

१३

जानी मैं आजु मिली प्यारे सों ते अपनो भावतो ही री कियो।
सकल रैनि रात रस रंग खेलत पलक सों पलक न लागन दियो ॥
कंठ लागि भुजा दे सिराहने रसिक लाल को अधर सुधा रस पियो।
'कुंभनदास' प्रभु गिरिवरधर को अंक भरि भेटि जुडायो हियो ॥

१४

रसमसे नैन तेरे निसि के उनींदे,
काहे को दुरति जु उलटी बात प्रातहि जो धुनी दे ।
वदन आलसमय आलस की जँभाय वो अति अलसात वचन छीदे ॥
'कुंभनदास' प्रभु गिरधर मिले तोहि सकल अंग सेवी दे ।

१५

तों सों जो रस में कछु हँसि के[१] कह्यो सखी री तू करति मान ।
तने ही में को काहे को रूसति गोवर्धनधारी सुखनिधान[२] ॥
मेरो कह्यौ करि छांड़ि अटपटी सुनि री तजहि[३] अपनो समान ।
'कुंभनदास' स्वामी सों प्यारी न करि निदान ॥

पा०, १. और समय कछु रसिकै । २. गोवर्धन धारी प्यारो सुखनिधान । ३. सुनि रीत आह ।

१६

जो तोसों बात कही पिय तेरे तो तू[1] काहे को रिसानी।
प्राणनाथ सों बीच[2] पारे सोई अयानी॥
जो बिन रह्यो न परे छिन तासों क्यों रूसिये सयानी।
'कुंभनदास' प्रभु गिरधरन कहे सोई कीजिये ज्यों रहिये हृदय लपटानी॥

१७

तेरे नैन चंचल वदन कमल पर मनो युग खंजन करत कलोल।
कुंचित अलक मनो रस लंपट चलि[3] आये मधुपनि[4] के टोल॥
कहा कहों अंग अंग की शोभा खुभी[5] न परसत चारु कपोल।
'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर देखत बाढ़े मनज अमोल॥

१८

न्हान[6] को खोले कंचुकी के कसना।
सनमुख ह्वै पिय झांकि झरोखनि तव अंगुरी दीनी बिच दसना॥
लज्जित तन कंपित ह्वै धाई लीन्हें और वसना।
'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर तवहि लाल लगे हैं हँसना॥

१९

अंचल पीक कहूँ कहूँ लागी नयननि सखी करति सब कूटि।
मोहन लाल गोवर्धनधारी सरवस भामिनि लियो है लूटि॥

पा०—१. तन। २. कोप। ३. अलि। ४. मधुरनि। ५. खुटीन।
६. अस्तन।

नैंना रसमसे अधर और छवि चंदन गयो गात पें सूक।
'कुंभनदास' प्रभु सों मिली भामनि कहत न बनें सुख भई मति मूक॥

२०

काहे बाँधति नाहिंने छूटे केस।
शशि मुख पर घन धारा छूटी कछुक जु चली उर देस॥
अंग अंग यह सोभा कहा कहूँ निसि जागि आई और ही वेस।
'कुंभनदास' अति ओप तें ओप भई गोवर्धनधर मिले व्रज-जुवति-नरेस

२१

ोतिन माँग विथुरी ससि मुख पर मानो नछत्र आये करन पूजा।
ंचल फरहरात उर पर कांधी[1] काम ध्वजा॥
रह राहु तें छूटि सकल कला विमल भई देखत सुखुजा।
ंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर अधर सुधा कियो परन कंठ मेलि उदार भुजा

२२

कबहू देख हों इन नैननु।
सुन्दर श्याम मनोहर मूरत अंग अंग सुख देननु॥
वृन्दावन विहार दिन दिन प्रति गोप वृन्द संग लैननु।
हँसि हँसि हरखि पतौवन पावन बांटि बांटि पय फेननु॥

पा० १. काँधो।

नोट—पद २२. देशाधिपति के यहां से लौटते समय मार्ग में यह पद
[illegible]

'कुंभनदास' किते दिन बीते किये रेणु सुख सेननु।
अब गिरधर बिन निस और वासर मन न रहत क्यों चेतनु॥

२३

नैन भरि देख्यौ नंदकुमार।
ता दिन ते सब भूलि गयौ हों बिसरयौ पन परवार॥
बिन देखे हों विकल भयो हों अंग अंग सब हारि।
ताते सुधि है सावरी मूरति की लोचन भरि भरि वारि॥
रूप रास पैमित नहीं मानों केसें मिसे लो कन्हाई।
'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर मिलियै बहुर री माई॥

२४

हिलगिन कठिन है या मन की।
जाके लियै देखि मेरी सजनी लाज गई सब तन की॥
धर्म जाउ अरु लोग हँसो सब अरु गाओ कुल गारी।
सो क्यों रहे ताहि बिन देखे जो जाको हितकारी॥
रस लुब्धक निपख न छांड़त ज्यों आधीन मृग गानों।
'कुंभनदास' सनेह परम श्री गोवर्धनधर जानों॥*

२५

रूप देख नेना पल लागै नाहीं।
गोवर्धन के अंग अंग प्रति निरखि नेन मन रहत नही॥

*नोट—पद २३, २४ सीकरी के आने के पश्चात् बने (अ०छा०पृ०७

कहा कहौं कछू कहत न आवै चित्त चोरयो मांगवै दही।
'कुंभनदास' प्रभु के मिलन की सुन्दर बात सखियन सौं कही॥

२६

आवत मोहन मन जु हरयौ हौ।
ं ग्रह अपने सखु सौं बैठी निरखि वदन अम्बरा बिसरयो हौ॥
प निधान रसिक नंदनंदन निरखि वदन धीरज न धरयौ हौ।
कुंभनदास' प्रभु गोवर्धन धर अंग अंग प्रेम पियूष भरयौ हौ॥

२७

केते है जुग गे बिन देखें।
तरुण किशोर रसिक नँदनंदन कछुक उठति मुख रेखें॥
वह शोभा वह कांति वदन की कोटिक चंद विसेखें।
वह चितवन वह हास्य मनोहर वह नटवर वपु भेषें॥
श्याम सुन्दर संग मिल खेलन की आवत जिये अमेखें।
'कुंभनदास' लाल गिरधर बिन जीवन जन्म अलेखें॥*

२८

जो पै चौंप मिलन की होंय।
तौ क्यों रहै ताहि बिन देखें लाख करौ जिन कोय॥

---

१. पा० चास्यौ।

*नोट—पद २७. श्री गोसाईं जी के साथ द्वारिका जाने से पूर्व ग गया था। अ० छा० पृ० ७६

जो यह विरह परस्पर व्यापै जो कछु जीवन बनै ।
लौक लाज कुल की मर्य्यादा एकौ चित्त न गनै ॥
'कुंभनदास' प्रभु जाय तन लागी औरन कछु सुहाय ।
गिरिधरलाल तौहि विन देखे छिन छिन कलप विहाय ॥

२९

तुम्हारे मिलन विन दुखित गुपाल ।
अति आतुर व्रज सुन्दर प्यारे विरही वेहाल
सीतल चंद नयन भयो दाहत किरण कमल जनु जाल
चंदन कुसुम सुहाय घनसार लगन बढ़ी[1] ज्वाल
'कुंभनदास' प्रभु नव-घन तुम विन कनकलता मानों सूपी जीव या[2] का
अधरामृत वंशी सीचि लेउ तुम गिरि गोवर्धन लाल

३०

औरन कों समीप विछुरनों आयौ मेरी हिसा ।
अब कों जसोवे सुख अपने आली मोकों चाहत रिसा
ना जानों यह विधाता की गति मेरे आँक लिखे ऐसौ कोन रिसा
'कुंभनदास' प्रभु गिरधर कहत निस दिन रहज्यों चातक घन त्रिस

३१

अब दिन रात्रि पहार से भये ।
तब ते निघटत नाहिनि जब ते हरि मधुपुरी गयै ॥

पा० १. बड़ी । २. मां ।

यह जानियै विधाता जुग सम कीने जाम नये।
जागत जाग विहातन के ऐसें प्रीत पठयैं[1]॥
व्रजवासी अति परम दीन भये व्याकुल सोच लयै।
उन प्राण दुखित जलरुह गन दारुण हेम पयै॥
'कुंभनदास' विछुरत नँदनंदन बहुत संताप करे।
अब गिरधर विन रहत निरंतर नींद न नीर छयै॥

---

१. ठये।

खंडिता पद

१

स्याम सुन्दर रैन कहाँ जागे।
देखि विन गुण माल अधर अंजन भाल जावक लग्यो गाल पीक लागे[1] ॥
चाल डगमगी अति शिथिल अंग अंग सब, तोतरे बोल उर नखनि दागे।
गड्यो[2] कंकण पीठ, निपट विह्वल दीठ, शर्वरी लाल नहीं पलक लागे॥
कहिए सांच बात काहे जिय सकुचात कौन तिय जाके अनुराग रागे।
'दासकुंभन' लाल गिरधरण एते पर करत झूँठी सौंह मेरे आगे॥

२

साँझ जु आव कहि गए लाल भोर भये देखे।
गणत नक्षत्र नयन अकुलाने चारि प्रहर मानों युग ते विशेखे॥
कीन्ही भली जु चिन्ह मिटाये, अधरनि रंग अरु उर नख रेखे।
'कुंभनदास' प्रभु रसिक शिरोमणि गिरधर तुम्हरे कैसे लेखे॥

३

इतनी वार तुम कहाँ रहे।
सगरी रैन पथ चाहत चाहत नैन दुहे॥
'कुंभनदास' प्रभु भए ताही के वश जिनहीं गहे।
गिरधर प्रिय भले बोल निबाहे संध्या जु कहे॥

पा० १. पागे। २. गह्यो।

४

निशि के उनींदे मोहन नैन रसमसे ।
काहे को लजात कहहु धौं कहा लालन कहाँ बसे ॥
डगत चलत आलस जँभात हो बदन रेख देखियत बसन खसे ।
'कुंभनदास' प्रभु गिरिधर तुम भुज बंधन करि उरहि लाय कसे ॥

५

साँझ साचे बोल तिहारे ।
रजनी अनत जागि नँदनंदन आये हो निपट सवारे ॥
आतुर भये नील पट ओढ़े पीरे बसन बिसारे ।
'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर भले वचन प्रतिपारे ॥

६

तुम्हारे पूजिये पिय पाय ।
कैसी कैसी उपजत तुम पैं कहत बनाय बनाय ॥
असन अधर क्यों श्याम भये क्यों परे पट पलटाय ।
रुचिर कपोल पीक कहँ लागी उर जय-पत्र लिखाय ॥
गिरधरलाल जहाँ निसि जागे तहीं देहु सुख जाय ।
कुंभनदास प्रभु छाड़ो अटपटी अब तुम्हें को पतियाय ॥

७

कहो धौं कहाँ तुम रैनि गँवाई लाल अरुण उदय आये ।
कौन संकोच श्याम घन सुन्दर तमचुर बोलत उठि धाये ॥

आँखि देखि कहाँ साखि बूझिये रति के चिन्ह तन प्रकट लगाये।
'कुंभनदास' सुजान गिरधर काहे को दुरत पिय जानि पाये॥

८

कहो धों आज कहाँ बसे लाल भोर भये आये डगमगत पग।
खरे सकारे क्यों उठे मोहन बोलत तमचुर खग॥
काजर अधर, लटपटी पाग, उर विलुलित कुसुम माल, कुच पर खग।
अरुन नैन आलस जँभात पिय रैनि कियो जग॥
रति के चिन्ह तन प्रकट देखियत काहे को दुराव करत श्याम सुभग।
'कुंभनदास' प्रभु रसिक गिरिधर परे चतुर नागरी फग॥

९

ऐसी बातन लालन क्यों मन माने।
उतरु बनाय बनाय तासो कहिये जो यह न जाने॥
रति के चिन्ह प्रकट देखियत हैं कैसे दुरत दुराने।
'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर हो तुम खरे सयाने॥

फुटकर पद

१

हमारो दान दे री गुजरेटी।
नित उठि आवत जात[1] चोरि दधि बेचन आज अचानक भेटी॥
अति सतरात कैसे छूटेगी[2] बड़े गोप की बेटी।
'कुंभनदास' गिरधरन लाल सों भुज ओढ़नी लपेटी॥

२

नंदनंदन के अंक तें मुरली सुन्दर चतुर हरति।
नूपुर मुख मूँदि के अछन अछन पग धरनि धरति॥
कनक वलय कंकन भुजानि जुग उघे प्रकरति।
'कुंभनदास' गिरिधर के मुद्रित नैन देखति चकित मंद हास रस
नागन तें हरति॥

३

नागर नंद कुमार मुरली हरन[2] न जानी।

४

तेरे तनकी उपमा को देख्यो मैं विचारि के, कोउ नाहिंन भामिनी।
कहा बपुरो[1] कंचन कदली कहाँ केहरि, गज कपोत कुंभ पिक,
कहाँ चन्द्रमा और कहाँ बपुरी दामिनी ॥
कहाँ कुरंग, शुक, बंधूक, केकी, कमल,
या आगे श्री देखिये सवनि कामिनी।
मोहन रसिक गिरिधरनि कहत राधा,
परम भावति तू है 'कुंभनदास' स्वामिनी ॥

५

कुंवरि राधिका तव सकल सौभाग्य सीमा,
या वदन पर कोटि शत चन्द्र वारों।
खंजन कुरंग शतकोटि नयननि ऊपर,
वारनें करत जिय में विचारों ॥
कदली शत कोटि जंघन ऊपर,
सिंह शत कोटि कटि पर न्योंछावर उतारों।
मत्त गज कोटि शत चाल पर,
कुंभ शत कोटि इन कुचन पर वारि डारों ॥
कीर[2] शत कोटि नासा ऊपर कुन्द शत कोटि,
दसननि ऊपर कहि न पारों।

पा० १. बपु सों। २. शीर।

पक कन्दूर बन्धूक शत कोटि अधरनि,
ऊपर वारि सचि[1] गर्व टारौं ॥
नाग शत कोटि वेणी ऊपर, कपोत शत कोटि,
ग्रीवा पर वारि दूरि सारौं।
कमल शत कोटि कर युगल पर वारने,
नाहिन कोउ लोक उपमा जु धारौं ॥
'दास कुंभनि' स्वामिनी सुनख-शिख अंग,
अद्भुत, सुठान कहाँ लगि सँभारौं।
लाल गिरवरधरण कहत मोहि तोलौं[2],
सुख जोलौं वह रूप क्षण क्षण निहारौं ॥*

६

सुनि गोपाल एक ब्रज सुन्दरि तुमहिं मिलन को बहुत[3] करति।
बार बार मोसों कहति रहति है, हैं वाके जीय वोहोत अरति ॥
तुमहिं जपति रहति निसि वासर और बात कछु जिय न धरति।
स्याम सरूप चहुँटि चित लाग्यो लोक लाज तें नाहिं डरति ॥
होत न चैन वाहि एको छिनु अति आतुर चित विरह मरति।
'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर तुम कारन नव जोवन गरति ॥

पा० १. इन्द्राणी। २. तोहि। ३. जोहति।

*नोटः—पद ५. यह पद वृन्दावन के महंत हरिवंश भर्त के प्रार्थना करने पर गाया गया था। (श्र० ला० पृ० ८३.)

७

बिलगु जिन मांनो री कोउ हरि को ।
भोरहि आवत नाच नचावत खात दही घर घर को ॥
प्यारो प्राण दीजे जो पइये नागर नंद महर को ।
'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर रसिक राधिका वर को ॥

८

सखी तेरे चपल नैन अरु बड़े बड़े तारे ।
हरि मुख निरखन मात पटनि में निसि दिन रहत उघारे ॥
जो आगे पंथ रोकते न श्रवण तो जानों कहां चले जाते अपटारे ।
'कुंभनदास' प्रभु गिरधरण रसिक ए कृपा रस सींचे अति सुख बाढ़े भारे ॥

९

तुम नीके दुहि जानत गैया ।
चलिये कुँवर रसिक नँदनंदन लागों तिहारे पैया ॥
तुमहि जानि कर कनक दोहनि घर तें पठई मैया ।
निकटहि है यह खरिक हमारो नागर लेऊँ बलैया ॥
देखत परम सुदेश लरिकई चित चुहट्यो सुन्दरैया ।
'कुंभनदास' प्रभु मानि लई रति गिरि गोवर्धन रैया ॥

१०

आजु दधि देखों तेरो चाखि ।
कहि धों मोल किते बेचेगी सत्य वचन मुख भाषि ॥

जो तू कहे सोई हौं देहौं संग सखा सब साखि।
जो न पत्याइ ग्वालि तूँ हमको कंठश्री ले राखि॥
ले चले घर दाम देन को जनायो नेंकु कटाछि।
'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धन धर रस बस लियो ततांछि॥

११

बालक ही ते चोरी एहो जानत।
माखन दूध धरेव उन छाड़्यो बहोरि अचानक भाजन भानत
अबहीं लाल मेरो सर्वस मूस्यो अरु उलटे तुम कैसी बानत।
'कुंभनदास' प्रभु संग लागी डोलति गोवर्धनधर अजहुँ न मानत॥

१२

देखो री माई कैसी हे ग्वालनि उलटी रई मथनीया बिलोवे।
बिनु नेनी कर चंचल पुनि पुनि नवनी ते टकटोवे[१]॥
निरखि स्वरूप चोहटि चित लाग्यो एक टक गिरधर सुख जोवे।
'कुंभनदास' चितै रही अकबक औरें भाजन धोवे॥

१३

भक्तन को कहा सीकरी काम।
आवत जात पन्हैया टूटी बिसर गयो हरिनाम॥
जाको मुख देखे दुख लागै ताको करन परी परनाम।
'कुंभनदास' लाल गिरधर बिन यह सब झूठौ ध्याम॥

पा० १. कर टोवे।

नोट—पद १३ देशाधिपति के सीकरी में बुलाने पर यह पद गाया था।

जमुना पद

१

यमुने रसखानि को शीस नाऊँ ।
ऐसी महिमा जानि भक्त की सुखदानि जोई मांगों सोई पाऊँ ॥
पतित पावन करण नाम लीन्हें तरण, दृढ़ि करि गहे चरण कहूँ जाऊँ ।
'कुंभनदास' गिरधरण मुख निरखते एही चाहत नहीं पलक लगाऊँ ॥

२

यमुना अगणित गुण गने न जाई ।
यमुना तट रैन इतने होय बैन इनके सुख देन की करूँ बड़ाई ॥
भक्त माँगत जोई देत तेही छिन सौई ऐसी करे कौन प्रण निभाई ।
'कुंभनदास' गिरधरण मुख निरखते कहो कैसे करि मन अघाई ॥

३

यमुना पर तन मन प्राण वारों ।
जाकी कीर्त्ति विशद कौन अब कहि सके ताहि, नैनन तें नेकु न टारों ॥
चरण कमल इनके ज़ो चिंतत रहों निसिदिन नाम मुख तें उचारों ।
'कुंभनदास' कहे लाल गिरधरण मुख इनकी कृपा भई तो निहारों ॥

४

भक्त इच्छा पूरण यमुना जो करता ।
विनहि माँगे देत कहाँ लो कहूँ हेत जैसे काहू को कोऊ होय धरता ॥
यमुना पुलिन रास व्रज वधू लिए, पास मन्द मन्द हास मन जो हरता ।
कुंभनदास जो प्रभु को मुख देखत एहि जिय लेखत यमुना जो भरता ॥

नंददास पदावली

समुदाय-कीर्तन

१

राम कृष्ण कहिये निसि भोर ।
वे अवधेस धनुष धरे वे[1] व्रज जीवन माखन चोर ॥
उन के छत्र चमर सिंहासन भरत शत्रुहन लक्ष्मण जोर ।
उनके लकुट मुकुट पीताम्बर गायन के संग नन्द किसोर ॥
उन सागर में सिला तराई उन[2] राख्यो गिरधर नख कोर ।
'नंददास' प्रभु सब तज भजिये जैसे निरतत चंद चकोर ॥

२

नंद सदन गुरुजन की भीर ता में लालन वदन नीके देख न पाऊँ ।
विनु देखे जिय अकुलाइ जाय दुख पाय
जदपि बड़ेई खन उठि उठि आऊँ ॥
ले चल री मोहि यमुना के तीर, जहाँ बलवीर,
सुन्दर वदन देखि नयन सिराऊँ ।
'नंददास' प्यासे को पानी पिवाय, ले जिवाय,
जिय की तू जाने तोसों कहा हौं जनाऊँ ॥

पा०—१. ये । २. इन ।

३

ठाड़ो री खरी माई कौन को किसोर ।
साँवरे बरन, मनहरन वंशीधरन,
काम करन कैसी गति ओर ॥
पौन परसि जात चपल होत देखि
पियरे पटको चटकीलो छोर ।
सुभग साँवरी छोटी घटा तें निकसी
आवे छबीली छटा को जैसो छबीलो ओर ॥
पूछति पाहुनी ग्वारि हा हा हो मेरी आळी
कहा नाम को है ? चितवति को चोर ?
'नंददास' जाहि चाहि चक चौंधी आइ जाइ
भूल्यो री भवन गमन भूल्यो रजनी भोर ॥

४

चंचल ले चली री चित चोर ।
मोहन को मन यों वस कर लियो ज्यों चकरी संग डोर ॥
जो लों न देखत तब मूरति तो लों पलक न लागत निमिषन ओर ।
'नंददास' प्रभु प्रेम मगन भये नागर नंद किसोर ॥

५

आज अरुन अरुन डोरे लाल के दृगनि लागत हैं भले ।
बंधन परे पग न अलि मानो कंज दलनि पर चले ॥

लाल की पगिया में न समात कुटिल आलस झिले।
'नन्ददास' मधुप पुंज मानों सोवत तें कलमले॥

६ ※

हे कृष्ण नाम जब ते मैं श्रवन सुनो री।
तब ते भूली भवन हौं तो बावरी भई,
भरि भरि आवे नैन चित न रंचक चैन,
मुखहु न आवे वैन, तन की दसा कछु और भई॥
जैतेक नेम धरम कीने री बहु विधि,
अंग अंग भई श्रवणमई री।
'नंददास' जाके श्रवण सुने यह गत,
माधुरी मूरति है धौं कैसी दई री॥

७

लाल संग रति मानी मैं जानी,
कहे देत नैना रंग भीए।
चंचल अंचल में न समात इतरात,
रूप उदधि मानों मीन महावर धोए॥

※ नोट—पद ६, जब तुलसीदास जी ने कहा कि ऐसा कौन सा पाप है जो रामचन्द्र जी का नाम जपने से न जाय। तो उत्तर में नंददास जी ने यह पद कहा। (श्र० छा० पृ० १००—१)

पलक पीक जगमगात दग मानिक,
मानों जराए लीने प्रेम पोए।
'नंददास' प्रभु पिय के सुख सुख के,
लोभ लालच जानति हौं निसा नेक न सोए॥

८*

जोगी रे बसो तो बसो गोवर्धन,
नगर बसो तो मथुरा धाम।
सरिता बसो तो बसो जमुना तट,
रसना रटो तो जपो कृष्ण नाम॥

---

*नोट १, पद ८—जो गिरि रुचै तो बसो श्री गोवर्धन
गाम रुचे तो बसो नंदगाम।
नगर रुचे तो बसो श्री मधुपुरी
सोभासागर अति अभिराम॥
सरिता रुचे तो बसो श्री यमुना तट
सकल मनोरथ पूरण काम।
नंददास कानन रुचे तो
बसो भूमि वृन्दावन धाम॥ अ० छा० पृ० १००

नोट २—तुलसीदास जी ने नंददास जी से आकर ब्रज में यह कहा कि यदि तुम्हें गाँव अच्छा लगे तो अयोध्या में रहो, पुरी रुचे तो काशी रहो, पर्वत अच्छा लगे तो चित्रकूट में रमो और यदि वन भावे तो दण्डकारण्य में निवास करो इसके उत्तर में नंददास जी ने यह पद कहा।
अ० छा० पृ० १००

नंद के नन्दन पति हैं हमारे,
पुष्ट-लीला मारग है हे घनस्याम ।
'नंददास' जदुनाथ आस एक,
चरन कमल लह्यो विश्राम ॥

९

एरी तेरी सेज की मुसक्यान मोहन मोह लीनो ।
जाको जस रटत मुनि सजनी सो तेरो आधीनो ॥
औरकी संवार के घर किए रहत है आपन पो तज दीनो ।
'नंददास' वाको चितवन में टोना सो कछु कीनो ॥

१०

तू तो नेक कान दे सुन्दरी ! बाँसुरी में बजावै तुव नाम ।
पुनि पुनि राधे राधे प्राणेश्वरी वह गावै घनस्याम ॥
तुव तन पर सीजो पन जात ताकों उठि परिरंभन सुख को धाम ।
'नंददास' एसे पिय सों क्यों रूठिये री ! चल पूरिये मधु-रिपु काम ॥

११

ए हां की हटकि हटकि गई ठठकी ठठकी रही,
गोकुल की गली सब साँकरी ।
जारी आटरी झरोखनि मोखनि उझकत,
दौरि दौरि ठौर ठौर तें परत काजरी ॥
चम्पकलि कुन्दकलि बरषत रस भरी तामें,

पुनि देखियत लिखे से आँकुरी।
'नंददास' प्रभु जाके द्वारे जाय ठाढ़े होत,
तेई तें बचन माँगत लटकि लटकि जात
काहूँ से 'हाँ' करी काहूँ 'ना' करी ॥

१२

केलि कला कमनीय किशोर उभे रस पुंजनि कुंज के नेरे।
हास विलास विनोद करी चलि आली केतो सुख है हेरे ॥
ली के फूल प्रिया गहि पिय पै डारे की उपमा यो मन मेरे।
नंददास' मानों साँझ समय बगमाल तमाल को जात बसेरे ॥

१३

रे मनाइवो को नीको री लागत मान,
रह्यो प्यारी तो लौं लाल ले आउ री।
गौर को हस्यो मुख, तेरी तो रुखाई आली,
सोरह कला को पून्यो चन्द बिलखाउ री ॥
आँगले भरत डग पाछले परत पग,
ऐसी छवि छाड़ि किधों पाऊँ के न पाऊँ री।
'नंददास' प्रभु प्यारी दोऊ तो कठिन भई,
लाडली मनाऊँ कैधों लाल ने रिझाऊँ

१४

आज मेरे धाम आए री नागर नंद किसोर।
धन दिवस धन रात री सजनी धन भाग सखि मोर॥
मंगल गावो चौक पुरावो बन्दनवार धावो पौर।
'नंददास' प्रभु संग रसबस कर जागत कर दूँ भोर।

१५

ए री इन बाँसुरिया माई मेरो सरवस चुरायो,
हरि तो चुरायो हतो अकेलो चीर।
असनबसन अरु नैन श्रवन सुख लोक लाज कुल धरम धीर॥
अधर सुधा सरवस जु हमारो ताहे निधरक पीवत रह गंभीर।
'नंददास' प्रभु को हियो कहा कहूँ यह प्रेम बीर॥

१६

भोर ही छवि सो प्रवीन बीन बजावति ठाढ़ी।
ललित राग अनुराग ललित गति
ललित गुण आढ़ी॥
लाडिली लाल महल में पोढ़े तिन्हें
जगाय रिझायवे को परम प्रीति गाढ़ी।
'नंददास' दम्पति छवि निरखत
अति उत्कण्ठा बाढ़ी॥

१७

यमुना पुलिन सुभग वृन्दावन नवल लाल गोवर्धन धारी ।
नवल कुंज नव कुसमित दल नव नव वृषभानु दुलारी ॥
नवल हास नव नव छवि क्रीड़त नवल विलास करत सुखकारी।
नवल श्री विट्ठलनाथ कृपावल 'नंददास' निरखत बलिहारी ॥

खण्डिता पद

१

ढीले ढीले पग धरत ढीली पाग ढरकि रही,
ढीले से ढहे से ऐसे कौन पै ढहे हो।
गाढ़े जु पिय हिय के पथि, ऐसी गाढ़ी कौन तिय,
गाढ़े गाढ़े भुजन सों गाढ़े कर गहे हो॥
लाल लाल लोचन उनींदे लागि लागि जात,
साँची कहो पिय हों तो लाल लहे हो।
'नंददास' प्रभु साँची क्यों न बोलो भयो प्रात,
कहो बात प्यारे तुम रात कहाँ रहे हो॥

२

जागे हो रैन सब तुम नैना अरुन हमारे।
तुम कियो मधुपान घूमत हमारो मन काहे तें जु नन्द दुलारे॥
नखक्षत प्रिय अंग पीर हमारे उर कारन कौन प्यारे।
'नंददास' प्रभु न्याय स्यामघन बरसे अनत जाय हम पर झूम झुमारे॥

३

आलस उनींदे नैन लाल तिहारे, कहाँ तुम रैन बिताए।
पीक कपोल देखियत है प्रिय अधरनि अंजन लखाए॥
जावक भाल उर बिन गुन माल, हृदय नख चिह्न दिखाए।
'नंददास' प्रभु बोल निबाहे भले भोर होति उठि धाए॥

४

अनत रति पान आए हो जु मेरे घर,
अरसीले चैन नैन तोतरात।
अंजन अधर धरे सोहे पीक लीक तोहे,
काहे को लजात झूठी सौंहे खात॥
पेचहु सँवारत पेचहु न आवत,
एते पर तिरछी भौंहैं चितवत गात।
'नंददास' प्रभु प्यारी हिय में बसत,
यातें भूल नाम वाही को निकसि जात॥

फुटकर

१

जगावति अपने सुत को रानी ।
उठो मेरे लाल मनोहर सुन्दर कहि कहि मधुरी बानी ॥
माखन मिश्री और मिठाई दूध मलाई आनी ।
छगन मगन तुम करेहु कलेऊ मेरे सब सुखदानी ॥
जननि वचन सुनि तुरत उठे हरि कहत बात तुतरानी ।
'नंददास' कीन्हों बलिहारी जसुमति मन हरषानी ॥

२

चिरइया चुह चुहानी सुनि चकई की बानी,
कहति जसोदा रानी—जागो मेरे लाला ।
रवि की किरन जानि कुमुदनी सकुचानी,
कमलनि बिकसानी दधि मथै बाला ॥
सुबल श्रीदामा तोको उज्ज्वल बसन लिए,
द्वारे ठाढ़े टेरत बाल गोपाला ।
'नंददास' बलिहारी उठि बैठो गिरधारी सब,
मुख देख्यौ चाहें लोचन बिसाला ॥

३

आगे आगे रथ भगीरथ जू को चल्यो जात,
पाछे पाछे आवति तरंग रंग भरी गंग।
झलमलात अति उज्ज्वल जल की जोति,
अवनि खनि मानो सीस भरे मोती मंग ॥
जाय परसे हैं भूप कव के भस्म रूप ठौर ठौर,
जागि उठे ऐसे होत सलिल संग।
'नंददास' मानो अग्नि के जन्त्र छूटे ऐसे,
सुर-पुर चले धरे देव अंग ॥

४

देखो देखो री नागर नट निरतत कालिन्दी तट,
गोपिन के मध राजे मुकुट लटक।
काछनी किंकनी कटि पीतांबर की चटक,
कुंडल किरन रवि रथ की अटक ॥
ततथेई ततथेई शब्द सकल उघट,
उरप तिरप परैं पग की पटक।
रास में राधे राधे रटत रहे एक टक,
'नंददास' गावैं तहाँ निपट निटक ॥

जमुना पद

१

भाग सौभाग जमुना जो देरी ।
बात लौकिक तजे, पुष्टि जमुना भजे,
लाल गिरिधरन को ताहि वर मिलेरी ॥
भगवती संग करि बात उनकी ले,
सदा सान्निध्य रहे केलि में री ।
'नंददास' जो जाहि वल्लभ कृपा करे,
ताके जमुने सदा बस जो हेरी ॥

२

भक्त पर करि कृपा जमुना ऐसी ।
छाँडि निज धाम विश्राम भूतल कियो,
प्रकट लीला दिखाई जो तैसी ॥
परम परमारथ करत है पवनि को,
रूप अद्‌भुत देत आप जैसी ।
'नंददास' जो जानि दृढ़ चरन गहै,
एक रसना कहा कहूँ विसेसी ॥

३

नेह कारन जमुना प्रथम आई ।
भक्त की चित्तवृत्ति सब जानहिं ताहिं ते,
अति ही आतुर जो धाई ॥
जैसी जाके मन हती मन इच्छा ताहि,
तैसी साध जो पुजाई ।
'नंददास' प्रभु नाथ ताहि पर रीझत,
जमुना जू के गुन जो गाई ॥

४

जमुने, जमुने, जमुने जो गावो ।
सेस सहस्र मुख गावत निसि दिन,
पार नहीं पावत ताहि पावो ॥
सकल सुख देन हार, ताते करो उचार,
कहत हौ बार बार, भूलि जिनि जावो ।
'नंददास' की आस जमुना पूरी करी,
ताते कहूँ घरी घरी चित लावो ॥

गुरु सम्बन्धी पद

१

प्रकटित सकल सृष्टि आधार, श्रीमद्वल्लभ राजकुमार।
धेय सदा पद अंबुज सार, अगनित गुन महिमा जु अपार ॥
धरमादिक द्वारे प्रतिहार, पुष्टि-भक्ति को अंगीकार।
श्री विट्ठल गिरिधर अवतार, नंददास कीन्हों बलिहार ॥

२

प्रात समय श्री वल्लभ सुत को उठत ही रसना लीजिये नाम।
आनंदकारी मंगलकारी, अशुभ हरण जन पूरण काम ॥
इह लोक परलोक के बंधु, को कहि सकत तिहारे गुण ग्राम।
'नंददास' प्रभु रसिक सिरोमनि राज करो श्री गोकुल सुखधाम * ॥

३

प्रात समय श्री वल्लभ सुत को पुन्य पवित्र विमल जस गाऊँ।
सुन्दर सुभग वदन गिरिधर को निरखि निरखि दृग दृगन सिराऊँ ॥

* नंददास जी ने दीक्षित हो जाने के पश्चात श्री गोसाईं जी का प्रथम दर्शन करने पर गाया था। (अ० छा० पृ० ६६)

मोहन मधुर वचन श्री मुख के श्रवणन सुनि सुनि हृदय बसाऊँ।
तन मन प्रान निवेदि वेद विधि यह अपुन पो हौं सुफल कराऊँ॥
रहौं सदा चरनन के आगे महा प्रसाद को जूठन पाऊँ।
'नंददास' यह माँगत हौं श्री वल्लभ कुल को दास कहाऊँ॥

४

श्री गोकुल जुग जुग राज करो।
या सुख भजन प्रताप ते छन इत उत न टरो॥
पावन रूप दिखाई प्रानपति पतितन पाप हरो।
विस्व विदित दीन गति प्रेत निज गति नियम धरो॥
श्री वल्लभ कुल कमलनि दीपक जस मकरन्द भरो।
'नंददास' प्रभु षट्गुण सम्पन श्री विट्ठलेश वरो॥

चतुर्भुजदास पदावली

समुदाय पद

१

भोर भावतो श्री गिरधर देखों ।
सुभग कपोल लोल लोचन छवि निरखि के नैन सुफल करि लेखों ॥
नख सिख रूप अनूप विराजत अंग अंग मन्मथ कोटि विसेखों ।
'चतुर्भुज' प्रभु रस रास रसिक को बड़े भागवल एकटक पेखों ॥

२

स्याम सुन्दर भोर भवन आगे होय आवे ।
कबहुँ मुख मंद हास मेरे सखि सुख की रास,
कबहुँ बैन कबहुँ नैन सैनहीं जनावे ॥
मेरो दधि मथन बार उनकी उठनि सवार,
रई नेत माट समेत सकल हों बिसरावे ।
'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधरन अंग अंग कोटि मदन,
मूरति चलति बन को, तन रु मन कों चिते ही चुरावे ॥

३

ऐसो ही धरो री दधि बिना मथन किए,
देहु जसुमति नेकु अपनी रई ।
अपनहूँ ढूँढि हारी, तैसी निसि अँधियारी,
पाऊँ न भवन माँझ कहाँ धों गई ॥
कछु न जिय सुहाई, याही तें आतुर आई,
लोनी के लालच जिय चटपटी भई ।
दिना चारि करों काज, बाढ़े नंद जू को राज,
जौ लों बहुरि हों ल्याऊँ नई ॥
'चतुर्भुजदास' रानी, मेरी अति चोप जानी,
ह्वै प्रसन्न मनि महिमा आनि दई ।
भोर ही देऊँ असीस, बार जिनि खिसो सीस,[1]
तिहारे गिरिधर की हौं बलि बलि गई ॥

४

नैन भरि देखों गिरिधर को कमल मुख ।
गल आरति करों प्रात ही वारत निरखत होत परम सुख ॥
चन बिसाल छवि संचि हिय में,
धरों कृपा अवलोकन चारु भृकुटनि रुख

१ मैं आशीर्वाद दूँ कि तुम्हारे सिर का बाल भी बाँका न हो ।

'चतुर्भुजदास' प्रभु आनंद निधि रूप,
निरखि करौं दूर सब रैन को विरह दुख।

५

मंगल आरती गोपाल की।
नित उठि मंगल होत निरखि मुख चितवन नैन विसाल की।
मंगल रूप स्याम सुन्दर को मंगल छवि भृकुटी भाल की
'चतुर्भुजदास' सदा मंगलनिधि बानिक गिरधर लाल की।

६

जयति आभीर नागरी प्राणनाथे।
जयति व्रजराज भूपन जसुमति,
ललित देत नवनीत मिश्री सुहाथे॥
जयति प्रात प्रभात दधि खात,
श्रीदामा संग अखिल गोधन वृन्द चरे साथे
ठौर रमनीक वृन्दा विपिन सुभस्थल,
सुन्दरी केलि गुन गूढ़ गाथे॥
जयति तरणिजा तट निकट रास मंडल,
रच्यो तत्त ता थेइ थेई थेई वत्तताथे।
'चतुर्भुजदास' प्रभु गिरिधरण बहुरि अब,
श्री विट्ठल प्रकट व्रज कियो सनाथे॥

७

सुभग सिंगार निरखि मोहन को ले दर्पन कर पियहि दिखावे।
आपुन नेक निहारिये वलि जाऊँ आज की छवि कछु कहत न आवे ॥
भूपन रहे ठाँव ठाँवहिं[1] फवि अंग अंग अद्भुत चितहि चुरावे।
रोम रोम पुलकित तन सुन्दर फूलन रचि रुचि पाग बनावे ॥
अंचल फेरि करत न्योछावर तन मन अति अभिलाप बढ़ावे।
'चतुर्भुज' प्रभु गिरधर को रूप सुधा पीवत नैन पुट तृप्ति न पावे ॥

८

आजु को शृंगार सुभग साँवरे गोपाल को,
कहत न वनि आवे देखे ही वनि आवे।
भूपण सब भाँति भाँति, अंग अंग अद्भुत कांति,
लटपटी सुदेस पाग चित्त को चुरावे ॥
मकर कुंडल तिलक भाल, कस्तूरी अति रसाल,
चितवनि लोचन विसाल कोटि काम लजावे।
कंठ श्री वनमाल फेंटा करि छोरन को निरखि[2],
त्रिभुवन तिय को धीरज मन न आवे ॥

नोट-पद ७. एक दिन गोवर्धननाथ जी के शृंगार के दर्शन च० दा० जी ने किए। उस समय श्री गोसाईं जी आरती दिखा रहे थे। उसी समय यह पद गाया गया। (अ० छा० पृ० १०६)

१. पा० वसन रहे ठा ठाय। २. पा० चीरा।

मेरे संग चलि निहार कुंज महल बैठे हरि,
हित की चित बात कहूँ जो तेरे जिय भावे।
चतुर्भुज प्रभु गिरिवरधर कोटि मदन मूरति बड
भागि[1] ताहि गिनों जो जात ही लपटावे ॥

९

माई री आजु और काहि[2] और दिन प्रति औरहि और[3]
देखिये रसिक गिरिराज धरन।
नित प्रति नव छवि बरने, सो कौन रुचि,
नित ही श्रृंगार बागे बरन बरन ॥
स्याम तन[4] अंग अंग सोहत[5] कोटि अनंग,
उपजी सोभा तरंग विस्व के मनहरन।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर को रूप सुधा,
नैन पुट पान कीजे जीजे रहीये[6] सदा सरन ॥

१०

रतन जटित कनक थाल मध्य सोहैं दीपमाल,
अगरादिक चंदन अति बहु सुगन्ध माई।

---

१. पा० वडभागिनी।

२. पा० काल। ३. पा० छिन छिन प्रति और और। ४. पा० नैन।
५. पा० मोहन। ६. पा० मेरे हिय।

पद ९.—प्रमाणित करता है कि भगवल्लीला नित्य है।

घननननन घन घटा घोर झननन झानर[1] टकोर,
तननन ततताथेई थेई करति है एकदाई ॥
तननन नन तान पान राग रंग स्वर बंधान,
गोपी जन गावें गीत मंगल बधाई ।
चतुर्भुज गिरिधरन लाल आरती बनी रसाल,
वारत तन मन प्रान जसोदा नन्दराई ॥

११

स्याम सुन्दर प्रान प्यारे छन छन जिनि होहु न्यारे ।
नेक की ओट मीन ज्यों तलफत त्यों तलफत नैनन के तारे ॥
मृदु मुसकानि बंक अवलोकनि डगमग चलनि सहज में सुढारे ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर बानक पर कोटिन[2] मन्मथ वारे ॥

१२

जागत जागत रैन बिहानी ।
कहि गये साँझ आवन मेरे घर, बसे अनत रति मानी ॥
उर बिच नख क्षत प्रकट देखियत, यह सोभा अति बानी ।
भाल महावर अधरनि अंजन पीक कपोल निसानी ॥
निसि मग जोवत बीती मोकों, आये प्रात, यह जानी ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन सिधारो तहाँ जो तुम्हरे मनमानी ॥

१. पा० झालर । २. पा० कोटिक ।

१३

नींद न परी रैन सिगरी मुँदरिया मेरी जु गई ।
याही ते झटपटात उठि आई, चटपटी जिय में बहुत भई ॥
तुम्हरो कान्ह पनघट खेलत हो, बूझहु महरि ! हँसि होय लई ।
विसरत नहीं नगीनो चोखो, जियते टरत न झलक नई ॥
'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर चलो मेरे घर, देहों दूध दधि चाहो जितई ।
मेरी व जीवनि मोहि को देहो तब चरनन की चेरि ह्वै हों जुग बितई ॥

१४

आजु सिगार निरखि स्यामा को नीको बनो स्याम मन भावत ।
यह छवि तनहि लिखायो चाहत, कर गहि के नख चन्द दिखावत ॥
मुख जोरे प्रति-बिम्ब विराजत निरखि निरखि मन मे मुसिकावत ।
'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर श्री राधा अरस परस दोउ रीझि रिझावत ॥

१५

महा चित चोर नैन की कोर ।
लाज गई घूँघट पट विसरयो तज चितए इहि ओर ॥
वे सखी सिंह द्वारे नित ठाडी हौ खरिक उठी चली भोर ।
देके सैन मैन रस भारी नागर नंद किसोर ॥
कमल मीन मृग खंजन दे न उपमा को जोर ।
'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधर मुख विधु मेरी अँखियाँ भई हैं चकोर ॥

१६

एकहि आंक जए गोपाल ।
अब यह तान जाने नहीं सखी और दूसरी चाल ।।
मात पिता पति बंधु वेद विधि तजे सबे जंजाल ।
श्याम स्वरूप चित में चुभ्यो परि बीते जो बहुकाल ।।
गहने मोतिन तोरि जबै हसि चितए नैन विसाल ।
'चतुर्भुजदास' अटल भये उर घट परसे गिरधरलाल ।।

१७

तेरे माई लागत हौं री पैयाँ ।
एक टक बात कहो मोहन की आली री लेहुँ बलैयाँ ।।
या गोकुल विधि से दिन कीने आप चरावत गैयाँ ।
निघटा निघटत नहीं सजनी घड़ी घड़ी जुग भैयाँ ।।
छिनु ब्रज तें बाहर ह्वै बूझत जाय लुगैया ।
गोरज छुरित अलकहु देखो आवत कुँवर कन्हैया ।।
कछु न सुहाय ताहि बिनु देखे सुत पति पिता न मैया ।
'चतुर्भुज' प्रभु देखे ही जीजे श्री गोवर्धन रैया ।

खंडिता पद

१

सोभित सुभग लटपटी पाग भीने रसिक प्रिया अनुराग।
कुंकुम तिलक अलक सेंदुर छबि अरुन नयन घूमत निसि जाग॥
कछु जंभात उर माल मरगजी पीक कपोल अधर समि दाग।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर नीके लागत आलस घम सब अंग विभाग॥

२

भोर तमचुर बोले दीनों जू दरसना।
आतुर ह्वै उठि धाय डगमगात[1] चरण आए,
आलस[2] में नैन बैन अटपटी[3] रसना॥
सन्ध्या जू कहि सिधारे बचन[4] जिय में,
सँभारे सकुचि के मंद मंद प्रकटित दसना।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरण सिधारो तहां,
जहाँ रति रंग रस लपटाए वसना॥

पा० १ डगेत। पा० २ आलसमय। पा० ३ अटपटे। पा० ४ वन।

३

झूमत मत्त गज ज्यों चलत डगमगे।
बतियाँ कहत सैन, मुख न आवत बैन,
आलस उनींदें नैन सोभित रंगमगे॥
नागर नंद किसोर, नीकी छवि आए भोर,
अंग अंग रति रंग चिह्न जगमगे।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर नहीं लागे पलक,
चारि याम जीति काम रहे जू डगमगे॥

४

आजु छवि देत नैन आलस भरे रंगमगे।
रैन पलक न परी सुरत रन जय करी,
भोर आए लाल धरत पग डगमगे॥
तन और गति भाँति कहत कहि न जाति,
कांति अद्भुत सकल अंग अंग जगमगे॥
चतुर्भुज गिरधरन भली करी पलटि आए,
बसन सोंपे मिले सगमगे।

५

भोर डगमगात पग जीत्ति मन्मथ चले।
सकल रजनी जगे नैन नहीं पल लगे,
असन आलस चलत नैन लागत भले।

करिव नागर नटत चिन्ह प्रकटित करत,
वसन आभूषन सुरति रन दलमले।
'चतुर्भुजदास' प्रभु गिरिधरन छवि,
वढ़ी अधर काजर कुंकम अंग अंग रले[1]॥

६

डगमगात आए नटनागर।
कछु जँभात अलसात भोर भए अरुन नैन घूमत निसि जागर॥
रसिक गोपाल सुरति रन को जस सकल चिन्ह लाए उर कागर।
'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधरन कुंज गढ़ रति पति जीत्यो रस सुखसागर॥

७

जैये तहाँ जहाँ रैन जागे।
वनी विन गुन माल ओठ अंजन,
भाल सेंदुर लग्यो गंड पीक पागे॥
आरक्त नैन अति सिथिल सव अंग,
गति डगमगत रात नहिं पलक लागे।
चपल चतुर दीठि उपटि कंकन पीठ,
देखियत उर माँझ नखन दागे॥
सकल ब्रज तियन में कौन सी नारी,
वह जाके तुम लाल अनुराग रागे।

१. पा० चले।

'चतुर्भुजदास' प्रभु गिरिधरण काहे को,
करत झूठी सौंह मेरे आगे ॥

८

भले आए भोर गिरिवरधरन ।
अरुन नैन जँभात आलस धरत डगमगे चरन ॥
पाग लटपटी पलटि परे पट अटपटे आभरन ।
शिथिल अंग अंग सबहि देखियत निसा के जागरन ।
नव तिया संग प्रहर चारो पलन न पाए परन ।
'चतुर्भुज' प्रभु जीति रति रण कियो रतिपति शरन ॥

९

लाल रसमसे नैन आजु निसा जागे ।
अति विसाल अरसात अरुन भये रतिं रन के रंग पागे ॥
सुन्दर स्याम सुभगता अटपटी अंग अंग नखक्षत दागे ।
मानहु कोपि निदरि सम्मुख सर साथ भए अरि अगे ॥
'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधरन अधिक छवि वंदन भृकुटि लागे ।
मानहु मन्मथ चाप भेंट धरि रह्यों जोरि कर आगे ॥

१०

मन मृग बेधो मोहन नैन बान सों ।
गूढ़ भाव की सैन अचानक तकि तान्यो भृकुटी कमान सों ॥

प्रथम नाद बल घेरि निकट लै मुरली सप्तक सुर बंधान सों।
पाछे बंक चितै[1] मधुरे हँसि घात करी उलटी सुठान सों॥
चतुर्भुजदास पीर पातन की मिटत न औषध आन सों।
ह्वै है सुख तब हीं उर अन्तर आलिंगन गिरधर सुजान सों॥

११

आलस उनींदे नैन घूमत आवत,
मूदे अधिक नीके लागत अरुन बयन।
जाने हों सुन्दर स्याम रजनी के चारों,
जाम नेकहु न पाए मानो पलक परन॥
अधरन रंग रेखा उर[2] ही चित्र विशेष,
सिथिल अंग डगमगत चरन।
चतुर्भुज कहाँ बसन[3] पलटि आए,
साँची कहो गिरिराजधरन॥

१२

भोर भए आए लाल धरत पग डगमगात।
पाग लटपटी सीस विराजत,
नैन उनींदें गति झाँपि जात॥
अधरन अंजन पीक कपोलन,
नख के चिन्ह देखियत गात।

---

१ पा० व्यंगतें। २. पा० ओर। ३. पा० बसत।

चतुर्भुजदास प्रभु गिरिधरन भले,
तुम आए हो मोहि देखावत ग्रात ॥

१३

आवति भोर भये कुंजवन तें,
कहुँ कहुँ अरुझे कुसुम केस में।
रति रंग रस भीनी, सोहे सारी तन झीनी,
भूपन अटपटे, अंग अंग छवि देखियत सुदेस में ॥
ओप में ओप भई, विरहज ताप गई,
शरद चन्द नहिं गनत लेस में ॥
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर संग निसा जागी,
जुवति सिरोमनि घोप देस में ॥

फुटकर

१

उठो हो गोपाल लाल दुहो धौरी गैय' '
सद्य दूध मथि पीवहु भैयां ॥

भोर भयो वन तमचुर बोले, घरघर घोष द्वार सब खोले
तुम्हरे सखा बुलावन आये, 'कृष्ण' 'कृष्ण' कहि मंगल गाये
गोपी रई मथनियां धोवें, अपनी अपनी दही बिलोवें
भूषन बसन पलटि पहिराऊँ, चंदन तिलक लिलाट बनाऊँ
'चतुर्भुज' लाल गोवर्धन धारी, मुख छवि पर बलि गई महतारी

२

अँगुरिया छाड़ि रे गति अरग धरग ।
नूपुर बाजत त्यों त्यों धरनी धरत पग ॥

कबहुँक जसुदा माइ भुज पसारि,
हँसि डगमगाय के उलटि डग
जननि मुदित मन चितै चितै सिसुतन,
राखति कंठ लगाई सुन्दर स्याम सुभग
मृदुबानी तुतरात माँगि नवनीत खात,
भुजन भाव जनावत बाल खग
'चतुर्भुज' प्रभु गिरधर के बाल विनोद,
नंद आनंद मग्न देखें ठाढ़े ठग ठग

३

करत हो सबै सयानी बात ।
जौ. लौं देखे नाहिं न सुन्दरि कमल नैन मुसकात ॥
सब चतुराई बिसरि जात है खान पान की तात ।
बिनु देखे छन कल न परत है घरि भरि कल्प बिहात ॥
सुनि भामिनी के वचन मनोहर सखि मन अति सकुचात।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लाल संग सदा बसो दिन रात ॥

४

भोर भयो नंद जसुदा जी बोलत—"जागो जागो मेरे गिरधर लाल।
रतन जटित सिंहासन बैठो देखन को आई ब्रजबाल ॥"
नियरे जाइ सुपेती खेंचत बहुरो हरि ढाँपत बदन रसाल ।
दूध दही अरु माखन मेवा भामिनी भरि लाई है थाल ।
तब हरि हरषि गोद उठि बैठे करत कलेऊ तिलक दे भाल ।
दे बीरा आरति वारति हैं चतुर्भुज गावत गीत रसाल ॥

५

सुनहु धों अपने सुत की बात ।
देखि जसोमति कानि न राखत ले माखन दधि खात॥
भाजन भानि डारि सब गोरस बाँटत है करि पात ।
जो बरजों तो उलटि-डरावत चपल नैन की घात ॥

जो पावत सो लेत चपल हठि नेकहु नाहिं डरात ।
हों सकुचति अंचर[1] कर धरिके रही ढाँपि मुख गात ॥
गिरिधरलाल हाल ऐसे करि चले धाये मुसिकात ।
चतुर्भुजदास संग हौं आयो बूझि सौंह दे सात ॥

६

हा हा और सुनेगो कोऊ ।
बहुरि ग्वाल मुख ते जिनि काढ़े जो हम जाने दोऊ ॥
बालक कान्ह निपट भोरो है पाँयो[2] चलन सिखायो ।
तासो कहति भवन अपने में चोरी माखन खायो ॥
घरहू करत कलेऊ क्रम क्रम जो कोउ बहुत निहोरे ।
सो क्यों अनत सकुच को लरिका कंचुकि के बंद तोरे ॥
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन चन्द को झूठेहिं लावति खोरे ।
ह्वै है काहू और गोप को इनहीं के अनुहोरे ॥

७

नित उठि देन उराहनो आवे ।
यह जु ग्वालि जोबन मदमाती झूठे ही दोष लगावे ॥
कहि धौं भाजन धरे पराये[3] कहां मेरो मोहन पावे ।
लरिका अति सुकुमार गहें कर हलधर संग खिलावे ॥

---

१. पा० अंजलि ।
२. पा० मोरे न पायन । ३. पा० बराये ।

कबहुँ कहत कंचुकी फारी कबहुँक और बतावे ।
कबहुँ रई मथानी लेके आँगन सोर मचावे ॥
मन तेरो लागो कमल नैन में उत्तर बहुत बनावे ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर मुख इह मिस क्षण क्षण देखो भावे ॥

८

मोहन पूरे हो सत भाइ ।
कहत लाल नीके दुहि देहों ग्वालि तिहारी गाइ ॥
आतुर ह्वै दोहनी कनक की करते लीन्हीं धाइ ।
दे धौं वेगि पाटकी नो बछरा चोखे जाइ ॥
हँसि हँसि दुहत अरु कहत रसीली बातें बहुत बनाइ ॥
चतुर्भुज प्रभु सहजहि रति जोरी गिरि गोवर्धन-राइ ॥

९

जसोदा कहा कहौं हौं बात ।
तुम्हरे सुत के करतब मो पे कहत कहे नहिं जात ॥
भाजन फोरि ढोरि सब गोरस ले माखन दधि खात ।
जो बरजो तो आँखि दिखावे रंचहु नाहीं सकात ॥
और अटपटी कहाँ लौं बरनौं छुवत पाणी सो गात ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर के गुन हौं कहति कहति सकुचात ॥

१०

ग्वालिन तोहि कहत क्यों आयो।
मेरो कान्ह निपट बालक क्यों चोरी माखन खायो॥
बूझि विचारि देखि जिय अपने कहा कहौं हौं तोहि।
कंचुकि बंद तोरे यह कैसे सो समुझि परति नहिं मोहि॥
चतुर्भुजदास लाल गिरिधर सों झूठी कहति बनाय।
मेरो स्याम सकुच को लरिका पर घर कबहुँ न जाय॥

११

भूली दधि को मन्थन करिबो।
देखत रसिक नंद नंदन को डगमगे पग धरिबो॥
रहि गई चितै चित्र जैसे एक टक नैन निमेष न धरिबो।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन जनायो नाहीं मैं मनि मानिक हरिबो॥

१२

महामहोत्सव गोकुल गाँव।
प्रेम मुदित गोपी जस गावति ले ले स्याम सुन्दर को नाम॥
जहाँ तहाँ लीला अवगाहति खरिक खोरि दधि मन्मथन धाम।
परम कुतूहल निसि अरु बासर आनँद ही बीतत सब जाम॥
नंद गोप सुत सब सुख दायक मोहन मूरति पूरन काम।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर आनंद निधि नख सिख रूप सुभग अभिराम॥

१३

हौं थारी नवनीत प्रिया।

दिन उठि देन उराहनो आवति चोरी लावति थोप तिया ॥
तुम बलराम संग मिलि के इह आँगन खेलो दोऊ भय्या।
निरखि निरखि नैननि सचु पाऊँ प्रान जीवन तन साँवरिया ॥
जाहि भावे सोई लेहु मेरे प्यारे मधु मेवा दधि दूध बैय्या।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर काके घर तुमहूते कछु बहुत थिया[1] ॥

१४

कान्ह सों कहति जसोदा मैया।

मेरे मोहन अनत न जैये घरहि खेलो दोऊ भैय्या ॥
ए तरुनी जौवन मदमाती झूठेहि दोष लगावे दैय्या।
तुम तो मेरे प्रान जीवन धन मथिके दूध पिवाऊँ बैय्या ॥
चतुर्भुजदास गिरिधरन कह्यो तब "हौं बन जाओं चरावन गैय्या"।
सुनि जननी मन अति हरषानी मुख चुम्बत अरु लेती बलैय्या ॥

१५

घर घर डोलत माखन खात।

ग्वाल बाल सब सखा संग लिये सूने भवन धंसि जात ॥
जब ग्वालिन जल भरि घर आई तबहिं भजे मुसिकात।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लाल सों नाहिंन कछु बिसात ॥

---

१. तुम्हारे घर से क्या किसी और के घर में कुछ अधिक है जो दूसरों के घर जाते हो।

१६

मोहन चलत बाजत पैंजनी पग ।
सब्द सुनत चकित ह्वै चितवत त्यों त्यों ठुमकि ठुमकि धरत हैं डग ॥
मुदित जसोदा चितवति शिशुतन लै उछंग लावे कंठ सुलग ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लाल को ब्रज जन निरखत ठाड़े ठगठग ॥

१७

मथनियां दधि समेत छिटकाई ।
भूली सी रह गई चितै उत छिनु न विलोवन पाई ॥
आगे ह्वै निकसे नंदनंदन नैनन की सैन जनाई ।
छाड़ि नेति कर ते उठि पाछे ही बन धाई ॥
लोकलाज अरु वेद मरजादा सब तन तें बिसराई ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन मम हँसि कठिन ठगोरी माई ॥

१८

चुटिया तेरी बड़ी कीधों मेरी ।
अहो सुबल तुम बैठि भैय्या हो हम तुम मापे एकै बेरी ॥
ले तिनका मापत उनकी कछु अपनी करत बड़ेरी ॥
लेकर कमल दिखावत ग्वालन ऐसी काहू न केरी ॥
मोको मैय्या दूध पिवावत ताते होत घनेरी ॥
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर इहि आनंद नाचत दै दै फेरी ॥

१९

माई लेन देहु जो मेरे लाले भावे ।
दधि माखन चौगुनो देउंगी या सुत के लेखे जाको जितनो आवे ॥
पलना झूलत कुल देव आराध्यो जतन जतन वारि घुटरुअन धावे ।
सरवस ताहि देऊँगी जो मेरे नान्हरे गोविन्द पाँ पाँ चलन सिखावे ॥
यह अभिलाष लेत दिन प्रति कब मेरो मोहन धेनु चरावे ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लाल कों निरखि निरखि उर नैन सिरावे ॥

२०

जसोमति ढूँढत ह्वै गोपाले ।
काहू देखो मेरे अलक लड़ेतो खेलत हो संग वाले ॥
इत उत हेरि रही नहीं पावत सुन्दर स्याम तमाले ।
चकित नैन अतिसय अकुलानी भई भई बेहाले ॥
साँवरे वरन पीत से झगुली कच लर लटकत भाले ।
पग पेंजनी कुणित कहुँ देखो चाल सुराल मदाले ॥
घर घर टेरि कहति कहुँ देख्यो वरु बूझति गोपी ग्वाले ।
जो मेरे छगन मगन ही दिखावे ताहि देऊँ उर माले ॥
काहू ब्रज सुन्दरी ले राख्यो निज ग्रह नेह विसाले ।
नंदराय जू कों आनि दिखावो सुन्दर रूप रसाले ॥
गए प्रान मानों फिरि आये लियो उछंग उताले ।
[illegible] ॥

निज गृह आनि करी न्योछावरि तन मन धन तिहिं काले ।
चतुर्भुज प्रभु को खेलत जाने जिंवावति गिरिधरलाले ॥

२१

प्यारी ग्रीवा भुज मेलि नृतत पिय सुजान ।
मुदित परस्पर लेत गति में गति,
गुनरासि राधे गिरिधरन गुन निधान ॥
सरस मुरली धुनि सों मिले सप्त सुर,
गावत भैरव राग अवघर तान बंधान ।
चतुर्भुज प्रभु स्याम स्यामा की नटन देखि,
रीझे खग मृग बन थकित व्योम विमान ॥

२२

रजनी राज लियो[1] निकुंज नगर की रानी ।
मदन महीपति जीति महारन श्रम जल सहित जंभानी
परम सूर सौंदर्य्य भ्रकुटि धनु अनियारे नैन बान संधानी ।
दास चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन रस संपति विलसि ज्यों मनमानी ॥

२३

नैन कुरंगी रति रसमाते फिरत तरल अनियारे ।
नवल किशोर श्याम तन धन बन पाए हैं नवनिधि वारे ॥

---

१. पा० कियो
पद २२:. देखो टिप्पणी पद २४ ।

नाना बरन भये सुख पोपे श्याम श्वेत रतनारे।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन कृपा रंग रंग रंग रुचिर सँवारे॥

२४

गोवर्धन गिरि सघन कंदरा रैन निवास कियो पिय प्यारी।
उठि चले भोर सुरति रस भीने नंद नन्दन वृषभानु दुलारी॥
उत विगलित कचमाल मरगजी अटपटे भूषन मरगजी सारी।
इतहि अधर मसि पाग रही धसि दुहुँ दिसि छवि लागत अति भारी॥
घूमत आवत अति रन जीते करनी[1] संग गजवर[2] गिरिधारी।
चतुर्भुजदास निरखि दम्पति सुख तन मन धन कीन्हों बलिहारी॥

---

१. पा० करनि। २. पा० गरिवर।

पद २४ : एक दिन श्री गोसाईं जी ने चतुर्भुजदास को अप्सरा कुंड से रामदास भीतरिया को बुला लाने और स्वयं फूल चुन कर लाने की आज्ञा दी। जब यह फूल चुन रहे थे उस समय श्री नाथ जी श्री स्वामिनी जी सहित गोवर्धन पर्वत की कंदरा से बाहर पधारे। स्वामिनी जी ने अपने मन में विचारा कि यह लीला कोई नहीं जानता परन्तु इतने ही में चतुर्भुज जी ने दर्शन कर इस पद की रचना कर डाली।

अ० छा० पृ० १०६।

जमुना पद

१

चित्त में जमुना निसि दिन जो राखो ।
भक्त के वस कृपा करत हैं सर्वदा ऐसो जमुना जी को है साको।
जाहि मुख तें 'जमुने' नाम यह उचरे संग कीजे अब जाइ ताको।
चतुर्भुजदास अब कहत हैं सबन सों ताते 'जमुने' 'जमुने' जो भापो॥

२

प्रानपति विहरत जमुना के कूले ।
लुब्ध मकरन्द के वश भए भ्रमर जे रवि उदय देखि मानो कमल फूले।
करत गुंजार मुरली ले के साँवरो व्रजवधु सुनत तन सुधि जो भूले।
चतुर्भुजदास जमुना प्रेम सिंधु में लाल गिरिधरन अब हरपि झूले॥

३

बारबार जमुने गुणगान कीजे

एहि रसना ते जो नाम रस अमृत भाग जाके सोई जो लीजे ॥
भानु तनया दया अतिहि करुनामयी इनकी करे आसा सदा जीजे ।
चतुर्भुजदास कहे सोई प्रिय पास रहे जोई जमुना के रस में भीजे ॥

४

हेत करि देत जमुना वास कुंजे ।

जहाँ निसि वासर रास में रसिक वर कहाँ लों वरनिये प्रेम पुंजे ॥
थकित सरिता नीर थकित ब्रजवधु भीर कोऊ न धरत धीर
मुरली सुनिजे ।
चतुर्भुजदास जमुने जो पंकज[1] जानि मधुप की नाईं चित लाई गुंजे ॥

---

१. पा० पंखज ।

गुरु सम्बन्धी

१

श्री वल्लभ सुजस सन्तत नित उठि गाऊँ।
मन क्रम वचन छिन एक न विसराऊँ ॥
पुरुषोत्तम अवतार सुकृत फल फलित,
जगत वंदन श्री विठलेस दुलराऊँ।
परसि पद कमल रज निरखि सौंदर्य्य निधि,
प्रेम पुलकित कलुष कोटिक नसाऊँ ॥
श्री गिरिधरन भुवपति[1] मान मर्दन करन,
घोष रक्षक सुखद सुजस सुनाऊँ।
श्री गोविंद ग्वाल संग गाय ले चलत,
वन निरखि नैननि सिराऊँ ॥

---

१. पा० देवपति।

श्री बाल कृष्ण सदा सहज बालक,
दसा कमल लोचन सुहरषित रुचि बढ़ाऊँ।
भक्ति मार्ग सुदृढ़ करन गुनरासि व्रजमंगल,
श्री गोकुल नाथ ही लड़ाऊँ ॥
श्री रघुनाथ धरम धुरधार[1] सोभा सिन्धु,
रूप लहरिन दुख दूरि बहाऊँ।
पतित उद्धरन महाराज श्री जदुनाथ,
विसद अंबुज हाथ सिरसि परसाऊँ ॥
श्री घनस्याम अभिराम[2] रूप वरषा स्वांति,
आसा लागि रचना चातक रटाऊँ।
चतुर्भुजदास परयो द्वार प्रनिपात[3] करे,
सकल कुल को चरनामृत भोर उठि पाऊँ ॥

---

१. पा० धुरन्धर। २. अभिराम। ३. प्रनिपत।

छीतस्वामी पदावली

समुदाय कीर्तन

१

सुमरि मन गोपाल लाल सुन्दर अति रूप जाल ।
मिटिहैं जंजाल सकल निरखत संग गोप बाल ॥
मोर मुकुट सीस धरे बनमाल सुभग गरे ।
सब को मन हरे देखि कुंडल की झलक गाल ॥
आभूषन संग सोहे मोतिन के हार पोहे ।
कंठ श्री मोहे दृग गोपी निरखत निहाल ॥
छीत स्वामी गोवर्धनधारी कुँवरनंद सुवन गाइन के ।
पाछे पाछे धरत हैं लटकीली चाल ॥

२

राधिका स्याम सुन्दर को प्यारी ।
नख सिख अंग अनूप विराजत कोटि चंद दुति वारी ।
एक छिन संग न छांडत मोहन निरखि निरखि बलिहारी ।
छीत स्वामी गिरिधर बस जाके सो वृषभानु दुलारी ॥

३

अति ही कठिन कुच उच्च दोउ तुंगनि से गाढ़े,
उर लगाय के मेटी काम हूक।
खेलत में लर टूटी उर पर पीक परी उपमा,
बरनन को भई मति मूक॥
अधरामृत रस ऊपर तें अँचवायो अंग,
अंग सुख पायो गयो दुख हूक।
छीत, स्वामी गिरिधारी राजा लूट्यो,
मन्मथ वृंदावन कुंजन में मैं हूँ सुनी हूक॥

४

आज किसोर कुँवर कान्ह देखि री देखि आवत
गावत भावत नैननि चैन पावत सकल अंग अंग।
मुरली कुनित सुभग बदन मदन मोचन लोल,
लोचन मधुप टोल मधुर बोल गुंजित संग संग॥
चरन नूपुर कटि सुमेखला रति रन रस भरे री,
स्याम कनक कपिस अंब रस मरकत मान भंग।
छीत स्वामी गिरिधरन हरन तन के मन के संताप,
मेटि के विरह वेदन प्रीति सों जीति अनंग॥

५

भोर भये नव कुंज सदन ते आवत लाल गोवर्धन धारी।
लटपटी पाग मरगजी माला सिथिल अंग डगमग गति न्यारी॥
बिन गुन माल विराजत उर पर नख क्षत द्वेज चंद अनुहारी।
छीत स्वामी जब चितए मो तन तब हौं निरखि गई बलिहारी॥

६

नवल लाल वृषभानु दुलारी आवत कुंज भवन ते भोर।
इन तन बनी मरगजी सारी पिय उर माल रही बिनु डोर॥
आलस बस अंगनि भुज धरि धरि आवत अति छवि पावत।
मधुपमाल सौरभ वस गुंजत सुजस तिहारे गावत॥
विर्षभान पुर[1] गई लाड़िली, नन्दसदन गए स्याम।
छीत स्वामी गिरिधरन रंगीले विलसे चारों जाम॥

७

अपुन पैं अपनी सेवा करति।
आपुन प्रभु आपुन सेवक ह्वै अपनो रूप उर धरत॥
आपुन धरम करम सब जानत मरजादा अनुसरत।
छीत स्वामी गिरिधरन श्री विट्ठल भगत्वत्सल वपु धरत॥

---

१. पा० वृषभानु पुरातन

८

प्रगट्यो प्राची दिसि पूरन चंद ।
यौं ही प्रगटे श्री वल्लभ घर सुर नर मुनि आनंद ॥
अद्भुत रूप अलौकिक महिमा जन जनता यौं भाख्यो ।
छीत स्वामी गिरिधरन श्री विट्ठल लोक वेद मत राख्यो ॥

९

रूप स्वरूप श्री विट्ठलराय ।
वेद विदित पूरन पुरुपोत्तम श्री वल्लभ गृह प्रगटे आय ॥
लटपटी पाग महा रस भीने अति सुन्दर मन सहज सुभाय ।
छीतस्वामी गिरिधरन श्री विट्ठल अगनित महिमा कही न जाय ॥

१०

राधा निसि हरि के संग जागी ।
जमुना पुलिन सघन कुंजन में पिय अंग मिलि मिलि के अनुरागी ॥
कुटिल अलक बगरी जु बदन पर दोउ कपोल पीकन सों पागी ।
छीत स्वामी उमगि उमगि के गिरिधर लाल उरनि सों लागी ॥

११

पिय संग जागी वृपभानु दुलारी ।
अंग अंग आलस जँभाति अति, कुंज मदन तें भवन सिधारी ॥
मारग जात मिली सखी औरें तबहिं सकुचि तन दसा विसारी।[१]
छीत स्वामी सों कहे भामिनी तोहि मिले निसि गिरवरधारी ॥

१. पा० मारग हात लिही सखी औरेन कहिं सकुचि तन दसा विसारी।

१२

मेरी अँखियन के भूषण गिरिधारी।
बलि बलि जाऊँ छबीली छवि पर अति आनंद सुखकारी ॥
परम उदार चतुर चिन्तामणि दरस परस दुखहारी।
अतुल सुभाव तनक तुलसी दल मानत सेवा भारी ॥
छीत स्वामी गिरिधरन विशद यश गावत कुलनारी।
कहा बरण गुण गाथ नाथ के श्री विट्ठल हृदय विहारी ॥

१३

मेरी अँखियन देखो गिरिधर भावे।
कहा कहों तोसों सुनि सजनी उतही को उठि धावे ॥
मोर मुकुट कानन कुंडल ललि तन गति सब बिसरावे।
बाजूबंद कुंठ मणि भूषण निरखि निरखि सचु पावे ॥
छीत स्वामी कटि छुद्र घंटिका नूपुर पद ही सुनावे।
इह छवि बसत सदा विट्ठल उर मो मन मोद बढ़ावे ॥

१४

मेरे नैन निरखो बान परी री।
गिरिधरलाल मुखारविन्द छवि छिन छिन पीवति खरी ॥
पाग सुदेश लाल अति सोहत मोतिन की दुलरी।
हरि नख उरहि विराजत मणिगण जटित कंठ सरी ॥

छीत स्वामी गोवर्धनधर पर वारों तन मन री।
विट्ठलनाथ निरखि के फूलत तन सुधि सब विसरी॥

१५

नैनन निरखो हरि को रूप।
निकसि सकत नहीं लावन निधि ते मानों परयो कोउ कूप॥
छित स्वामी गिरिधरन विराजत नख सिख रूप अनूप।
बिन देखे मोहे कल न परत छिन सुभग वदन छिनु जप॥

१६

आगे कृष्ण, पाछे कृष्ण, इत कृष्ण उत कृष्ण,
जित देखूँ वित कृष्ण है मई री।
मोर मुकुट कुंडल किरण भरे मुरली मधुर तान,
लेत नई नई री।
काछिनी काछे लाल उपरना पीत पट,
तिहि काल देखन ही सोभा थकित भई री।
छित स्वामी गिरिधारी विट्ठलेश वपुधारी,
निरखत छवि अंग अंग ठई री॥

१७

मई अब गिरिधर सों पहेचान।
कपट रूप छलवे आयो पुरुषोत्तम नहि जान॥

१—पद १७, संप्रदाय में सर्व प्रथम दीक्षित होने पर गाया गया था।
(अ० छा० पृ० ११४)

छोटो बड़ो कछू नहि जान्यो छाय रह्यो अज्ञान ।
छीत स्वामि देखत अपनायौ श्री विट्ठल कृपानिधान ॥

१८

प्रिय नवनीत पालने झूले श्री विट्ठलनाथ झुलावै हो ।
कबहुँक आप संग मिल झूलै कबहुँक उतर झुलावै हो ॥
कबहुँक सुरंग खिलोना लै लै नाना भाँति खिलावै हो ।
चकई फिरकनी ले विंगीड़ु झुणझुण हात बजावें हो ॥
भोजन करत थाल एक झारी दोउ मिल खाय खवावें हो ।
गुप्त महारस प्रकट जनावे प्रीति नई उपजावें हो ॥
धन्य (ध)न्य भाग्य दास निज जन के जिन यह दर्शन पाए हो ।
छीत स्वामी गिरधरन श्रीविट्ठल निगम एक कर गाए हो ॥

नोट—पद १८, यह पद जन्माष्टमी के दिन जब देशाधिपति बीरबल के साथ दर्शन को आए थे तब गाया गया था।

(अ० छा० प० ११६,११७)

खंडिता पद

१

भोर भए नीको मुख हँसत दिखाइये ।
राति के दरस के बिछुरे दोऊ पलक मेरे,
वारि फेरि डारों नेकु नैननि सिराइये ॥
कोमल उन्नत बाहु पर अमित भाव मेरो,
तेरी छाती छबि अधिक बढ़ाइये ।
छीत स्वामी गिरिधर सकल गुन निधान,
कहा कहूँ मुख करि प्रान ही ते पाइये ॥

२

आए भोर उनींदे स्याम ।
सकल निसा जागे प्यारी संग हारे हो रति रन संग्राम
सिथिलत पाग भाल पर जावक हिये विराजत बिनु गुनमाल
कुंकुम तिलक अलक पर सेंदुर सुभग पीक सोहत दोउ गाल

कंकण पीठ गढ़यो उर नख छत जनु घन माँझ द्वैज को चंद ।
छीत स्वामी गिरिधरन भले तुम मोहि खिझावत हो नँदनंद ॥

३

सुभग स्याम के संग राधिका विराजे ।
नैन आलस भरि सकल निसा सुख करी,
कंठ हरि भुजधरी काम लाजे ॥
मानिक कंचन तनि पीक दृगसो सनी,
अति ही रस में सनी रूप भ्राजे ।
छीत स्वामी गिरिधरन के मन बसी,
मन ही मन हँसी सुख दियो आजे ॥

४

मरगजी उर कुन्द माल, लोचन अलसात लाल,
डगमगात चरन धरनी धरत रैन जागे ।
सीस ते खसि मोर मुकुट भ्रकुटी के तट आयो,
निकट शैल चपल चंद्रिका सुबाँधि पट तागे ॥
अतसी कुसुम तन सुभाँति कहुँ कहुँ कुंकम की कांति,
मदन नृपति पीक छाप जुग कपोलनि लागे ।
छीत स्वामी गिरिवरधर सौरभ रस मगन मधुप,
संयम गुणगान करत फिरत आगे आगे ॥

५

प्रात समय उठि आए हो मेरे नंदनंदन आलस भरे नीके।
पीक कपोल अधर मसि सोहत बिनु गुन माल विराजत ही के ॥
पाग लटपटी भाल महावर पग परसे तुम काहू तीय के।
छीत स्वामी गिरिधरन भले तुम औरे विराजत चंदन टीके ॥

६

भोर भये आये तुम मेरे आज कहाँ निसि बसे नंदसुत।
कहा कहों अंग अंग की सोभा पीक कपोल नैन आलस जुत ॥
कहा निहोरत हो मोको अब जिनि परसो मोहि चले जाउ उत।
जानी बात तिहारे मन की छीत स्वामी गिरिधरन बड़े धुत ॥

७

जिनि बोलो पिय मोसों आज।
जहाँ बसे निसि तहीं सिधारो मो सें कहा है काज ॥
सगरी रैन मोहि मग जोवत गई दही मदन की दाज।
छीत स्वामी गिरिधर दग जोरत आवत नाहिन लाज ॥

८

अरुन नैन देखियत हैं आज।
बसे जहाँ निसि तहीं सिधारो रसिकन के सिरताज ॥
मग जोवत मोहि रैन बिहानी तुम्हें नहीं कछु लाज।
छीत स्वामी सों कहति भामिनी यहाँ नहीं कछु काज ॥

९

मेरे तुम आए भोर भए पिय रैन कहाँ गँवाई ।
कौन नारि के बस परे मोहन साँची कहो किन, जानि परी चतुराई ॥
उरहि हार बिनु डोर बिराजत सिथिल अंग सब नख क्षत देत दिखाई ।
छीत स्वामी गिरिधर कहो मोसों रसिक सिरोमणि जावक पाग रँगाई ॥

१०

प्रात आए हो नंदलाल ।
जावक भाल अधर मसि अंजन पीक लगाये गाल ॥
लटपटी पाग उनींदे नैननि उरसि मरगजी माल ।
छीत स्वामी गिरिधरन बनी छबि चलत मन्दगति चाल ॥

११

भले तुम आए मेरे प्रात ।
रजनी सुख कहीं अनत कियो पिय जागे सारी रात ॥
झँपि झँपि आवत नैन उनींदे कहा कहूँ यह बात ।
ज्यों जलरुह ताकि किरन चन्द की अति सभीत मुँदि जात ॥
कहुँ चन्दन कहुँ चन्दन लाग्यो देखियत साँवल गात ।
गंगा सरसति मानो जमुना अंगहि माँझ लखात ॥
भली करी प्रण बोल निबाहे मेरे घरहि प्रभात ।
छीत स्वामी गिरिधर सुनि बातें बदन मोरि सकुचात ।

१२

सांचे भए आए प्रभात ।
नंदनन्दन रजनी कहाँ जागे कहिये साँवल गात ॥
पीक कपोलनि लगे तुम्हारे जावक भाल लखात ।
उरहि विराजत बिनु गुन माला मोतिन लखि सकुचात ॥
भली करी अब तहीं पग धारो जहाँ बिताई रात ।
छीत स्वामी गिरिधर काहे को झूँठी सौहें खात ॥

फुटकर पद

१

प्रात भयो जागो वलि मोहन सुखदाई ।
जननी कहे वार वार उठो प्रान के अधार,
मेरे दुखहार स्यामसुन्दर कन्हाई ॥
दूध दही माखन घृत मिश्री, मेवा, बादाम,
पकवान भाँति-भाँति विविध रस मलाई ।
छीत स्वामी गोवर्धनधारी लाल भोजन करि,
ग्वालन के संग वन गोचारन जाई ॥

२

धाइके जायवे जमुना तीरे ।
तिनही की महिमा कहाँ लों वरनिये, जाई परसत प्रेम अंग नीरे।
निस दिन केलि करत मनमोहन, पिय के संग भक्तन की हैं जु भीरे।
छीत स्वामी गिरिधरन श्री विट्ठल ता विन नेकु नहीं धरत धीरे ॥

३

भई भेंट अचानक आई।

हौं अपने गृह तें चली जमुना, वे उत तें चले चारन गाई॥
निरखत रूप ठगोरी लागी उत को गगर[1] अरि चल्यो न जाई।
छीत स्वामी गिरिधरन कृपा करि मोतन चितए मुरि मुसकाई॥

४

हरि मानि नाथ अंबर दीजे।

नंदनंदन कुँवर रसिकवर मन हरन सुनहु गिरिवरधरन नीति कीजे॥
सकल ब्रज नागरी दासी तुम्हारी सदा, तन माँझ सीत अति होत भीजे।
छीत स्वामी अमित गुन गननि आगरे विनती करि सब मान लीजे॥

५

करत कलेऊ मोहन लाल।

माखन मिश्री दूध मलाई मेवा मेवा परम रसाल॥
दधि ओदन पकवान मिठाई खात खवावत ग्वाल।
छीत स्वामी बन गाय चरावन चले लटकि पसुपाल॥

---

१. पा० डगर

* cf रसखानः—

....

....

दोव परे पैयाँ दोऊ लेत हैं बलैयाँ इन्हें,
भूलि गई गैयाँ उन्हें गागर उठाइबो।

६

गायन के पाछे पाछे नटवर वपु काछे,
मुरली बजावत आवत हेरी मोहन ।
अतिही छबीले पग धरनी धरत, डगमग,
उपजत मग लागे जिय सोहन ॥
खरक निकट जानि, आगे धरत श्याम,
ठठकी गाय, लागी सब गोहन ।
छित स्वामी गिरधारी विट्ठलेश वपुधारी, आवत,
निरखि निरखि गोपी लागी हेरि जोहन ॥

जमुना पद

१

जय जय श्री सूर्य्यजा कालिन्द नंदिनी।
गुल्म लता तरु सुवास, कुंज कुसुम मोदमत्त,
गुंजत अलि सुभग पुलिन वायु मन्दिनी॥
हरि समान धरमसील, कान्ति मंजुल जलद,
नील कटि नितम्ब भेदत नित गति उतंगिनी।
सिक्ता जनु मुक्ताफल, कंकण जुत भुज तरंग,
कमलनि उपहार लेत पिय चरन वंदिनी॥
श्री गोपेन्द्र गोपी संग श्रम जलकण सिक्त रंग,
अति तरंगनि सुरसिक रस सुफन्दनी।
छीत स्वामी गिरिवरधर नंदनंदन आनंद कन्द,
जमुना जन दुरित हरन दुख निकंदिनी॥

२

जोई मुख 'जमुना' यह नाम आवे।
ता ऊपर कृपा करत श्री वल्लभ प्रभु,
सोई जमना जी को भेद पावे॥

तन मन धन अब लाल गिरिधरन को,
दे करि चरन जब चितहि लावे।
छीत स्वामी गिरिधरन श्री विट्ठलेश,
नैननि प्रकट लीला दिखावे॥

३

गुन अपार एक मुख कहाँ लो कहिये।
तजो साधन भजो नाम जमना जी को,
लाल गिरिधरन को तबहिं पइये॥
परम पुनीत प्रीत रीति को जानही,
दृढ़ करि चरन कमल जो गहिये।
छीत स्वामी गिरिधरन श्री विट्ठल,
एहि निधि छाड़ि अब कहाँ जो जइये॥

४

धन जमुने निधि देनहारी।
करत गुन गान अज्ञान अघ दूरि करि,
जाहि मिलवत पिय और प्यारी॥
जिनही संदेह करो बात जिय में धरो,
पुष्टि-पथ अनुसरो सुख जो कारी।
प्रेम के पुंज में रास रस कुंज में,
एहि राखति अति रंग भारी॥

जमुना अरु प्रानपति और सब प्रानसुत,
चहुँ जन जीव पर दया विचारी ॥
छीत स्वामी गिरिधरन श्री विट्ठल,
प्रीति के लिए यह संपदा री ॥

५

दोउ कूल खंभ तरंग सीढ़ी मानो,
श्री जमुना जगत बैकुंठ निसेनी ।
अति अनुकूल कलोलनि के भर लिए,
जात हरि के चरन सुखदेनी ॥
जनम जनम के दुकृत दूर करनी,
कटत कर्म धरम धार पैनी ।
छीत स्वामी गिरिधरन पियारी,
साँवल गात कमल नैनी ॥

गुरु संबंधी पद

१

जय जय जय श्री वल्लभनन्द, कोटि कला वृंदावन चंद ।
निगम विचारे न लहे पार, सो ठाकुर अक्का के द्वार ॥
लीला करि गिरि धरयो हाथ, छीत स्वामी श्री विट्ठलनाथ ॥

२

विसद सुजस श्री वल्लभसुत को प्रात उठत अनुदिन तव गाऊँ।
कलि मलि हरन चित्त धरि राखूँ उपजे परम सुख दुख वहाऊँ ॥
भक्ति भ्रमर औ भक्ति रस जाने माने मन सों तिनहूँ को छाऊँ।
छीत स्वामी गिरिधारी के सुमिरन अष्टमहा सिधि नवनिधि पाऊँ॥

३

श्री कृष्ण कृपाल कृपानिधि दीन बंधु दयाल ।
दामोदर बनवारी मोहन गोपीनाथ गोपाल ॥
राधारमण विहारी नटवर सुन्दर जसोमति बाल ।
माखनचोर गिरिधर मनहारी सुखकारी नंदलाल ॥

गोचारण गोविन्द गोपपति जिय भावन मंजुल ग्वाल।
छीत स्वामी सोई अब प्रगटे कलि में वल्लभ लाल ॥

४

राधिकारमण गिरिधरन गोपीनाथ
मदन मोहन कृष्ण नटवर विहारी।
रास लीला रसिक ब्रज जुवति प्रानपति
सकल दुख हरन गोपगणन चारी ॥
सुख करण जग तरण नन्द नंदन
नवल गोपपति नारिवल्लभ मुरारी।
छीत स्वामी हरि सकल जीव उद्धार हित
प्रकट वल्लभ सदन दनुज-हारी ॥

गोविंदस्वामी पदावली

समुदाय कीर्तन

१

एक रसना कहा कहों सखी री,
ललन की प्रीति अमोली।
हँसनि खेलनि चितवनि जो छबीली
अमृत वचन मृदु बोली॥
अति रस भरे मदन मोहन प्रिय
अपने कर कमल खोलत बन्द चोली।
गोविंद प्रभु की हौं बहुत कहा कहूँ री,
जे जे बातें कहीं मोसों अपने हृदय खोली॥

२

तू आज देख री मन मोहन ए बलबीर राजे।
मदन मोहन प्रिय मनि मंदिर तें
बैठे बानिक सी आय छाजे॥

लटपटी पाग मरगजी माला
लटपटात मधुप मधु काजे।
गोविंद प्रभु के जु सिथिल अरुन दृग
देखत विथकित कोटि मदन लाजे॥

३

मदन मोहन प्रिय भयो न भोर।
प्राची दिस नहीं अरुन देखियत अरु सुनियत नहिं वन खग रोर॥
गृहित परस्पर कंठ दंपति विश्लेष[1] कातर अति जोर।
गोविंद प्रभु रसिक सिरोमणी प्यारी के वचननि लियो चित चोर॥

४

लाल न्यारे अति विलक्षण वस किये री सुहाग।
विविध कुसुम सुवास सीतल विचित्र शैय्या
रची जाते मदन मोहन निसि जाग॥
बैठे कुंज के द्वार तव पथ जोवत,
भरि भरि आवत नयन विशाल तव अनुराग।
दूती के वचन सुनि प्रेम व्याकुल भई,
मिलि जाय गोविंद प्रभु को मेटी हृदय दाग[2]॥

---

१. पा० विश्लेत।
२. पा० न मेटयो हृदय दाग।

५

तेरे वारने जाऊँ महर जसोदा के लाल ।
छाड़े उन भावत कैसे नीके लागत मधुरे,
स्वर गावत मुरली बजावत परम रसाल ॥
बिभाग रास जमायो मधुर मधुर
गायो प्रात शुभ काल ।
गोविंद प्रभु प्रिय सुघर शिरोमणी
अहो स्याम तमाल ॥

६

जहाँइ नैन लगत तहाँइ तासों खगत
अंग अंग माधुरी जु बरनी न जाई ।
सुन्दर भाल भ्रू कपोल नासिका
देखत रहे जु लुभाई ॥
हँसत ललन मुख दसन जुन्हाई होति,
यह छवि कहा कहौं देखि धौं री आई ।
गोविंद प्रभु के जु सुन्दर बानिक पर
बलि बलि बलि बलि जाई ॥

७

तेरो मुख मानो जैसो री शरद शशि।
दसन ज्योति जुन्हाई, वचन सीतलताई
अमृत हास सुहाई बोलत नैन मसि॥
कस्तूरी तिलक भाल ऋतु कलंक छवि
नक्षत्र माल मनि मंगलसि।
गोविंद प्रभु नंद सुवन चकोर वर
पान करत वर पान मन्मथ ताप नसि॥

८

इन्दु कुमुदिनी समेटी अरु चकवनि तिय भेंटी।
मुकुलित अलि सरस कमल, मुकुलित भये नलिन॥
भयो प्रात मुक्ता गात सियरो अति सोनो।
लागे बोलन तमचुर दीप ज्योति भई मलिन॥
कैसे जैहौं रसिक राय, नंद गोप दुहत गाय।
जागे. ब्रज वासी, मोहि जात देखि हैं गलिन॥
गोविन्द प्रभु प्रेम मगन दंपति अति कंठ लगन।
बढ़ाए छाया फिरि के ससि पच्छप साके चलन॥

९

हरि सौं तू बैठी दे कपोल कर
मानत नाहीं न नैन नीर डारति, उसकति छतियाँ करत धर धर॥

चरननि सीस नाइ मनाइ लई, ले ले पट्टे निकुंज
तोरि गढ़ मान गोविंद को प्रभु जाति रति पति रूप[1] सुखद

१०

पहरि केसरी सारी प्रिया प्रिय मुख करखत ।
देखत निज रूप नैननि भरि भरि अंग अंग परसत अरु परखत ॥
बोलत तुतरात लागत सुहावन सींचे व्रजजन अमृत वरषत ।
गोविंद प्रभु गति गयन्द चलत आवत सवनि जिय हँसि हरषत ॥

११

मानि मानि री मोहन द्वार ठाढ़े ।
तेरी तो प्रकृति आने पिय की पीरो न जाने, वातें तो वहुत उफाने,
त्यों त्यों ते हृदय आगार कपाट दिये गाढ़े ॥
वरषें रैन कारी, तो सों वहि लगी भारी ऐसे री,
लालन पर तन मन धन वारि फेरि प्राण दीजे काढ़े ।
सुनत वचन प्यारी कंठ लागी गिरधारी गोविन्द प्रभु को,
हृदय प्रेम जल सों बुझायो आए विरहानल दाढ़े ॥

१२

कछु कही न जाइ तेरी उनकी विकट वात ।
आन आन प्रकृति कैसे वनि आवे
जो तू डार डार तो वे हैं री पात पात ॥

---

१ पा० को ।

अब कहा कहति सोइ जाइ कहौं पीतम सों
छाँडि देहु इत उत की पाँच सात ।
अब एते पर गोविन्द प्रभु सुमुख
मनावत तेरी बातनि बातनि भयो प्रात ॥

१३

विनती करत प्यारी की सखी लालन मुरली नेक बजाइये ।
जानति हौं सकल कला गुननि सिरमौर ढीर्‌यो,
दीजत तातें घोष राज कुँवर हमहु तान द्वै सुनाइये ॥
जैसे खग मृग द्रुम पसु बेलि बेलि सरिता मोही,
तैसे हमारी सखिनि को मन रिझाइये ।
गोविन्द प्रभु सकल कला प्रवीन ताते,
हमारे श्रवणनि सुख उपजाइये ॥

१४

रति रस केलि विलास हास रंग भीने हो ।
कोउ सुन्दरि नारि के लगे गात रंग भीने हो ॥
अरुन नैन अति रसमसे रंग भीने हो ।
मनो भोर भये जलजात लाल रंग भीने हो ॥
बोलत बोल प्रतीत के रंग भीने हो ।
सुन्दर साँवल गात लाल रंग भीने हो ॥

प्रिया अधर रस पान मत्त रंग भीने हो ।
कहत कहूँ बात लाल रंग भीने हो ॥
अति लोहित दृग रँगमगे रंग भीने हो ।
मनो भोर जलजात लाल रंग भीने हो ॥
चाल सिथिल भ्रू भाल सिथिल रंग भीने हो ।
ससि मुख सिथिल जँभात लाल रंग भीने हो ॥
केस सिथिल राकेस सिथिल रंग भीने हो ।
वय क्रम सिथिल सिरात लाल रंग भीने हो ॥
गोविन्द प्रभु नंद सुत किसोर रंग भीने हो ।
बहु नायक विख्यात लाल रंग भीने हो ॥

१५

कहा करें वैकुण्ठहि जाय ।
जहँ नहीं कुंज लता अलि कोकिल मंद सुगंध न वायु बहाय ॥
नहीं वहाँ सुनियत श्रवनन बंसी धुन, कृष्ण न मुरत अधर लगाय ।
सारस हंस मोर नहीं बोलत तहँ को बसिबो कौन सुहाय ॥
नहीं वहाँ बृज बृंदावन बीथन, गोपी नंद जसोदा माय ।
गोविन्द प्रभु गोपी चरनन की बृजरज तजि वहाँ जाय बलाय ॥

१६

छबीले लाल की यह बानक बरणत बरनी न जाय ।
देखत तन मन करी न्योछावर आनंद उर न समाय ॥

कन्द मूल फल आगे धर के रहत सचल सिर नाय।
गोविन्द प्रभु प्रियसों रतिमानी पठई रसिक रिझाय॥

१७

मोहन मुखारविंद पर मनमथ कोटिक वारौं री माई।
जोई जोई अंगन दृष्टि परत हैं तेई तेई रहत लुभाई॥
अलक तिलक कुंडल कपोल छवि एक रसना मो पै बरनी न जाई।
गोविन्द प्रभु की बानिक पर बलि बलि रसिक चूड़ामणि जाई॥

१८

बसे बनमाली आली किस विध पाइए।
ऐसी जिय आवे जैसे जोगी होके जाइए॥
ओढ़े अंग मृगछाला, विरहन भई बाला।
नख शिख अंग अंग भभूत रमाइए॥
गले में डारूँगी सेली होंगी अकेली हेली,
ढूँढत निकुंज कुंज काहू न बताइए।
ऐसी कौन, वेग मिलावे नी गोविन्द प्रभु सों,
भेट भुज भर भर अंक सों मिलाइये॥

१९

कुटिल कुन्तल कुंडल काछिनि, कान्ति कुवलय माप रे।
किंवा कुंचिताधर, [illegible] रे

काहा कालिंदी कूल कानने कुंजे कुंजेर राज रे।
किंवा कामिनी कुच कुंकुमांकित काम कोटि विराज रे॥
कनक किंकनी कंगनाद कुंडलाजित अंश रे।
केलि कोकिल कंठ कुंठक काकली कृत वंश रे॥
केसरि कटि कंबु कन्दर कुंज केशर दाम रे।
कलि काल कालीय कवल कंपित दास गोविन्द नाम रे॥

खंडिता

१

घूमत रतनारे नैन सकल निसा जागे।
लटपटी सुदेस पाग अलकन की झलक बीच,
पीक छाप जुग कपोल अधरनि मसि लागे।
बिन गुन उर माल बनी बीच नखनि रेख ठनी,
पलटि परे बसन पीत कंकन सों दागे।
चारु बन्यो चंदन बनमाल लग्यो चंदन सों,
डगमगात चरन धरत प्रिया प्रेम पागे॥
बचन रचन कियो साँझ बेगि आए भोर माँझ,
बलि बलि या बदन कमल सोभित अनुरागे।
जाय बसो वही धाम बिलसे जहाँ सकल जाम,
गोविन्द प्रभु बलिहारी कर जोर माँगे॥

२

आवत ललन प्रिया रंग भीने ।
सिथिल अंग डगमगात चरन गति मोतिन हार उर चीने ॥
परिजात मंदार माल लटपटात मधुप मधु पीने ।
गोविंद प्रभु पिय तहाँ जाहु जहाँ अधर दसन क्षत कीने ।

३

आजु लाल अति राजे बैठे वानिक सौं छाजै,
सुधि न कछु री गात प्यारी प्रेम मगना ।
लटपटी पाग अरु सिथिल चिकुर चारु,
उपटत उरहार प्यारी कंठ लगना ॥
आलस अरुन रस भरे री निलोचन,
भरि भरि आवत प्रिय सौं अनुरगना ।

५

निसा के उनींदे अति छबि लागत भरे प्यारी रंग ।
आलस बलित ललित लोचन जुग,
भरि भरि आवत, कुंज केलि सुधि के प्रेम उमंग ॥
सुभग उरसि पर बिन गुन मोती माल,
कुंकुम रचित[1] उपटे हैं कुच उतंग ।
गोविन्द प्रभु कत करहु दुराव,
ए सब कहत तुम्हारे अंग अंग ॥

६

आइये जु आइये जिनि दिखाइये मो मन रिस ।
सिथिल अंग पग धरत डगमगे झूठे ही करत माते को मिस ॥
अब जु आए हो मेरो जो समोध करत तरसाय प्रान सगरी निस ।
गोविन्द प्रभु पिय जाय सिरोमनि ओसन कैसे जाय तिस ॥

७

आजु की बानिक पर हो लाल हों बलि बलि गई ।
बिगलित कच सुमन पाग, ढरकि रही बाम भाग अंग अंग अरसई ॥
अरुन नैन झपकि जात अरु जँभात बार बार कपोलनि छबि छई ।
धन सुहाग भाग ताको गोविन्द प्रभु संग सब निसि बितई ॥

---

१. पा० द्रुपित

२

आवत ललन प्रिया रंग भीने ।
सिथिल अंग डगमगात चरन गति मोतिन हार उर चीने ॥
परिजात मंदार माल लटपटात मधुप मधु पीने ।
गोविंद प्रभु पिय तहाँ जाहु जहाँ अधर दसन क्षत कीने ।

३

आजु लाल अति राजे बैठे बानिक सी[1] छाजै,
सुधि न कछु री गात प्यारी प्रेम मगना ।
लटपटी पाग अरु सिथिल चिकुर चारु,
उपटत उरहार प्यारी कंठ लगना ॥
आलस अरुन रस भरे री बिलोचन,
भरि भरि आवत प्रिय सी अनुरगना ।
गोविन्द प्रभु प्रिय जान सिरोमणि,
सुरति रंग रस बिभव निसा जगना ॥

४

रसमसे नंद लला रे आऐ हो उठि भोरे ।
अरुन नैन बैन भूषन अटपटे, देखियत अधरन रंग भोरे ॥
कैतवबरद कत करत गोसाईं, तहाँ जाहु जाके हो अति प्रानप्यारे ।
गोविन्द प्रभु भले जु भले, जानि पाए जैसे तन स्याम तैसेई मन कारे॥

---

१. पा० 'बनी कसी.

५

निसा के उनींदे अति छवि लागत भरे प्यारी रंग ।
आलस वलित ललित लोचन जुग,
भरि भरि आवत, कुंज केलि सुधि के प्रेम उमंग
सुभग उरसि पर विन गुन मोती माल,
कुंकुम रचित उपटे हैं कुच उतंग ।
गोविन्द प्रभु कत करहु दुराव,
ए सब कहत तुम्हारे अंग अंग ॥

६

आइये जु आइये जिनि दिखाइये मो मन रिस ।
सिथिल अंग पग धरत डगमगे झूठे हो करत माते को मिस ॥
अब जु आए हो मेरे जो समोध करत तरसाय प्रान सगरी निस ।
गोविन्द प्रभु पिय जाय सिरोमनि ओसन कैसे जाय तिस ॥

७

आजु की चानिक पर हो लाल हों बलि बलि गई ।
विगलित कच सुमन पाग, ढरकि रही वाम भाग अंग अंग अरसई ॥
अरुन नैन झपकि जात अरु जँभात वार वार कपोलनि छवि छई ।
धन सुहाग भाग ताको गोविन्द प्रभु संग सब निसि बितई ॥

८

आए हो मन आवन कहाँ ते भोरहि नंद दुलारे ।
तुम कियो रति सुख, हमें दियो,
अति दुख, साँचे हो बोल तिहारे ॥
तुम कियो मधुपान, हमको,
तिहारो ध्यान, ऐसे कैसे बने प्रान प्यारे ।
अब तो सिधारो तहाँ, रैन बसें,
हो जहाँ, गोविन्द प्रभु पिय हमारे ।

९

लालन तहाँई जाहु जाके रस लंपट अति ।
आलस नैन देखियत रस भरे प्रकट करत प्यारी रति ॥
अधर दसन छत वसन पीक सह, कपोल श्रम-बिंदु देखियति ।
नख लेखनि तन लिखी स्यामपट जय-पताक रन जीत्यो रति पति ॥
कैतववाद तजो पिय हम सों जैसे तन स्याम तैसेई मन हो अति ।
गोविन्द प्रभु पिय पाग सँवारहु गिरत कुसुम सिरमालति ॥

१०

आजु खरेई सिथिल देखियत हो बहुरस भरे लाल ।
सब निसि जागे अति सिथिल अरुन दोऊ अंबुज बिसाल ॥
सिथिल भूपन कटि वसन सिथिल अति सिथिल मरगजी माल ।
[illegible] पाग सिथिल अलकावलि, बिगलित कुसुम गुलाल ।

सिथिल शिखण्ड सीस लटकि रहे आए भोर डगमगत चाल ।
सिथिल बेनु कछु कहत आन की आन गोविन्द प्रभु पिय हो बेहाल ।।

११

जानि पाए हो ललना वलि वलि ब्रज नृपति कुँवर ।
जाके सब निसि जागि आये तहाँई अनुसर ।।
अपनी प्यारी के रति के चिन्ह हमहि,
दिखावत आए देत लोन दाढ़े पर ।
गोविन्द प्रभु साँवल तन तैसेई हो,
मन जनमत ही तवहूँ जुवति प्रानहर ।।

१२

वलि वलि पाउ धारिये आजु कछु मेरो लह्नो,
ब्रज नृप सुत भोर आए हो रसभरे ।
भई बड़ी बार पाउ धारिये हमनि बाजी वारयो,
अगर जावा से बीरा ले आगे धरे ।।
कहि न सकति एक बात लालन जाके,
निसि बसे ताके बसन पलटि परे ।
गोविन्द प्रभु पिय जान सिरोमनि,
केवल दोऊ के हरे ।।

फुटकर

१

हौं बलि बलि जाऊँ कलेऊ कीजे ।
खीर खाँड घृत अति मीठो है अबकि कौर बछ[1] लीजे ॥
बेणी बढ़े सुनो मनमोहन मेरो कह्यो पतीजे ।
औट्यो दूध सद्य धौरी को सात घूँट जो पीजे ॥
हौं वारी या बदन कमल पर अंचल प्रेम जल भीजे ।
बहुरि जाय खेलो जमुना तट गोविंद संग करि लीजे ॥

२

अहो दधि मथति घोप की रानी ।
दिव्य चीर पहरे दक्षिण[2] को कटि किंकनि रुनझुन बानी ॥
सुत के करम गावति आनंद भरि बाल चरित जानि जानी ।
श्रम जल राजे बदन कमल पर मनहुँ सरद बरपानी ॥

---

१. बच्चों की बोली में उन्हीं का अनुसरण करना कितना प्रिय लगता है।

२. दक्षिण का चीर प्रसिद्ध है। वल्लभाचार्य भी दक्षिण ही के रहने वाले थे। उनके देश का आदर भी अनिवार्य था।

पुत्र सनेह चुचात पयोधर प्रमुदित अति हरसानी।
गोविंद प्रभु घुटुरुनि चलि आए पकरी रई मथानी ॥

३

मोहन देओ वसन हमारे।
कहेंगी जाय व्रजपति जु के आगे करत अनीत लला रे ॥
तुम व्रजराज किसोर नंदसुत सबहिन के प्रान प्यारे।
गोविंद प्रभु पिय दासी तिहारी सुन्दर वर सुकुमारे ॥

४

नृतत मोहन रसिक सखन सहित ग्रग्र ता तत्थै तत थै तत्ता।
मृदंग धपु धमु धमु ताल
उमंग मिलि श्रुति देत मधुप मधुमत्ता ॥
टिपारो सिर पीत अति लाल काछिनी बनी,
किंकनि झिनिझिनि गति लेत, गावत सुर सत्ता।
गोविंद प्रभु गोप बालक
जय जय करत प्रेम अनुरक्ता ॥

५

जागो कृष्ण जसोदा बोले इह अवसर कोउ सोवे हो।
गावत गुन गोपाल ग्वालिनी हरषित दही बिलोवे हो ॥
गो दोहन ध्वनि पूरि रही व्रज गोपी दीप संजोवे हो।
सुरभी हूँक, बछरुआ जागे, अनिमिष मारग जोवे हो ॥

वेनु मधुर धुनि महुवर बाजत बेंत गहे कर सेली हो।
अपनी गाय सब ग्वाल दुहत हैं तुम्हरी गाय अकेली हो॥
जागे कृष्ण जगत के जीवन अरुन नैन सुख सोहे हो।
गोविंद प्रभु जो दुहत हैं धौरी ब्रज गोप वधु मन मोहे हो॥

६

"पक्र खजूर जम्बु बदरी फल लेहो" काछिनि टेरो द्वार।
बालक जूथ संग बल मोहन चौके करत विहार॥
सुन्दर कर जननी केना दियो धाये तबहीं नंद कुमार।
हीरा रतन सों पूरित भाजन ऐसे परम उदार॥
उदर अंजुलि[1] लगाय खात, खात चले मीठे परम रसाल।
जूठी गुठली मारत गोविन्द हँसत हँसावत ग्वाल॥

७

प्रात समय उठि जसोमति जननी गिरिधर सुत को उबटि न्हवावति।
करि सिंगार बसन भूषन सजि फूलन रचि रचि पाग बनावति॥
छूटे चन्द वागे अति सोभित बिच बिच चोव अरगजा लावति।
सुथन लाल फुन्दना सोभित आजु की छवि कछु कहत न आवति॥
विविध कुसुम की माला उर धरि श्री कर मुरली बेंत गहावति।
ले दर्पण देखे श्री मुख को गोविन्द प्रभु चरनन सिर नावति॥

---

१. पा० सो लियो।

८

प्रात समय उठि जसोमति दधि मंथन कीन्हों ।
प्रेम सहित नवनीत ले सुत के मुख दीन्हों ।।
औटि दूध धैया कियो हरि रुचि सों लीन्हों ।
मधु मेवा पकवान ले हरि आगे कीन्हों ।।
इहि विधि नित क्रीड़ा करें जननी सुख पावें ।
गोविन्द प्रभु आनन्द में आंगन में धावें ।।

जमुना पद

१

जमुना सौं नाहिं कोउ और दाता ।
जे इनकी सरन जात हैं दौरि कै, ताहि को नेहि जिन करि सनाथा[1] ॥
एहि गुन गान भगवान रसना एक, सहस रसना क्यों न दई विधाता ।
गोविन्द प्रभु तन मन धन वारने सकल को औगुन इनही के हाथा ॥

२

स्याम संग स्याम ह्वै रही श्री जमुने ।
सुरति श्रम बिंदु तें सिंधु सी बहि चली,
मानो आतुर अली रही न भवने ॥
कोटि कामहि वारौं, रूप नैन निहारौं,
लाल गिरिधरन संग करत रमने ।
हरषि गोविन्द प्रभु देखि इनकी ओर,
मानो नव दुलहिनी आई गमने ॥

---

१. पाठ, जिन्हें तिन करें सनाथा।

३

जमुन जस जगत में जोई गायो।
ताके आसक्त ह्वै रहत प्रानपति नैन में चैन में रस जो छायो ॥
वेद पुरान की बात यह अगम है, प्रेम को भेद कोऊ न पायो।
कहे गोविन्द जमुना की जा पर कृपा सोई वल्लभ कुल सरन आयो॥

४

चरन पंकज रेनु जमुना देनी।
कलजुग जीव उधारन कारन, काटत पाप अवधार पेनी॥
प्रानपति प्रान यह आय भक्तन नेह सकल यह सुख की होजु सेनी[१]।
गोविन्द प्रभु बिना रहत नहिं एक छन अतिहि आतुर चंचल जो नैनी॥

५

जमुना जी यह विनती चित धरिये।
गिरिधर लाल मुखारविंद रति जन्म जन्म मोहि करिये॥
विष सागर संसार विषम अति विमुख संग ते डरिये।
काम क्रोध अज्ञान तिमिर अति उर अन्तर ते हरिये॥
तुम्हरे निकट बसों निज जन संग रूप देखि मन ठरिये।
गाऊँ गुन गोपाल लाल के दुष्ट वाद ते डरिये॥
त्रिविधि दोस हरि हो कालिन्दी नेक कृपा करि ठरिये।
गोविन्द सदा इहे वर माँगूँ तुम्हरे चरन अनुसरिये॥

६

जमुना जी अधम उधारन मैं जानी ।
गोधन संग स्याम घन सुन्दर तीर त्रिभंगी दानी ॥
गंगा चरन परस तें पावन हर सिर चिकुर समानी ।
सात समुद्र भेदि जम-भगनी हरि नख सिख लपटानी ॥
आलिंगन चुम्बन रस विलसित प्रेम पुंज ठकुरानी ।
गोविन्द प्रभु रवि-तनया प्यारी भक्ति मुक्ति की खानी ॥

---

१. पा० सेनी ।